

प्रथम अंक

जुलाई-दिसम्बर, 2026



शब्दायन

चेतना और संस्कृति का संवाहक

संपादक

डॉ. मनोज कुमार स्वामी

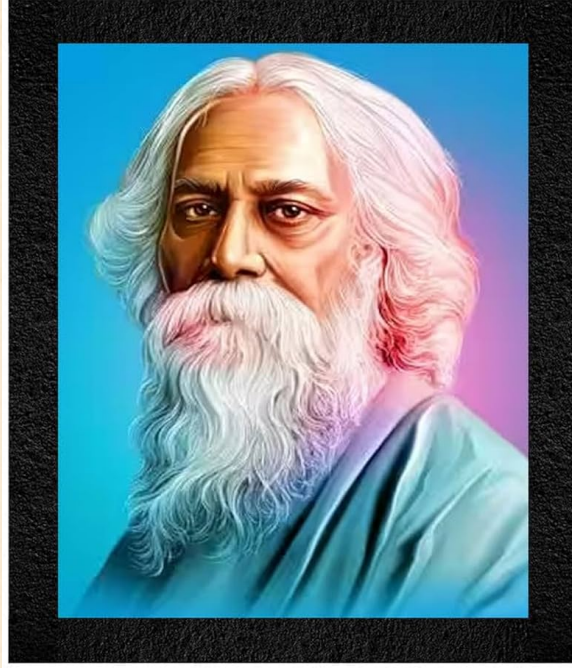
सह-संपादक

करण दास

हिन्दी विभाग

रवीन्द्रनाथ ठाकुर विश्वविद्यालय

होजाई, 782436 (असम)



(7 मई, 1861 – 7 अगस्त, 1941)

चित्त जहाँ भय शून्य, उच्च जहाँ सिर
ज्ञान जहाँ मुक्त, जहाँ गृह प्राचीर
अपने प्रांगण तल में दिवस शर्बरी
वसुधा को रखे नहीं खंड क्षुद्र करो
जहाँ वाक्य हृदय उत्स मुख से
प्रफुल्लित होकर उपजे, जहाँ निर्वरित स्रोत में
देश देश में दिशा दिशा में कर्मधारा बहे
अनगिनत सहस्र विध चरितार्थ करो

- रवीन्द्रनाथ टैगोर



‘शब्दायन’ रवीन्द्रनाथ ठाकुर विश्वविद्यालय, होजाई (असम) के हिन्दी विभाग के विद्यार्थियों द्वारा संचालित ‘शब्द-संवाद’ द्वारा प्रकाशित छमाही ई-पत्रिका है।

संरक्षक

प्रो. मानवेन्द्र दत्ता चौधरी

सलाहकार

डॉ. नानेश्वर यादव

संपादक

डॉ. मनोज कुमार स्वामी

सह-संपादक

करण दास

सदस्य

डॉ. प्रांजल कुमार नाथ

डॉ. संतोष कुमार गुप्ता

पूजा कुमारी सरोज

सुब्रत विश्वास

साज- सज्जा

कमलेश शर्मा

‘शब्दायन’ में प्रकाशित रचनाओं में विचार लेखकों के अपने हैं। उनसे शब्दायन की सहमति अनिवार्य नहीं है साथ ही उनके मौलिक या अप्रकाशित होने का उत्तरदायित्व संपादक और प्रकाशक का नहीं है बल्कि यह दायित्व रचनकार का है।

RABINDRANATH THAKUR VISHWAVIDYALA

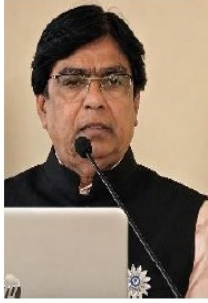
From:

Prof. Manabendra Dutta Choudhury
Vice-Chancellor



Hojai-782436, Assam, India
Phone-(M) 94351 73637
Website – www.rtuassam.ac.in
e-mail: drmdc@bioinfoaus.ac.in

दिनांक: १२ सितम्बर, २०२६

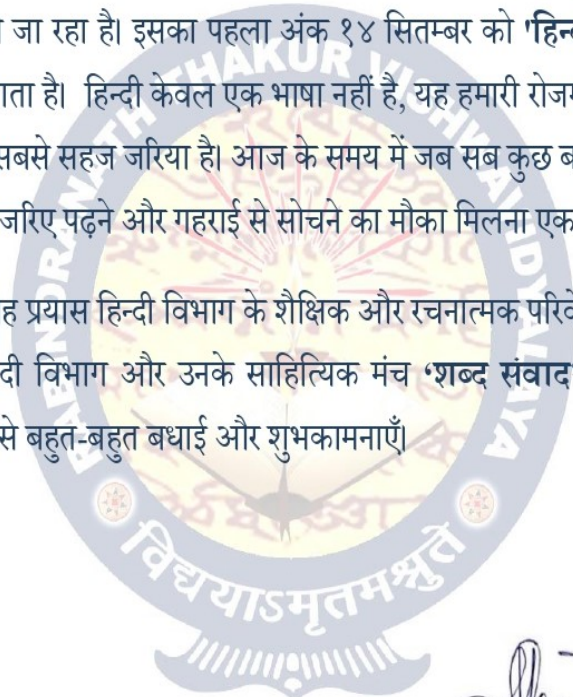


संदेश



मुझे यह जानकर अत्यंत प्रसन्नता हुई कि हमारे विश्वविद्यालय का हिन्दी विभाग अपनी पहली ई-पत्रिका 'शब्दायन' प्रकाशित करने जा रहा है। इसका पहला अंक १४ सितम्बर को 'हिन्दी दिवस' के दिन प्रकाशित होना इसे और भी खास बनाता है। हिन्दी केवल एक भाषा नहीं है, यह हमारी रोजमर्रा की सोच, हमारी संस्कृति और हमारी बात कहने का सबसे सहज जरिया है। आज के समय में जब सब कुछ बहुत तेजी से डिजिटल हो रहा है, ऐसे में एक ई-पत्रिका के जरिए पढ़ने और गहराई से सोचने का मौका मिलना एक अच्छी शुरुआत है।

ई-पत्रिका के प्रकाशन का यह प्रयास हिन्दी विभाग के शैक्षिक और रचनात्मक परिवेश को नई गति प्रदान करेगा। इस पहल के लिए पूरे हिन्दी विभाग और उनके साहित्यिक मंच 'शब्द संवाद' को 'शब्दायन' की निरंतर सफलता के लिए मेरी ओर से बहुत-बहुत बधाई और शुभकामनाएँ।



(प्रो. मानवेन्द्र दत्ता चौधरी)

कुलपति

रवीन्द्रनाथ ठाकुर विश्वविद्यालय,
होजाई, असम

Vice Chancellor
Rabindranath Thakur Vishwavidyalaya
Hojai (Assam)

इस अंक की विषय सूची

1. संपादकीय....

गौरव स्तम्भ

2. हिंदी विभाग की विकास यात्रा

डॉ. मनोज कुमार स्वामी

शोध विमर्श

5. मुंशी प्रेमचंद की कहानियों की प्रासंगिकता

अनूप प्रसाद

10. रवींद्रनाथ टैगोर के नाटकों में लोक संगीत

करण दास

वक्तृता

15. अक्षर से अवसर: हिन्दी शिक्षण और रोजगार की दिशाएँ

डॉ. नागेश्वर यादव

सेतु संवाद

18. सुरों के महानायक: ज़ूबीन गर्ग

पूजा कुमारी सरोज

22. असमिया लोक समाज में प्रचलित 'तुलनी विवाह'

स्नेहा ज्योति दास

25. लाई हरिओबा : मैतेई समुदाय का पारंपरिक लोकपर्व

पूजा देवी

28. बांग्ला लोककथा

जमुना दास

अनुवाद

31. शुभ दिन

डॉ. प्रांजल कुमार नाथ

42. अंतहीन धारा में तुम मनुष्य बनकर रहोगे

टिनामोनी सालोई

सृजनात्मक स्पंदन

कविता:

43. मैं हूँ अपनी पहचान

दीपांदिता तालुकदार

45. मैं भारत का संविधान हूँ

खुशबू कुमारी चौहान

कहानी:

47. छोटा दीपक

अलीफा बेगम

49. माँ की आखिरी चिट्ठी

पूजा शर्मा

लघु नाट्य:

55. त्याग

कमलेश शर्मा

पर्यटन:

63. जुगीजान के प्रमुख ऐतिहासिक एवं धार्मिक स्थल

सुब्रत विश्वास

68. विभागीय दर्पण

संपादकीय...

हिन्दी केवल एक भाषा नहीं, वह हमारी सांस्कृतिक चेतना, सामाजिक स्मृति और आत्मिक अभिव्यक्ति की जीवंत धारा है। रवीन्द्रनाथ ठाकुर विश्वविद्यालय के हिन्दी विभाग द्वारा प्रस्तुत 'शब्दायन' ई-पत्रिका उसी धारा में एक विनम्र, किंतु सशक्त हस्तक्षेप है। एक ऐसा मंच है जहाँ विचार, संवेदना और सृजनशीलता एक साथ संवाद करती हैं।

इस पत्रिका का प्रकाशन विभाग की नवगठित साहित्यिक संस्था 'शब्द संवाद' की देख-रेख में किया जा रहा है। यह संस्था हिन्दी भाषा, साहित्य और संस्कृति के संवर्धन हेतु प्रतिबद्ध है, और यह पत्रिका उसका प्रथम पदक्षेप है। इस प्रवेशांक के माध्यम से 'शब्द संवाद' न केवल अपनी रचनात्मक यात्रा का आरंभ कर रहा है, बल्कि उस साहित्यिक उत्तरदायित्व को भी निभा रहा है जो विश्वविद्यालयों के हिन्दी विभागों से अपेक्षित होता है।

हमारा प्रयास रहा है कि यह पत्रिका केवल रचनाओं का संकलन न होकर एक वैचारिक यात्रा बने, जहाँ कविता की कोमलता, गद्य की गंभीरता, आलोचना की प्रखरता और अनुवाद की सेतु-भूमिका एक साथ उपस्थित हों। इसमें समकालीन साहित्यिक प्रवृत्तियों के साथ-साथ परंपरा की गूंज भी सुनाई देगी; स्थानीयता की मिट्टी की गंध के साथ वैश्विक दृष्टि की खुली खिड़कियाँ भी होंगी।

डिजिटल युग में जब शब्दों की गति तीव्र है, तब यह पत्रिका ठहरकर सोचने, पढ़ने और आत्मसात करने का एक अवसर प्रदान करती है। यह केवल एक प्रकाशन नहीं, बल्कि एक संवाद है - भविष्य की ओर बढ़ते हिन्दी साहित्य का, और उन स्वरों का जो अब तक अनसुने थे।

हम उन सभी रचनाकारों, सहयोगियों, शोधार्थियों और विद्यार्थियों के प्रति आभार व्यक्त करते हैं जिन्होंने इस प्रवेशांक को आकार देने में अपना योगदान दिया। विशेष रूप से 'शब्द संवाद' की समर्पित टीम को साधुवाद, जिनके श्रम, कल्पना और साहित्यिक दृष्टि ने इस प्रयास को संभव बनाया।

आशा है कि यह पत्रिका पाठकों के मन में साहित्य के प्रति एक नई जिज्ञासा, एक नई संवेदना और एक नई दृष्टि का संचार करेगी।

डॉ. मनोज कुमार स्वामी
हिन्दी विभाग
रवीन्द्रनाथ ठाकुर विश्वविद्यालय

हिंदी विभाग की विकास यात्रा

डॉ. मनोज कुमार स्वामी

सह-अध्यापक एवं अध्यक्ष, हिंदी विभाग

असम के मध्य अंचल होजाई में स्थित रवींद्रनाथ ठाकुर विश्वविद्यालय (पूर्ववर्ती होजाई कॉलेज) का हिंदी विभाग केवल एक अध्ययन केंद्र नहीं रहा है। यह पिछले छह दशकों से विभिन्न भाषाओं, संस्कृतियों और गुरु-शिष्य परंपरा का एक जीवंत माध्यम बना हुआ है। 1964 की सांध्यकालीन कक्षाओं से शुरू होकर 2026 में विश्वविद्यालय स्तर तक पहुँची यह यात्रा कई शिक्षकों और विद्यार्थियों के त्याग, निष्ठा और निरंतर प्रयासों की कहानी है।

शुरुआती दौर और स्थापना का संघर्ष

आज जिसे हम रवींद्रनाथ ठाकुर विश्वविद्यालय के रूप में देखते हैं, उसकी शुरुआत 1964 में होजाई के स्थानीय नागरिकों और युवाओं के सहयोग से हुई थी। उस समय कॉलेज का अपना भवन नहीं था। दिन में 'गांधी विद्यापीठ हाई स्कूल' चलता था और शाम के समय कॉलेज की कक्षाएँ लगती थी।

कॉलेज की स्थापना के साथ ही 1964 में हिंदी विभाग की नींव पड़ी। विभाग की शुरुआत बांग्ला विभाग के शिक्षक श्री व्योमकेश मजूमदार जी के प्रयासों से हुई, जो बांग्ला के साथ-साथ अंग्रेजी भी पढ़ाते थे। बहुभाषी अध्ययन का यह सिलसिला विभाग के शुरुआती दिनों से ही जुड़ गया। इस बात का उल्लेख होजाई कॉलेज के प्रथम बैच के छात्र श्री विजय कयाल जी ने किया है, जो स्वयं हिंदी के विद्यार्थी रहे हैं। मजूमदार जी के बाद हिंदी साहित्य के विद्वान श्री नंदकिशोर सिंह जी विभाग में आए। उस समय कॉलेज का प्रांतीयकरण (सरकारीकरण) नहीं हुआ था और शिक्षकों का वेतन स्थानीय स्तर पर सहयोग राशि जुटाकर दिया जाता था। इस वजह से अक्सर वेतन समय पर नहीं मिल पाता था। बाद में स्थायी नियुक्ति मिलने पर वे गुवाहाटी के प्रगज्योतिष कॉलेज चले गए। उनके बाद डॉ. धर्मदेव तिवारी जी ने विभाग में अध्यापन किया, जो आगे चलकर कॉटन कॉलेज और फिर गौहाटी विश्वविद्यालय के हिंदी विभाग से सेवानिवृत्त हुए।

स्थायित्व और पाठ्यक्रमों का विस्तार

विभाग को असली प्रशासनिक और शैक्षणिक स्थायित्व तब मिला, जब 1968 में डॉ. नरेंद्र नाथ गुप्त जी की पहली स्थायी शिक्षक और विभागाध्यक्ष के रूप में नियुक्ति हुई। इसके बाद 1971 में श्री चंद्रदेव ठाकुर जी दूसरे स्थायी शिक्षक बनकर विभाग से जुड़े। इन दोनों अध्यापकों ने एक लंबे अरसे तक विभाग की कमान संभाली और यहाँ की अध्यापन गतिविधियों को व्यवस्थित रूप दिया। शुरुआती दिनों में यहाँ केवल 11वीं-12वीं में 'हिंदी (MIL)' व 'एडवांस हिंदी' और स्नातक स्तर पर 'हिंदी (MIL)' ही पढ़ाया जाता था।

समय के साथ विद्यार्थियों की बढ़ती रुचि को देखते हुए पाठ्यक्रमों का दायरा बढ़ाया गया, जिसके तहत 1993 में स्नातक स्तर पर 'ऐच्छिक हिंदी' (Elective) और फिर 1996 में 'हिंदी मेजर' की पढ़ाई शुरू हुई। मेजर पाठ्यक्रम

चालू होने से कक्षाओं और अध्यापन का बोझ काफी बढ़ गया, जबकि स्वीकृत पद केवल दो ही थे। इस स्थिति से निपटने के लिए गैर-स्वीकृत (नॉन-सैक्शन) पद पर पहली नियुक्ति सुश्री जोनली दास की हुई, जिन्होंने लगभग एक वर्ष सेवा देने के बाद धेमाजी के मोरिधल कॉलेज का रुख किया। इसके बाद 1999 में मनोज कुमार स्वामी और नागेश्वर यादव की नियुक्तियां हुईं, जो आगे चलकर वरिष्ठ शिक्षकों के सेवानिवृत्त होने पर उन्हीं रिक्त पदों पर स्थायी हो गईं।

विद्यार्थी से सहकर्मि तक का अनुभव

इस पूरी यात्रा का एक व्यक्तिगत और भावुक पहलू यह भी है कि मैंने स्वयं इसी विभाग में एक विद्यार्थी के रूप में प्रवेश लिया था। डॉ. नरेंद्र नाथ गुप्त जी और श्री चंद्रदेव ठाकुर जी जैसे गुरुजनों से पढ़ने का अवसर मिला और बाद में उन्हीं के साथ एक सहकर्मि के रूप में कार्य करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। यह अनुभव मेरे लिए अत्यंत गौरवपूर्ण रहा है।

कार्यभार अधिक होने के कारण समय-समय पर नॉन-सैक्शन पदों पर कई अन्य शिक्षकों ने भी योगदान दिया, जिनमें श्री संतोष कुमार गुप्त, श्री बिंदु कुमार चौहान, श्री शिवजी चौहान, सुश्री अर्चना शर्मा, श्रीमती लक्ष्मी पांडेय और सुश्री अंजू कुमारी गुप्ता प्रमुख हैं। इनमें से डॉ. संतोष गुप्त जी आज भी विभाग में अपनी सेवाएं दे रहे हैं।

क्षेत्रीय विविधता और भाषाई तालमेल

हमारे विभाग की एक सबसे बड़ी विशेषता यहाँ के विद्यार्थियों की सामाजिक, सांस्कृतिक और धार्मिक विविधता रही है। होजाई के स्थानीय छात्रों के अलावा असम के पहाड़ी इलाकों- कार्वी आंगलोंग और दिमा हसाओ (उत्तर कछार हिल्स) से बड़ी संख्या में जनजातीय विद्यार्थी यहाँ हिंदी पढ़ने आते रहे हैं। विभाग में मणिपुरी, मारवाड़ी, असमिया, बंगाली और बिलासपुरी समुदायों के साथ-साथ हिंदू, मुस्लिम और ईसाई धर्म के विद्यार्थी एक साथ मिल-जुलकर शिक्षा ग्रहण करते हैं। इस प्रकार, विभाग ने विभिन्न क्षेत्रों, भाषाओं और समुदायों के युवाओं को आपस में जोड़ने तथा उनके बीच मजबूत भाषाई और सांस्कृतिक तालमेल बनाने में एक पुल का काम किया है।

विश्वविद्यालय का स्वरूप और वर्तमान गतिविधियाँ

वर्ष 2019 में जब होजाई कॉलेज को 'रवींद्रनाथ ठाकुर विश्वविद्यालय' का दर्जा मिला, तो इसके साथ ही हिंदी विभाग का दायरा और ज़िम्मेदारियाँ भी काफी बढ़ गईं। इसके बाद शैक्षणिक गतिविधियों का विस्तार करते हुए 2023 में एम.ए. की पढ़ाई शुरू की गई, जिसके दो बैच अब तक सफलतापूर्वक उत्तीर्ण हो चुके हैं। इसी वर्ष पी-एच.डी. पाठ्यक्रम का भी प्रारंभ हुआ। आगे चलकर 2025 में रोजगारपरक शिक्षा को ध्यान में रखते हुए 'पोस्ट ग्रेजुएट डिप्लोमा इन ट्रांसलेशन' की शुरुआत की गई। सन् 2025 में कुछ प्रशासनिक कारणों से असम सरकार द्वारा विश्वविद्यालय का नाम 'रवींद्रनाथ टैगोर विश्वविद्यालय' से 'रवींद्रनाथ ठाकुर विश्वविद्यालय' कर दिया गया। वर्तमान में विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. मानबेंद्र दत्ता चौधरी जी के मार्गदर्शन और प्रोत्साहन से विभाग अपनी शैक्षणिक और अनुसंधान गतिविधियों को निरंतर आगे बढ़ा रहा है।

शोध, संगोष्ठियाँ और अकादमिक गतिविधियाँ

विभाग में अनुसंधान का कार्य केवल पारंपरिक अध्ययन तक सीमित न रहकर समकालीन सामाजिक सरोकारों, विमर्शों और तुलनात्मक अध्ययन पर केंद्रित है। इस दिशा में कार्य करने का मुख्य उद्देश्य असमिया और हिंदी साहित्य के वैचारिक अंतःसंबंधों को मजबूत करना तथा शोधार्थियों में आलोचनात्मक और व्यावहारिक दृष्टि विकसित करना है। इससे विद्यार्थियों को समाज के विविध पक्षों-जैसे नारी चेतना, दलित विमर्श, वृद्ध विमर्श और आम जनमानस की चुनौतियों को साहित्य के माध्यम से समझने में मदद मिलती है।

अकादमिक सक्रियता को बनाए रखने के लिए विभाग समय-समय पर संगोष्ठियों का आयोजन करता रहा है, जिसके तहत 2017 में UGC द्वारा प्रायोजित राष्ट्रीय सेमिनार और सितंबर, 2025 में केन्द्रीय हिंदी संस्थान, आगरा के सहयोग से राष्ट्रीय संगोष्ठी का सफल आयोजन हुआ। इसके अलावा, भाषा के प्रति अभिरुचि जगाने और विद्यार्थियों की प्रतिभा को मंच देने के लिए प्रतिवर्ष 14 सितंबर को 'हिंदी सप्ताह' आयोजित किया जाता है, जिसमें विभिन्न प्रतियोगिताएं होती हैं। इसी कड़ी में, विद्यार्थियों और शोधार्थियों के बीच नियमित साहित्यिक परिचर्चा और वैचारिक आदान-प्रदान को बढ़ावा देने के उद्देश्य से इस वर्ष 'शब्द संवाद' की स्थापना की गई है, जो विभाग के बौद्धिक माहौल को और अधिक समृद्ध बना रहा है।

सफलता के शिखर पर हमारे पूर्व विद्यार्थी

किसी भी शिक्षण संस्थान की वास्तविक पहचान और उसकी सफलता का मूल्यांकन उसके विद्यार्थियों की उपलब्धियों से होता है। इस कसौटी पर हिंदी विभाग का योगदान अत्यंत गौरवशाली रहा है। यहाँ से निकले पूर्व विद्यार्थी आज शिक्षा, प्रशासन और सुरक्षा जैसे विविध क्षेत्रों में अपनी सेवाएँ दे रहे हैं।

उच्च शिक्षा के क्षेत्र में विभाग के अनेक छात्र विभिन्न महाविद्यालयों और विश्वविद्यालयों में अध्यापन कार्य से जुड़े हैं; जिनमें डॉ. बिंद कुमार चौहान (बोंगाईगाँव विश्वविद्यालय), डॉ. शंकर शर्मा (काछार कॉलेज, सिलचर), डॉ. शिवजी चौहान व धनपाल चौहान (उदाली कॉलेज), छोटेलाल चौहान (कपिली कॉलेज) और डॉ. अखिल चंद्र कलिता (लामडिंग कॉलेज) प्रमुख हैं। इसके अतिरिक्त, बड़ी संख्या में पूर्व छात्र राज्य के विभिन्न विद्यालयों में भावी पीढ़ी का मार्गदर्शन कर रहे हैं।

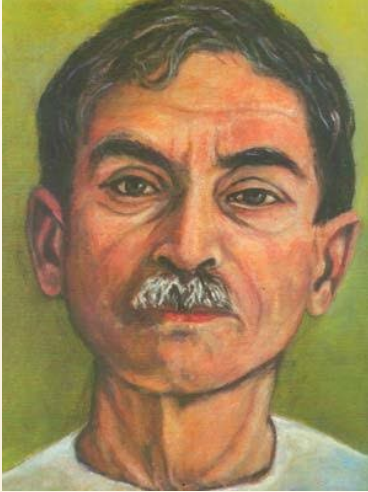
प्रशासनिक और वित्तीय क्षेत्र में भी विभाग के छात्रों ने अपनी पहचान बनाई है-जैसे डॉ. अनिल भगत पंजाब नेशनल बैंक में वरिष्ठ प्रबंधक (राजभाषा) के पद पर कार्यरत हैं। वहीं दूसरी ओर, असम पुलिस, CRPF, BSF और असम राइफल्स जैसे रक्षा एवं सुरक्षा बलों में भी यहाँ के कई पूर्व छात्र निष्ठापूर्वक देश सेवा में तैनात हैं। इसके अलावा, अनेक विद्यार्थी सफल उद्यमी के रूप में व्यवसाय का कुशल संचालन कर रहे हैं। अपने पूर्व विद्यार्थियों की इन विविध और बहुआयामी सफलताओं पर विभाग को अत्यंत गर्व है।

62 वर्षों के इस लंबे सफर में हिंदी विभाग ने शैक्षणिक और व्यावहारिक दोनों स्तरों पर अपनी पहचान बनाई है। "शब्दायन" ई-पत्रिका के इस पहले अंक के माध्यम से हम अपने पूर्व आचार्यों, सहयोगियों और विद्यार्थियों के योगदान को याद करते हैं और उम्मीद करते हैं कि यह विभाग आगे भी इसी निष्ठा से कार्य करता रहेगा।

मुंशी प्रेमचंद की कहानियों की प्रासंगिकता

अनूप प्रसाद
शोधार्थी, हिन्दी विभाग

शोध सारांश : जिज्ञासा ही अनुसंधान का बीज शब्द है। शोध केवल नवीन तथ्यों की खोज तक सीमित नहीं रहता अपितु प्राप्त तथ्यों की युगानुरूप भी व्याख्या प्रस्तुत करता है। हिंदी कथा साहित्य के अंतर्गत जिन महत्वपूर्ण विधाओं की चर्चा की जाती है। उनमें कहानी एक लोकप्रिय विधा है। कहानी अन्य विधाओं की तुलना



में संक्षिप्त और भाव गंभीर होती है। कथाकार मुंशी प्रेमचंद सामाजिक एवं जागरूक लेखक थे। कहानी विधा के क्षेत्र में प्रेमचंद ने एक क्रांतिकारी परिवर्तन की शुरुआत की। प्रेमचंद पूर्व युगीन कहानियों में विशेषतः मनोरंजन के तत्व विराजमान होते थे। परंतु प्रेमचंद ने तत्कालीन भारतवर्ष के उन तमाम सामाजिक समस्याओं को लेकर अपनी कहानियों को एक नया आयाम प्रदान किया। उनकी कहानियाँ आदर्शोन्मुख यथार्थवाद है। यून तो उनकी हरेक कहानी प्रसिद्ध और अति प्रासंगिकता लिए हुए हैं। प्रस्तावित शोध-पत्र के लिए 'बड़े घर की बेटी', 'ईदगाह', 'पूस की रात', 'नमक का दरोगा', 'सवा सेर गेहूँ' और 'सद्गति' कहानियों को लिया गया है। इन कहानियों के अध्ययन उपरांत यह अनुभव होता है कि इन कहानियों के चरित्र और विषय जाने पहचाने हैं। तत्कालीन पराधीन भारतवर्ष की

समाज में व्याप्त समस्याओं को नग्न धरातल पर उकेरना एवं समाज के शोषितों और असहाय वर्गों की मुक्ति और आदर्श के माध्यम से यथार्थ परिस्थिति में सुधार लाना ताकि मानवीय संवेदना बनी रहें यही शोध-पत्र का मूल उद्देश्य है।

बीज शब्द: नारी उत्पीड़न, दहेज प्रथा, जाति व्यवस्था, रुढ़िवादिता।

शोध प्रविधि : प्रस्तुत शोध-पत्र को व्याख्यात्मक, विश्लेषणात्मक एवं समीक्षात्मक पद्धति के माध्यम से प्रस्तुत किया गया है। विषय से संगती रखते हुए मूल कहानियों के साथ कुछ सहायक ग्रंथों की सहायता ली गयी है।

भूमिका :

मुंशी प्रेमचंद ने साहित्य के लगभग हर एक विधाओं में अपनी लेखनी चलाई है। कहानी, नाटक, उपन्यास आदि उनके सभी रचनाओं में सामाजिक समस्याओं को बारीकी से दर्शाया गया है। उन्होंने हंस पत्रिका का भी संपादन किया। प्रेमचंद ने साहित्य में आदर्शोन्मुख यथार्थवाद की परंपरा का सूत्रपात किया। उनकी अद्भुत, मार्मिक और सटीक शब्द चित्रण द्वारा हृदय की गहराइयों को छूने वाले भाव और सूक्ष्म दृष्टि प्रेमचंद को अन्य कथाकारों की रचनाधर्मिता से अलग करती हैं। 'बड़े घर की बेटी', 'ईदगाह', 'कफन', 'बूढ़ी काकी', 'पंच परमेश्वर' उनकी हरेक कहानी का अपना एक अनोखा अंदाज है। उन्होंने लगभग 300 से अधिक कहानियों की रचना की हैं, जो मानसरोवर के भाग 1 से 8 तक में संग्रहित हैं। प्रेमचंद की कहानियों का सरोकार तत्कालीन ग्रामीण समाज के यथार्थ एवं आदर्श का मिश्रण कर प्रस्तुत करता है। अपने युग की संपूर्ण संभावनाएं और उपलब्धियां उनकी कहानियों में व्याप्त हैं। प्रेमचंद ने अपनी रचनाओं में उस समय की सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक दशाओं का इतना सजीव और यथार्थ चित्रण किया है कि आजादी की 79 वर्षों के उपरांत भी उनकी रचनाओं का आलोचनात्मक अध्ययन करने पर पाठक खुद को तत्कालीन धरातल पर खड़ा पाता है। दहेज की

समस्या, रिश्तखोरी की समस्या, धार्मिक कट्टरता, धार्मिक अंधविश्वास, सांप्रदायिक विद्वेष की समस्या आदि उनकी कहानी की मूल केंद्र बिन्दु है।

प्रस्तावित शोध-पत्र “मुंशी प्रेमचंद की कहानियों की प्रासंगिकता” के महत्व को हम अपने समाज में आज भी देख सकते हैं। प्रेमचंद को पढ़ना उन चुनौतियों को प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से अनुभूत करना है, जिन्हें भारतीय समाज बीते काफी समय से झेलता आया है और कहीं ना कहीं आज भी उन चुनौतियों को झेल रहा है। जिसमें किसान की ऋणग्रस्तता, रिश्तखोरी, अनमेल विवाह, धार्मिक-पाखंड, दहेज के कारण मानसिक उत्पीड़न, नगरीय जीवन की स्वार्थ लोलुपता आदि ऐसे ही चुनौतियाँ शामिल हैं। आज प्रेमचंद के स्वर्गवास हुए पूरे 90 वर्ष बीत गए हैं, लेकिन उनके द्वारा साहित्य में वर्णित चुनौतियाँ इक्कीसवीं सदी में अपना चोला बदल कर और अधिक गंभीर चुनौतियों के साथ हमसे रू-ब-रू होते हैं।

‘पूस की रात’ प्रेमचंद की सर्वथा यथार्थवादी कहानी है जिसमें प्रेमचंद ने गरीब किसान की बदहाली, दरिद्रता, विवशता, असहाय अवस्था, खूदखोर महाजन और जमींदार द्वारा उसके शोषण और किसान से मजदूर बनने की लाचारी का यथार्थ चित्रण किया है। हल्कू एक गरीब किसान है। ठिठुरती हुई सर्दी से लेकर तमतमाती हुई गर्मी में रात-दिन मेहनत मजदूरी करता है। माघ-पुस की ठिठुरती रात बिना कंबल के कैसे कटेगी? यही सोच सोच कर उसने एक-एक पैसा काट-काट कर तीन रुपये जमा किए थे। जब सहना वसूल करने आता है तो हल्कू की सारी आशाएं डूब जाती है। उसकी गालियों और घुड़कियों से बचने के लिए वह तीन रुपये सहना को थमा देता है। उसकी पत्नी मुन्नी द्वारा कहा गया यह कथन उसकी दीन दशा को समझने के लिए काफी है। मुन्नी कहती है “मैं कहती हूँ, तुम क्यों नहीं खेती छोड़ देते ? मर-मर के काम करो। उपज हो तो बाकी दे दो बस, चलो छुट्टी हुई। बाकी चुकाने के लिए ही तो हमारा जन्म हुआ है।”¹ कृषक हल्कू की जो समस्या है वह आज भी कहीं न कहीं हमारे समाज में व्याप्त हैं। यूँ तो सरकार ऐसे बहुत से योजनाओं को लागू करने की कोशिश कर रही है और कर भी रही है पर जमीनी हकीकत यही है कि यह सब ढकोसला है, किसान आज भी बेबस है, बदहाल है।

प्रेमचंद का भारत आज के भारत से अलग था। परंतु उस भारतवर्ष में भी रिश्तखोरी की समस्या काफी मात्रा में थी। वर्तमान समय में भी आप किसी सरकारी कार्यालय चले जाए और रिश्त दिए बिना साधारण जनता का काम अपेक्षित समय में नहीं होता है। वह तो मंदिर बन बैठा है जहां चढ़ावा चढ़ाना ही होता है। ‘नमक का दरोगा’ कहानी में बंशीधर को पिता द्वारा यह समझना कि “मासिक वेतन तो पूर्णमासी का चांद है जो एक दिन दिखाई देता है और घटते घटते लुप्त हो जाता है ऊपरी आय बहता हुआ स्रोत है जिससे सदैव प्यास बुझती है।”² आशय यह है कि मासिक वेतन तो केवल महीने के अंत में प्राप्त होता है परंतु ईमानदारी को बेचकर कमाई गई धन यानी रिश्त की कोई सीमा नहीं होती है। लालसा से भरे पूरे लोग अपने जिंदगी के हरेक सुख को भोगने में समर्थ होते हैं। प्रस्तुत कहानी में पंडित अलोपीदीन धन के नशा में मगूर होकर वंशीधर जैसे ईमानदार व्यक्ति को खरीदने का हर संभव प्रयास करता है। प्रेमचंद जी ने पुलिस एवं बड़े बड़े अधिकारियों के कार्यालय में व्याप्त रिश्तखोरी को उजागर करते हैं। इसी संदर्भ में ‘ईदगाह’ कहानी में मोहसिन द्वारा कहा गया यह कथन काफी महत्वपूर्ण हो जाता है जिसे आज के संदर्भ में भी हम नकार नहीं सकते वह तत्कालीन पुलिसिया व्यवस्था पर करारा चोट करते हुए कहता है “अजी हजरत, यही चोरी करते हैं, शहर के जितने चोर डाकू हैं, सब इनसे मिले रहते हैं। रात को यह लोग चोरों से तो कहते हैं चोरी करो और आप दूसरे मोहल्ले में जाकर जागते रहो! जागते रहो! पुकारते हैं।”³ सामाजिक का यथार्थ का नग्न स्वरूप दिखाते हुए मोहसिन कहता है —“मेरे मामू एक थाने में कांस्तीबल है, उनका वेतन बीस रूपया महीना पाते हैं लेकिन घर पर पचास रूपये भेजते हैं।”⁴ वर्तमान समय में अखबारों, न्यूज चैनलों में अक्सर कई भ्रष्ट पुलिस अधिकारी और अफसर बाबू को रिश्त

लेते हुए रंगे हाथ पकड़े जाने का समाचार आता है। हालांकि सभी अधिकारी रिश्तत नहीं लेते परंतु दो-चार भ्रष्ट अफसर के कारण पूरा तंत्र बदनाम होता चला जा रहा है।

समाज में दिन प्रतिदिन बढ़ रहे धार्मिक अंधविश्वास, सांप्रदायिक विद्वेष आदि की समस्या को प्रेमचंद तटस्थता से चित्रित करते हैं। जो हमारी अंदर की संवेदना को झोंकझोर डालती है। 'सद्गति' मुंशी प्रेमचंद जी की सर्वश्रेष्ठ कहानियों में से एक है। इस कहानी में उन्होंने एक ब्राह्मण घासीराम द्वारा एक चमार दुखी पर धर्म के नाम पर किए गए अत्याचार को दिखाया है। इसमें ऊँच-नीच, छुआछूत, धार्मिक शोषण, वर्ग-विषमता का बड़ा मार्मिक चित्रण हुआ है। प्रेमचंद की यथार्थवादी कथा-प्रवृत्ति का यह ज्वलंत उदाहरण है। दुखी चमार को लड़की की सगाई का मुहूर्त निकलवाना है। अतः वह पं० घासीराम को बुलाने जाता है। नजराने के लिए घास के सिवा उसके पास कुछ भी नहीं था। खाली हाथ देख कर पंडित जी दूर से ही भगा देंगे, इसलिए वह घास का एक गट्टा ले जाता है। परंतु तिलकधारी पंडित जी उससे बेगार लेते हैं- लकड़ी की गांठ चिरवाते हैं, खलिहान से भूसा उठवाते हैं। द्वार पर झाड़ू, बैठक में गोबर से लिपाई करवाते हैं। बैचारा गरीब भूखा प्यासा सारे दिन के लिए बेगार में फंस जाता है। मना करने की हिम्मत न था उसमें, पंडित जी बड़े आदमी हैं धर्मात्मा, कहीं साइत गलत निकाल दे तो आफत ही आ जाए लेखक के अनुसार इतना परिश्रम के बाद तो जमींदार भी कुछ खाने के लिए देता है। हकीम भी बेगार लेता है तो थोड़ी बहुत मजदूरी दे देता है। आखिरकार पंडित अपना सारा काम करता है, लकड़ी तो फट जाती है लेकिन भूख-प्यासा उसका शरीर जवाब दे जाता है। उसके हाथ से कुल्हाड़ी गिर जाती है वह चक्कर खाकर गिर जाता है कैसी विडंबना है, कैसी स्थिति है कि तथाकथित समाज का विद्वान और सभ्य व्यक्ति के द्वार पर उसकी शोषण के कारण एक व्यक्ति की मौत हो जाए।

'सवा सेर गेहूं' में शंकर नामक एक ऐसे सीधे-साधे और भोले-भाले किसान की कहानी है जिसे धोखे से ऋण के जाल में फंसा दिया जाता है। शंकर एक गरीब कुर्मी किसान है। उसे दो जून भरपेट खाना भी नसीब नहीं होता फिर भी वह साधु महात्माओं को द्वार से खाली और भूखा नहीं जाने देता। उसकी धर्म भीरू प्रकृति स्वयं को भूखा रखकर भी साधु महात्मा को भरपेट भोजन कराती है। एक ऐसे ही सिद्ध महात्मा को गेहूं की रोटी का भोजन कराने के लिए गांव के विप्र महाराज से सवा सेर गेहूं उधार लेता है। सात साल बाद विप्र महाराज अब तगाजा करते हैं, और उसका शोषण करते हैं। 'सद्गति' कहानी में प्रेमचंद ने ब्राह्मणवाद के धार्मिक शोषण का पर्दाफाश किया है और 'सवा सेर गेहूं' कहानी में सूदखोर महाजनी शोषण के अत्याचारों पर प्रकाश डाला है। गाँव में ब्राह्मण न केवल गरीब किसानों से खलिहानी आदि लेकर मुफ्त की उड़ाते हैं अपितु महाजन बनकर उनका चौतरफा शोषण करते हैं। समाज के ऐसे ब्राह्मणों के लिए समाज सुधारक रैदास कहते हैं-

“रैदास जन्म के कारने होत न कोई नीचा।

नर को नीच करी डारी है ओछे करम को किचा।”⁵

अर्थात् समाज में सभी व्यक्ति अपने कर्मों के द्वारा स्वयं को श्रेष्ठ बनाता है। रैदास कर्म की महत्वा को प्रधानता देते हैं। ठीक उसी प्रकार प्रेमचंद भी समाज में जाति के आधार पर किए गए अन्याय के विरोधी थे।

'बड़े घर की बेटी' कहानी प्रेमचंद द्वारा रचित एक आदर्शोन्मुख यथार्थवादी कहानी है। प्रस्तुत कहानी में लेखक ने संयुक्त परिवार के महत्व और उपयोगिता को प्रतिफलित किया है। साथ ही आनंदी के चरित्र द्वारा एक बड़े घर की बेटी के कर्तव्य एवं गुणों को उजागर किया है। स्त्रियों पर ही परिवार में सामंजस्य स्थापित करने का मुख्य दायित्व रहता है। वह चाहे तो बिगड़ती हुई घर की स्थिति पल भर में संभाल सकती है। जीवन के राह से भटकते हुए पुरुष को सही मार्ग पर ला सकती है और चाहे तो स्वर्ग जैसे घर को नर्क भी बना सकती है। माधव सिंह के दो बेटे हैं- श्रीकंठ सिंह और लाल बिहारी। श्रीकंठ पढ़ा लिखा समझदार है लेकिन लाल बिहारी अनपढ़ गवारा। बात-बात में लाल बिहारी अपनी भाभी आनंदी से नोक झोंक कर बैठता था। वह कहता है “भैया, आप जरा

भाभी को समझा दीजिएगा कि मुंह संभाल कर बातचीत किया करें, नहीं तो एक दिन अनर्थ हो जाएगा।”⁶ कई बार बात आगे बढ़ जाती है परंतु आनंदी संभाल लेती है। आनंदी पति श्रीकण्ठ से कहती है “क्या कहूँ, यह मेरे भाग्य का फेर है! नहीं तो गवार छोकरा, जिसको चपरासीगिरी करने का भी शऊर नहीं, मुझे खड़ाऊ से मारकर यों ना अकड़ता।”⁷ घर की सामान्य शांत परिवेश बिगड़ने लगती है दोनों भाईयों में लड़ाई की स्थिति बन जाती है और लाल बिहारी सिंह घर छोड़कर जाने लगते हैं। उस समय आनंदी सब कुछ भूल कर नैतिकता,

उचित ज्ञान और धैर्य का परिचय देते हुए लाल बिहारी को घर छोड़ कर जाने से रोक लेती है। इस तरह एक संयुक्त परिवार टूट कर बिखरने से बच जाता है। यह बहु की एक आदर्श स्थिति है।

आधुनिकता की होड़ में कई लड़कियां खुद को आजाद करने की चाह में खुद के वैवाहिक जीवन को नष्ट कर रही हैं। वर्तमान समय में पत्नियों द्वारा पतियों की हत्याओं की बढ़ती संख्या को देखने के बाद पुरुषों का एक वर्ग शादी का नाम सुनकर डरता हुआ नजर आता है। महिलाओं ने अपने ऊपर जो विलासिता की जिंदगी लाद ली है, उसने कई परिवारों की खुशियों को गम में बदल दिया है। मेरठ की वह खौफनाक वारदात जिसमें पत्नी मुस्कान ने अपने प्रेमी के साथ मिलकर अपने पति की हत्या कर उसकी लाश को नीले ड्रम में छुपा देती है या मेघालय की वादियों में प्रेमी द्वारा पति की हत्या आदि घटनाएँ ऐसे संदर्भों को और अधिक पुष्ट करती हैं। आज के युवाओं को खासकर लड़कियों को ‘बड़े घर की बेटी’ की कहानी को ज्यादा से ज्यादा पढ़ने और समझने की जरूरत है। नए वर्ष की स्वागत में लड़कियों द्वारा अतिमात्रा में किया गया मद्यपान और नशे के धूर्त में किया गया क्रियाकलाप नारी विमर्श के मूल उद्देश्यों पर सवाल खड़ी करती है। कोई भी व्यक्ति अपने आप में परिपूर्ण नहीं होता है। अतः घर की गृहलक्ष्मी, अपने माता-पिता द्वारा दिए गए संस्कारों का पूरी तन्मयता से उन्हें पालन करना चाहिए और अपने घर को स्वर्ग सदृश्य बनाने का प्रयास करना चाहिए न की मुर्दाहिया।

निष्कर्ष –

वर्तमान समय में कभी यौन शोषण के नाम पर तो कभी दहेज प्रथा के नाम पर होते हुए नारी अक्सर उत्पीड़न का शिकार बनती हुई परिलक्षित होती हैं। दहेज प्रथा आज भी समाज में भयानक रूप लिए हुए हैं जबकि संविधान द्वारा इसे अपराध के रूप में संबोधित किया गया है। परंतु अक्सर हम बिहार, उत्तर प्रदेश, राजस्थान आदि देश के अन्य राज्यों में देखते-सुनते हैं कि दहेज के लिए स्त्रियों को कितना प्रताड़ित किया जाता है। नगरीय परिवेश में रहने के कारण वर्तमान समय में मनुष्य अधिक संवेदनशील हो गया है। तो वहीं समाज से अस्पृश्यता समाप्त करने के लिए कई समाज सुधारक आंदोलन चले लेकिन आजादी के इतने वर्षों बाद भी छुआछूत, जात-पात, ऊँच-नीच के भेद-भाव आज भी दिखाई देता है। कथ्य और शिल्प दोनों ही दृष्टि से प्रेमचंद की कहानियाँ अत्यंत सफल कहानी हैं। उनकी भाषा सरल, रोचक व गतिशीलता से परिपूर्ण है। इस दृष्टि से प्रेमचंद की रचनाएँ अपनी प्रासंगिकता बनाई हुई हैं। अतः प्रेमचंद का साहित्य अपने समय में जितना प्रासंगिक था वह आज भी उतना ही प्रासंगिक और जीवंत है। भले ही कुछ समस्या खत्म हो गई हो परंतु अभी भी कई समस्या ऐसे हैं जो आज भी दिखाई देते हैं।

संदर्भ संकेत –

1. प्रेमचंद मुंशी, प्रतिनिधि कहानियाँ (सम्पादन-भीष्म साहनी) राजकमल प्रकाशन, सोलहवाँ संस्करण- 2018, पृष्ठ संख्या – 42
2. वही, पृष्ठ संख्या - 48
3. वही, पृष्ठ संख्या – 32
4. वही, पृष्ठ संख्या – 33
5. डॉ. सिंह. एन - 'दलित साहित्य के प्रतिमान', वाणी प्रकाशन, प्रथम संस्करण 2012, पृष्ठ संख्या-15
6. प्रेमचंद मुंशी, प्रतिनिधि कहानियाँ (सम्पादन-भीष्म साहनी) राजकमल प्रकाशन, सोलहवाँ संस्करण- 2018, पृष्ठ संख्या – 65
7. वही, पृष्ठ संख्या- 66

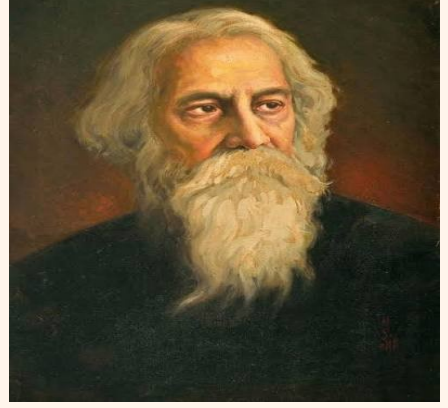
रवींद्रनाथ टैगोर के नाटकों में लोक संगीत

करण दास

अतिथि शिक्षक, हिन्दी विभाग

शोध-सार :-

लोकगीतों की आत्मा लोक संगीत में निहित होती है। लोक संगीत लोक जीवन के सुंदरतम चित्र को अभिव्यक्त करने में सहायक होता है। यही रूप रवीन्द्रनाथ टैगोर के नाटकों में स्पष्ट दिखाई देता है। उन्होंने गीतों का प्रयोग केवल मनोरंज के लिए नहीं अपितु नाट्यकथा के माध्यम से लोक जीवन, संस्कृति और जन भावना को अभिव्यक्त किया है। रवीन्द्रनाथ के नाटकों में 'बाउल', 'कीर्तन', 'भाटियाली', 'सारी गीत' आदि लोकधुनों का प्रभाव उनके गीतों में स्पष्ट है। 'प्रकृति प्रतिशोध', 'राजा', 'रक्तकरबी', 'अचलायतन' 'शारदोत्सव' जैसे नाटकों में श्रमगीत, हास्यगीत, प्रेमगीत और बाउल गीतों की प्रस्तुति से रवीन्द्रनाथ ने लोक-संस्कृति को जीवंत रूप से प्रस्तुत किया है। उन्होंने गीतों के माध्यम से जनसाधारण की पीड़ा, उल्लास, संघर्ष और आत्मबोध को उजागर किया है। उनके अनुसार वाक्य जहां बोलने में असमर्थ होता है, वहां गीत उसे शसक्त रूप में अभिव्यक्त करता है। इस प्रकार, रवीन्द्रनाथ का नाट्यगीत लोक परंपरा और आधुनिक कला का संगम बनकर उभरते हुए प्रतीत होते हैं।



बीज शब्द :- लोकगीत, लोक-संस्कृति, गायनशीलता, लोकधर्मी।

उद्देश्य :- उद्देश्यहीन कार्य को कभी भी सार्थक नहीं माना जा सकता। इसलिए, किसी भी कार्य को प्रारंभ करने से पूर्व उसका उद्देश्य निश्चित करना अत्यंत आवश्यक होता है। साहित्य के क्षेत्र में शोध कार्य का मुख्य उद्देश्य मानव समाज के हितों की खोज एवं संवर्धन करना है। प्रस्तावित शोध पत्र रवीन्द्रनाथ टैगोर के नाटकों को केन्द्र में रखते हुए उनका विश्लेषण किया जाएगा। अतः इस शोध के प्रमुख उद्देश्य निम्नलिखित हैं :-

1. रवीन्द्रनाथ टैगोर के नाटकों में गीतों की भूमिका का विश्लेषण करना।
2. रवीन्द्रनाथ टैगोर के नाटकों में लोकगीतों के विभिन्न रूपों (बाउल, कीर्तन, भाटियाली, श्रम गीत आदि) की पहचान और विश्लेषण करना।
3. रवीन्द्र नाटकों के लोकधर्मी रूप का अध्ययन करना।
4. भारतीय नाट्यपरंपरा में रवीन्द्रनाथ के लोकधर्मी योगदान का मूल्यांकन करना।

शोध प्रविधि :-

“रवीन्द्रनाथ टैगोर के नाटकों में लोक संगीत” शोध विषय को कार्य रूप में परिणत करने हेतु शोध प्रविधि के रूप में विवरणात्मक, व्याख्यात्मक और समीक्षात्मक पद्धति का प्रयोग करते हुए रवीन्द्रनाथ टैगोर के वैशिष्ट्य को वास्तविक रूप में सामने लाने का प्रयास किया गया है।

मूल आलेख :-

लोक मानस में लोक संगीत को अनेक प्रकार से परिभाषित किया गया है। लोक संगीत को इसकी मुख्य इकाई लोकगीत के आधार पर अधिक गहराई तक समझा जा सकता है। लोकगीत हमारी पुरातन परम्परा से होते हुए आधुनिक समय तक जन जन में लोकप्रिय एवं रुचिकर है जिससे लोक गीत की पृष्ठभूमि का सहज ही मापन किया जा सकता है। लोकगीत जो परम्परा से हमारे बीच विद्यमान है इनके रचयिता का पता नहीं रहता है। इन गीतों

को जब कभी भी किसी रचयिता ने रचा होगा उस समय वह व्यक्तिगत भावनाओं के स्थान पर सामाजिक भावनाओं का निरूपण किया होगा। इस प्रकार आम जनमानस द्वारा निज जीवन में गाये जाने वाले पारम्परिक गीत लोकगीतों की श्रेणी में रखे जा सकते हैं। इन गीतों की श्रेणीयाँ गाँवों, कस्बों एवं शहरों में अलग-अलग होती है। हमारे जीवन से लोक गीतों का गहरा रिस्ता होता है। सर्वसाधारण द्वारा यापन किया जाने वाला स्वभाविक जीवन लोक जीवन है। हमारे उत्सवों में लोक कला जीवित रहती है। प्रत्येक युग विशेष में लोकगीत अपना अस्तित्व बनाये रखने में समर्थ रहें हैं। लोकगीतों की विशेषता उसकी भाषा की कोमलता, लयात्मकता एवं संगीतात्मकता है।

लोक संगीत की उत्पत्ति मानव की सभ्यता ने शनैः शनैः विकास किया है। समाज में विभिन्न स्वरूपों में घटित होने वाली घटनाओं जैसे हर्ष-विशाद, घात-प्रतिघात, सुख-दुख इत्यादि को मानव ने लोक जीवन में स्पष्ट रूप से समझा होगा। प्राकृतिक चेतनता से स्वचेतनता को जागृत कर उसने भी अपने उत्सवों में छोटी-छोटी पक्तियों के माध्यम से संवेगों एवं भावनाओं को प्रकट किया होगा। हमारा प्राकृतिक वातावरण संगीतमय है पक्षियों का कलरव, हवा की सांय-सांय, झरनों का गिरना स्वतः संगीत को जन्म देता है। लोक संगीत मानव मन का सहज उदगार है। सभ्यता का पहिया समय के साथ चलता रहा है और आज भी प्रगतिशील है। समयान्तर पर हो रहे परिवर्तनों को लोकगाथाओं लोकसंगीत के माध्यम से मनुष्य को व्यक्त करता है।

रवीन्द्रनाथ ने अपने नाटकों में गीतों का उपयोग एक विशिष्ट दृष्टिकोण को अभिव्यक्त किया है। यद्यपि उनकी नाट्यगीत-प्रवृत्ति यात्रा-नाटक परंपरा से बाह्य रूप में कुछ समानता रखती है, फिर भी उनके गीतों का प्रयोग पूर्णतः मौलिक और निजी दृष्टिकोण प्रभावित होती दिखाई देती है। उन्होंने अपने जीवन के अनुभव और कर्मप्रधान जीवन के बीच गीतों के माध्यम से मुक्ति की राह खोजते हैं। इस दृष्टि से उन्होंने नाट्य-गीतों का यथोचित प्रयोग कर गीतों को मानव जीवन के हर्ष विषाद, सुख-दुख आदि को प्रस्तुत किया है।

रवीन्द्रनाथ के नाटकों में गायनशीलता एक विशिष्ट धारा का अंग है। उन्होंने सन 1881 में 'वाल्मीकि प्रतिभा' नामक प्रथम संगीत नाटक लिखा जिससे उनके मन में गीतप्रधान नाटक लिखने की एक प्रबल इच्छा का आरंभ हुई और उन्होंने नाट्य-कथाओं को गीतों के सूत्र से बाँधने की चेष्टा की। इसका कारण यह था कि वे मानते थे कि वाणी के भीतर जो भावनात्मक सत्य छिपा होता है, उसे प्रकट करने का सर्वश्रेष्ठ माध्यम गीत ही है। रवीन्द्र-नाटकों में गीत के उपयोग को लेकर डॉ. आशुतोष भट्टाचार्य ने अपने मत को स्पष्ट करते हुए कहते हैं -

“बांगाली जातिर एकांत गीतिप्रवणता होइते जेमन प्राचीन यात्रार जन्म होइयाछिल, रवींद्र मानसेर एकांत गीतिभूमि होइतेई तेमनी रवींद्रनाट्यगुलि विकाश लाभ कोरियाछिल।”¹

यदि बांग्ला के अन्य नाटककारों, विशेषतः गिरीशचंद्र घोष के नाटकों केवल मनोरंजन के दृष्टि से लिखा गया यानी केवल पाठकों एवं दर्शकों तक ही सीमित था। लेकिन रवीन्द्रनाथ के नाटकों में गीतों का प्रयोग केवल मनोरंजन नहीं अपितु समाज के परिस्थितियों के अनुरूप हुआ है। रवीन्द्रनाथ के अनुसार गीत पूर्णता की अभिव्यक्ति है। 'जीवनस्मृति' ग्रंथ में उन्होंने लिखा है -

“बाक्य याहा बोलिते पारे ना, गान ताहाई बोले।”²

स्पष्ट है कि जिन भावनाओं को व्यक्त नहीं किया जा सकता उसे समझने और अनुभव करने के लिए वाणी पर्याप्त नहीं है, अपितु वह केवल संगीत या गीत से संभव ही है। रवीन्द्रनाथ टैगोर के गीतों में एक अनुपम मधुरता के साथ साथ एक विशेष योजना की ओर संकेत करता है। रवीन्द्र-नाटकों के प्रायः प्रत्येक नाटक में आम जनता, हर्ष-विशाद, घात-प्रतिघात, सुख-दुख, समाज की गतिशील जीवन-धारा की एक झलक मिलती है। अतः इन नाटकों में गीत भी धरती से जुड़े हुए दिखाई देता है, जो एक मौलिक नाट्य संरचना का अंग बन जाता है।

रवीन्द्रनाथ ने नाट्य-गीत के यथोचित प्रयोग को ध्यान में रखते हुए गीतों को जन-संस्कृति और धरती की सघनता से जोड़कर प्रस्तुत किया है। उनके प्रतिभा सही अर्थों में देखे तो तब विकसित हुआ जब बांग्ला लोक संगीत जैसे - बाउल, कीर्तन और भाटियाली से प्रभावित होकर दरबार और शहर से निकलकर स्वतंत्र रूप से बांग्ला ग्रामीण जीवन पर लिखना प्रारंभ किया। इस संदर्भ में धुर्जटि प्रसाद मुखोपाध्याय अपने लेख 'कथा ओ सुर' में लिखते हैं: "जखन देशी संगीत अर्थात बाउल, कीर्तन, भाटियालीर स्रोत तार प्रतिभाके अनुप्राणित करले तकखनी तीनी निजेर संधान पेलेन, स्वाधीन होलेन।... देशेर संधान, दरबार ओ नगरेर बाइरेर माटिर ओ ग्रामेर संधान।... माटिर संधान पेयेछेन बोले रविबाबु संगीते के नवजीवन दीते पेरेछेन।"³

'प्रकृति प्रतिशोध' नाटक में ग्रामीण गायक-गायिकाओं के संवाद और सामूहिक गीत एक लोक परिवेश को दर्शाते हैं। जैसे किसानों द्वारा गाया गया गीत-

“हे रे गो नंदरानी,
आमादेर श्यामके छेड़े दाओ,
आमरा राखाल बालक दाड़िये द्वारे,
आमादेर श्यामके दिये जाओ।”⁴

इसी प्रकार, ग्रामीण लोकजीवन में हास-परिहास, विनोद और रसरंग के पक्षों को उन्होंने कुछ पुरुषों के स्वर में गाए गए गीतों के माध्यम से प्रकट किया है-

“प्रिये, तोमार ढेंकी होले जेतेम् बेंचे,
रांगा चरण तले नेचे नेचे।
ढिप ढिपिये जेतेम् मारा,
माथा खुंडे होतेम् सारा,
कानेर काछे कचकचिये मानटी तोमार मितेन् येचे।”⁵

उपर्युक्त हास्यगीत लोकगीत का एक महत्वपूर्ण अंग हैं, जिसमें लोक जीवन की सहजता, विनोदप्रियता और भावाभिव्यक्ति का सुंदर समन्वय दिखाई देता है।

बंगाल के लोकगीतों में प्रेमगीत एक प्रमुख प्रकार है, जो मुख्यतः कृष्ण-राधा की प्रेमलीला को केंद्र में रखकर रचे गए हैं, जो ऐसे कई लोकगीत जनसमाज में प्रचलित हैं। 'प्रकृति प्रतिशोध' नाटक के चौथे दृश्य में ऐसा ही एक गीत स्त्रियों के एक समूह द्वारा प्रस्तुत किया गया है, जहां श्री कृष्ण की मनमोहक छवि का आकर्षक चित्रण किया गया है। जिसमें उनकी बांसुरी के मधुर धुनों से गोपियां मोहित हो जाती हैं। कृष्ण गोपियों को मोहित कर उनसे दूर चले जाते हैं, जिससे गोपियों के हृदय में विरह उत्पन्न होती है।

“कथा कोसने रे राई, श्यामेर बड़ो बड़ाई होएछे।
के जाने ओ कैमन कोरे मन केड़ेछे।
शुधु धीरे बाजाए बाशी, शुधु हाशे मधुर हाशी।
गोपीनीदेर हृदय निये तबे छेड़ेछे।”⁶

लोक जीवन का एक महत्वपूर्ण अंग लोकगीत है, यह अति प्राचीन विधा जो आदिमयुग से समाज में उपस्थित है। डॉ. सत्येन्द्र ने माना है कि आदिम मानव ने वाणी का प्रथम दर्शन गीत के रूप में ही किया था। अर्थात् लोकगीत मानव की प्रथम भावाभिव्यक्ति है। भारत का लोक जीवन सदा संगीतमय रहा है। भारतीय ग्रामीण समाज में हर एक अवसर पर गीत गाये जाते हैं। उसी लोकगीत का एक विशिष्ट रूप है - श्रमगीत। ये वे गीत हैं, जिन्हें लोग किसी विशेष कार्य करते समय गाते हैं। चाहे गाँव हो या शहर, जहाँ कहीं भी श्रमिक वर्ग सामूहिक रूप से

परिश्रम करते हैं, वहाँ इन गीतों की मधुर ध्वनि सुनाई देती है। जब कई लोग मिलकर कोई कार्य करते हैं, तब यह श्रमगीत उनके भीतर एकता, उत्साह और ऊर्जा का संचार करता है। श्रमगीत, लोकजीवन की वह सहज रचना है, जो किसी भी श्रमिक के श्रम की पीड़ा को भुला देती है और कार्य को उत्सव बना देती है। जब कोई नाविक नाव चलाते समय एक साथ गाते हैं, तो उसे सारीगीत कहलाता है। उसी प्रकार गाँव की स्त्रियाँ जब ढेंकी से धान कूटती हैं, तब एक ही सुर में वे समूह गीत गाती हैं। धान रोपते या काटने के समय स्त्रियाँ जो गीत गाती हैं, उन्हें 'रोपनी' के गीत कहते हैं। यहाँ तक कि पालकी उठाने वाले कहारों भी चलते हुए थकान से राहत पाने के लिए गीत गाते हैं। ये सभी लोकगीत, श्रम के साथी बनकर श्रमगीत का रूप लेते हैं। इन गीतों में न केवल परिश्रम की थकान मिटती है, अपितु समूह में तालमेल और आनंद भी बना रहता है।

रवीन्द्रनाथ टैगोर ने भी अपने प्रसिद्ध नाटकों 'अचलायतन' और 'रक्तकरबी' में श्रमगीतों का प्रभावशाली प्रयोग किया है। विशेष रूप से, 'अचलायतन' के द्वितीय दृश्य में, शोणपांशु द्वारा खेत में काम करते समय गाया गया गीत श्रमगीत की एक सुंदर उदाहरण है, जहाँ गीत, श्रम और सौंदर्य एकाकार हो जाते हैं।

**“आमरा चाष करी आनन्दे,
माठे माठे बेला काटे सकाल होते संधे।”⁷**

फसल कटाई के समय गाया गया गीत को पौष गीत' कहा जाता है। 'रक्तकरबी' नाटक में 'पौष गीत' का उदाहरण इसप्रकार है -

**“पौष तादेर डाक दियेछे - आय रे चले,
आय आय आया।
डाला जे तार भरेछे आज पाका फशले,
मरी, हाय हाय हाया।”⁸**

बाउल संगीत को लोक संगीत कहा जाता है। यह लोक संगीत मुख्यतः ईश्वरीय महानता, मानवमात्र की आधारभूत श्रेष्ठता और ईश्वरीय प्रेम के उपदेश पर केंद्रित है। बाउल संगीत मनुष्य की भावनाओं को अभिव्यक्त करता है। इन गीतों में आध्यात्मिक विचारों के साथ साथ दैनिक जीवन के विषयों में भी होती है, जिसे सरलता से प्रस्तुत किया जाता है। बाउल गायकों द्वारा दोतारा, खमक, डुग्गी एवं कड़ताल जैसे अनेक वाद्यों का उपयोग किया जाता है, लेकिन उसमें एकतारा इनका सर्वाधिक लोकप्रिय वाद्य है। बंगाल का बाउल संगीत रवीन्द्रनाथ की रचनाओं पर गहरा प्रभाव छोड़ता है। उनके नाटकों में बाउल चरित्र अथवा बाउल जैसी संगीतमय अभिव्यक्ति अक्सर देखी जाती है। 'शारदोत्सव' नाटक में प्रकृति के उल्लासपूर्ण उत्सव को बालकदल की बाउल-धुन में, मानो स्वयं ठाकुरदा की वाणी से गाया गया एक आत्मविभोर गीत बना दिया गया है-

**“आज धानेर खेते रौद्रछायाय
लुकोचुरी खेला।
नील आकाशे के भासाले
सादा मेघेर भेला।”⁹**

'राजा' नाटक में बाउल दल की सामूहिक स्वर-लहरियों में गूँजता हुआ जूरीगान, मानो यात्रा को लोक-संवेदना और आध्यात्मिकता से संपृक्त कर देता है।

**“बाउलेर दल
आमार प्राणेर मानुष आछे प्राणे,
ताई हेरि ताय सकल खाने।
आछे से नयन ताराय, आलोकधाराय-ताई ना हाराय।**

ओगो, ताई देखी ताय जेथाय सेथाय,
ताकाई आमी जेदिक पाने।”¹⁰

‘गृहप्रवेश’ नाटक में बाउल की गीतात्मक आत्मा जतिन की वाणी से झरती है, मानो वह एक आध्यात्मिक गायक बन कर जीवन के गूढ़ रहस्यों को स्वर देता है-

“ओ रे मन, जखन जागली नारे
तखन मनेर मानुष एल द्वारे,
तार चले जावार शब्द सुने
भांगलो रे घुम ओ तोर, भांगलो रे घुम अंधकारे।”¹¹

‘प्रायश्चित्त’ नाटक में धनंजय वैरागी के माध्यम से सारीगीत की धुनों में रचित गीत -

“ग्राम छाड़ा ओई रांगामाटीर पथ
आमार मन भूलाय रे,
ओ रे कार पाने मनहात बाड़िये
लुटिये जाए धूलाय रे।”¹²

निष्कर्षतः हम कह सकते हैं कि रवीन्द्रनाथ ने बांग्ला लोकधर्मी संस्कृति, लोकगीत, सामूहिक गान, श्रमगीत, बाउल गीत, हास्यगीत आदि को अपने नाटकों में कलात्मक रूप से समाहित किया है। लोकसंगीत मानव के हर क्षण बदलती भावनाओं पर आधारित होती है। ग्रामीण समाज में लोक अपनी भावनाओं को शब्दों से गीतों में अधिक प्रस्तुत करता है जो जीवन के हर क्षण हर उत्सव के लिए लोक संगीत शामिल रहते हैं। लोकगीत का सृजन घटना प्रधान होता है। यह मानव के सुखद-दुखद घटनाओं में किसी एक मानव मस्तिष्क से उपजता है और सामूहिक मुख और स्वर से गुजर कर गीत बन जाता है जो मानव के जीवन के महत्वपूर्ण क्षण जैसे- संस्कृति, कृषि, श्रम, आपसी हँसी-उपहास आदि पर आधारित होती है। इससे उनके नाटक एक समृद्ध लोकधर्मी भावभूमि प्राप्त करते हैं। रवीन्द्रनाथ के नाट्यगीतों में लोकजीवन, जनसंगीत, लोकनाट्य, और लोकसंवेदनशीलता का सुंदर और सजीव संगम मिलता है, जिससे उनकी नाट्यकला भारतीय सांस्कृतिक परंपरा में अद्वितीय स्थान प्राप्त करती है।

संदर्भ ग्रंथ सूची :-

1. डॉ. आशुतोष भट्टाचार्य, रवीन्द्रनाथ ओ लोक-साहित्य, ए. मुखर्जी एंड कंपनी, 2022।
2. रवीन्द्रनाथ ठाकुर, जीवनस्मृति, साहित्यम, प्रथम संस्करण, 1410।
3. धूर्जटी प्रसाद मुखर्जी, कथा ओ सुर।
4. प्रकृति प्रतिशोध, रवीन्द्रनाथ ठाकुर, खंड 1, विश्वभारती, 1406, पृष्ठ- 90।
5. वही, पृष्ठ-99।
6. वही, पृष्ठ-99।
7. अचलायतन, रवीन्द्रनाट्य संग्रह, खंड 1, विश्वभारती, 1406, पृष्ठ-813।
8. रक्तकरबी, रवीन्द्रनाट्य संग्रह, खंड 2, विश्वभारती, 1406, पृ. 74।
9. शरदोत्सव, रवीन्द्रनाट्य संग्रह, खंड 1, विश्व- भारती, 1406, पृष्ठ-643।
10. राजा, रवीन्द्रनाट्य संग्रह, खंड 1, विश्वभारती, 1406, पृष्ठ-756।
11. गृहप्रवेश, रवीन्द्रनाट्य संग्रह, खंड 2, विश्वभारती, 1406, पृष्ठ-259।
12. प्रायश्चित्त, रवीन्द्रनाट्य संग्रह, खंड 1, विश्वभारती, 1406, पृष्ठ-737।

“अक्षर से अवसर : हिन्दी शिक्षण और रोजगार की दिशाएँ ” विषय पर दिया गया भाषण

डॉ. नागेश्वर यादव, एसोशियट प्रोफेसर

हिन्दी विभाग, आर.टी.वी

प्रस्तावित विषय केवल हिन्दी भाषा और साहित्य तक सीमित नहीं है। यह उन तमाम विद्यार्थियों के भविष्य, शिक्षा और उनके रोजगार से जुड़े प्रश्नों के उत्तर तलाशने का प्रयास है, जो हिन्दी को एक विषय के रूप में चयनित कर महाविद्यालय या विश्वविद्यालय में दाखिला लेते हैं। यह तो निर्विवाद रूप से तय है कि भाषा मनुष्य के विकास की आधारशीला है। इसके अध्ययन-अध्यापन पर दो मत नहीं हो सकते। परन्तु आज के इस वैश्विककरण के दौर में जहाँ सभी वस्तुओं का मूल्य अर्थ के आधार पर तय किया जाता है। ऐसे में यह प्रश्न उठना स्वाभाविक है कि हिन्दी को विषय के रूप में चयनित करना कहाँ तक सही है ?



क्या हिन्दी -शिक्षण से भविष्य में चलकर रोजी-रोटी की समस्या हल हो सकती है ? क्या इसमें रोजगार के अवसर हैं ? यदि हाँ तो एक विद्यार्थी के रूप में हिन्दी को किस रूप में पढ़ना चाहिए ? यदि नहीं तो रोजगार की उन दिशाओं की तलाश की जानी चाहिए, जिससे अधिक से अधिक विद्यार्थी हिन्दी पढ़ने की ओर आकृष्ट हों। साथ ही आज के परिप्रेक्ष्य में इस बात पर ध्यान देना जरूरी है कि हिन्दी शिक्षण के दौरान रोजगार की दिशाओं की तलाश करने में कौन-कौन सी चुनौतियाँ आ सकती हैं ? और उन चुनौतियों का निदान कैसे किया जा सकता है ? ऐसे ज्वलंत एवं प्रासंगिक प्रश्नों के समाधान तलाशने हेतु आज की सभा आयोजित की गई है।

शिक्षा के लक्ष्यों पर विचार करते हुए कुछ शिक्षाशास्त्रियों ने शिक्षा को अनिवार्यतया रोजगार से जोड़ने की वकालत की है, जो इस तथ्य की ओर संकेत करता है कि शिक्षा केवल अक्षरीय ज्ञान या लिखने पढ़ने का माध्यम नहीं, अपितु ज्ञान, चेतना, संवाद और जीवन-निर्वहण का भी आधार है।

यहाँ जरा रुककर विचार करने का जरूरत है कि समस्या कहाँ है ? भाषा के रूप में हिन्दी में ? या हिन्दी शिक्षण के तौर-तरीके में ? गौरतलब है कि भाषा के रूप में हिन्दी के अध्ययन-अध्यापन में कोई खास समस्या नहीं है। फिर भी इससे इन्कार नहीं किया जा सकता कि अंग्रेजी को रोजगार, आधुनिकता और अवसरों से जोड़कर देखने की प्रवृत्ति हम भारतीयों में अधिक प्रबल है। आज के दौर में इस प्रवृत्ति का विरोध करना उचित नहीं, बल्कि हिन्दी के विद्यार्थियों से यह अपेक्षा होनी चाहिए कि वे अंग्रेजी ही नहीं अन्य भारतीय भाषाओं का भी ज्ञान प्राप्त करें। क्योंकि आज रोजगार के क्षेत्र में उसी का वर्चस्व है, जो एकभाषिक नहीं, अपितु बहुभाषिक कौशल-सम्पन्न है।

अक्सर यह देखा जाता है कि विद्यार्थी हिन्दी को विषय के रूप में तब यचनित करते हैं, जब उन्हें किसी अन्य विषयों में सट नहीं मिलता है। या इस गलत धारणा के शिकार हो जाते हैं कि हिन्दी पढ़कर क्या करेंगे ? इसमें रोजगार की कोई संभावनाएं नहीं हैं? या फिर अपने-अपने घर वालों के दबाव में किसी ऐसे विषय में दाखिला ले

लेते हैं, जिसमें उनकी रुचि नहीं होती है। ऐसे विद्यार्थी जैसे-तैसे परीक्षा तो पास कर लेते हैं, किन्तु उनसे अभिभावकों एवं शिक्षकों की जो अपेक्षाएँ थीं वे पूरी नहीं होती हैं। इसलिए विषय का सही चुनाव करना बहुत जरूरी है। कहने का आशय यह कि हिन्दी के प्रति रुचि का अभाव एवं स्वेच्छा से विषय के रूप में हिन्दी का चयन न करना एक बड़ी समस्या है। यदि विद्यार्थी रुचि के साथ हिन्दी का अध्ययन करें तो उनके लिए अवसर आज भी उपलब्ध है।

मैं यह मानकर चल रहा हूँ कि आप सभी ने स्वेच्छा से हिन्दी भाषा का चयन किया है। तब यह भी स्वाभाविक है कि आपके मन में जरूर कोई -न-कोई विचार आया होगा कि हिन्दी पढ़कर आगे शिक्षक बनेंगे या प्रोफेसर या कुछ और। यह मैं इसलिए कह रहा हूँ कि अक्सर लोग सोचते हैं कि हिन्दी का अध्ययन केवल अध्यापन तक ही सीमित है। जबकि वस्तु स्थिति बिल्कुल भिन्न है। आज हिन्दी का अच्छा जानकार लेखक, गीतकार, पत्रकार, अनुवादक, सम्पादक, प्रूफरीडर, पटकथा और संवाद लेखक से लेकर डिजिटल मीडिया और सोशल मीडिया के क्षेत्र में जा सकता है। इसलिए आज यदि यह मानकर चलें कि – हिन्दी का ज्ञान स्वयं में शक्ति है, और हिन्दी के साथ आधुनिक कौशल विकास को जोड़ दिया जाये तो इसमें रोजगार की अपार समभावनाएं तलाशी जा सकती हैं।

कहने की आवश्यकता नहीं कि नई शिक्षा नीति के तहत रवीन्द्रनाथ ठाकुर विश्वविद्यालय का हिन्दी विभाग ने स्नातक स्तर से लेकर स्नातकोत्तर तक जिस पाठ्यक्रम का निर्माण किया है उसमें इन सभी बातों को ध्यान में रखा है। प्रथम छमाही में अनुवाद विज्ञान को रखा गया है ताकि विद्यार्थी अनुवाद के अर्थ, स्वरूप, महत्त्व, प्रकार, प्रक्रिया से परिचित हो सके। भारत एक बहुभाषिक देश है, जिसमें अनेक भाषाएँ बोली और समझी जाती हैं। सभी प्रांतीय भाषाओं में रचित साहित्य विश्वस्तरीय साहित्य हैं। यदि कोई विद्यार्थी अनुवाद में दक्षता हासिल कर ले तो उसे रोजगार तलाशने की जरूरत ही नहीं पड़ेगी। अनुवाद की महत्ता इस बात से लगाई जा सकती है कि गीतांजलि श्री की रचना- रेत समाधी को बुकर्स प्राइज कतई नहीं मिलता यदि उसका अनुवाद डेजी रॉकवेल द्वारा नहीं किया जाता। द्वितीय छमाही में सम्पादन प्रक्रिया को रखा गया है ताकि विद्यार्थी दैनिक पत्रों से लेकर मासिक, त्रैमासिक, छमाही, वार्षिक जैसी विविध पत्रिकाओं की सम्पादन विधि से अवगत हो सके और उस क्षेत्र में अपने-आपको तैयार कर सके। तृतीय छमाही में साहित्य और सिनेमा, प्रयोजनमूलक हिन्दी, चतुर्थ और पंचम छमाही में क्रमशः हिन्दी की साहित्यिक पत्रकारिता, प्रादेशिक असमिया साहित्य आदि विषयों को शामिल किया गया है। इसी प्रकार स्नातकोत्तर स्तर के पाठ्य क्रमों में शोध प्रविधि, पटकथा लेखन, भारतीय साहित्य एवं प्रवासी साहित्य के अतिरिक्त विविध विमर्शों को शामिल किया जाना इस बात का प्रमाण है कि विभाग विद्यार्थियों को सिर्फ भाषा और साहित्य का पारम्परिक ज्ञान प्रदान करने में विश्वास नहीं करता अपितु उनके अन्दर व्यवहारिक कौशल विकसित करना चाहता है। तब प्रश्न उठता है कि समस्या कहाँ है ? हिन्दी शिक्षण को कौशलपरक बनाने में ? पाठ्यक्रम और रोजगार के बीच सीधा सम्बन्ध स्थापित करने में? विद्यार्थियों में तकनीकी दक्षता का अभाव ? उनमें बहुभाषिकता का अभाव ? उनमें स्वरुचि का अभाव ? या कोई और कारण ? जिस पर चर्चा करने के लिए हम सभी एकत्र हुए हैं कि अक्षर केवल ज्ञान का आरम्भ नहीं, अवसर का आरम्भ है।

ऐसी स्थिति में हिन्दी का अध्ययन-अध्यापन केवल साहित्य की भाषा के रूप में न होकर, रोजगार की भी भाषा के रूप में होना चाहिए। हिन्दी का प्रचार-प्रसार अपने देश में सम्पर्क भाषा के रूप में तो है ही विदेश में भी इसकी लोकप्रियता काफी तेजी से बढ़ रही है। वाणिज्य, पर्यटन, तकनीकी और सोशियल मिडिया में हिन्दी का प्रयोग दिन-पर दिन बढ़ते जा रहा है, जो इस तथ्य की पुष्टि करता है कि भारत में यदि किसी मल्टिनेशनल कम्पनी को स्थायित्व प्रदान करना है तो उनके अधिकारियों एवं कर्मचारियों को हिन्दी भाषा का ज्ञान आवश्यक है। तभी वे अपने उत्पादों का विज्ञापन प्रभावशाली ढंग से हिन्दी में दे या दिलवा सकेंगे। भारत में पर्यटन के लिए बहुत अच्छा अवसर (स्कोप) है, जहाँ हिन्दी का प्रयोग होता है। बैंकिंग सेक्टर, विभिन्न निगमों तथा मनोरंजन से सम्बन्धित उद्योगों में हिन्दी के द्वारा रोजगार के अवसर तलाशे जा सकते हैं। कृत्रिम बुद्धिमत्ता(AI) में हिन्दी का प्रवेश इस बात का सूचक है कि शैक्षिक जगत में हिन्दी माध्यम से नवाचार की क्रांति होने वाली है। उच्चशिक्षा तथा शोध से सम्बन्धित विषयों की जानकारी जुटाने में हिन्दी अग्रणी भूमिका निभाने वाली है। वैश्वीकरण के इस दौर में हिन्दी जिन-जिन बिन्दुओं पर अंग्रेजी से प्रतिस्पर्धा करना पड़ रहा है उसका निदान ढूँढ़ने के लिए केन्द्रीय हिन्दी संस्थान(भारत), विश्व हिन्दी संस्थान(कनाडा) तथा विश्व हिन्दी सचिवालय (मॉरीशस) जैसी संस्थाएँ पारिभाषिक शब्दावलियों के निर्माण एवं विभिन्न देशज एवं विदेशज भाषाओं से आये शब्दों के मानकीकरण पर कार्यरत हैं।

सारांश यह कि हिन्दी का भविष्य कैसा है ? इसका सटीक उत्तर प्राप्त करने के लिए हमने विभिन्न पहलुओं में हिन्दी की उपयोगिता को रखकर देखने का प्रयास किया है। ताकि यह स्पष्ट हो सके कि हिन्दी को भाषा के रूप में अध्ययन करने वाले के समक्ष रोजगार की दिशाओं का सम्यक परिज्ञान हो सके और अपने-आपको उस क्षेत्र के लिए तैयार कर सकें। अंत में आप सभी के उज्ज्वल भविष्य की कामना करते हुए अपनी वाणी को विराम देता हूँ।

सुरों के महानायक: ज़ूबीन गर्ग

पूजा कुमारी सरोज

अतिथि शिक्षक, हिन्दी विभाग

गीतों की खुशबू से हर असमिया का दिल जीतने वाले और तीन दशकों से अधिक समय से असमिया संगीत जगत को समृद्ध करने वाले व्यक्ति हैं- ज़ूबीन गर्ग। ज़ूबीन गर्ग केवल एक नाम नहीं हैं, बल्कि वे एक क्रांति, एक भावना, असमिया संगीत जगत की चेतना और असमिया लोगों की भाषा में 'हार्टथ्रोब' (धड़कन) जुबिन हैं।



व्यक्तिगत जीवन और पूर्वोत्तर भारत के सांस्कृतिक परिदृश्य में, बहुत कम शख्सियतों ने ज़ूबीन गर्ग जैसा सम्मान और भावनात्मक लगाव हासिल किया है, जिन्हें अक्सर महान असमिया संगीतकार भूपेन हजारिका ("सुधाकंठ") का उत्तराधिकारी माना जाता है। मेघालय में जन्मे गर्ग का करियर गायन, अभिनय, फिल्म निर्माण और परोपकार तक फैला रहा, जिसमें लगभग 40 भाषाओं में 38,000 से अधिक गाने शामिल हैं। ज़ूबीन गर्ग को संगीत जगत में 'हमिंग किंग' कहा जाता है उनकी जादुई गुनगुनाहट सीधे सुनने वालों के दिलों को छू लेती है। 19 सितंबर 2025 को सिंगापुर में ज़ूबीन गर्ग का निधन एक दुखद हादसे (समुद्र में डूबने) के कारण हुआ था। उनकी अचानक हुई

इस मृत्यु ने पूरे असम और देश के संगीत जगत को गहरे सदमे में डाल दिया था।

ज़ूबीन का पूरा नाम (असली नाम) जीबोन बोरठाकुर था। उनका जन्म 18 नवंबर, 1972 में तुरा सिविल अस्पताल, गारो पहाड़, मेघालय में हुआ था। उनके पिता का नाम मोहिनी मोहन बोरठाकुर (उर्फ कपिल ठाकुर) और माता का नाम इली बोरठाकुर है। उनका विवाह 4 फरवरी, 2002 को गरिमा सैकिया के साथ हुआ था। उन्होंने अपनी शुरुवाती पढ़ाई जोरहाट और करीमगंज से पूरी की थी स्कूली शिक्षा करीमगंज, बिजनी और तामुलपुर से पढ़ाई करते हुए वर्ष 1988-89 में उन्होंने मैट्रिक की परीक्षा उत्तीर्ण की। उच्चतर माध्यमिक की पढ़ाई जे.बी. कॉलेज, जोरहाट से की। इसके बाद उन्होंने बी. बरुआ कॉलेज, गुवाहाटी में रसायन विज्ञान से स्नातक में दाखिला लिया, लेकिन संगीत में पूरी तरह सक्रिय होने के कारण यह पढ़ाई अधूरी रह गई।

एक सच्चे मानवतावादी और कलाकार

ज़ूबीन गर्ग केवल संगीत की सीमाओं में बंधे कलाकार नहीं हैं; वह एक सच्चे मानवतावादी कलाकार हैं। उन्होंने मनुष्यों के लिए क्या कुछ नहीं किया! बाढ़ की विभीषिका हो या कोई और संकट, वे हमेशा लोगों की मदद के लिए सबसे आगे दौड़ पड़ते थे। जुबीन गर्ग प्रखर राष्ट्रीयता की मिसाल हैं। जब पूरा असम संकट के दौर से गुजर रहा था, तब उन्होंने खुद को सुरक्षित दूरी पर रखने के बजाय हमेशा जनता के साथ खड़े होने का साहस दिखाया। उत्तर-पूर्वी भारत की नई पीढ़ी को रचनात्मकता की ओर ले जाने का उनका एक बड़ा सपना था।

पूर्वी और पश्चिमी संगीत के अनूठे मिश्रण से एक नया आयाम रचने वाले ज़ूबीन गर्ग ने बिहू नाम, कामरूपी और गोलपोरिया लोकगीत, झूमुर, नगाड़ा नाम, एनिनाओ, जिकिर-जारी आदि विधाओं में लगभग पांच हजार गीत गाए हैं। जुबीन गर्ग के माध्यम से ही आज की नई पीढ़ी को असमिया लोकगीतों का असली स्वाद मिला है। ओजापाली की अनूठी कला 'सुन सुन रे सुब दैबी प्रमाण', 'पारे परि ह'बा', 'तेजेरे कमलापति' आदि बोरगीतों

(भक्ति गीतों) को जूबीन गर्ग ने अपनी आवाज से जीवंत किया है। अगर जुबीन का गाया हुआ बोरगीत न सुनें, तो असमिया लोगों की सुबह नहीं होती। यदि जूबीन के बिहू गीत न सुनें, तो बोहाग (असमिया नववर्ष) में असमिया युवाओं की कमर नहीं थिरकती। उनके गीतों की विशेषता केवल सुर और शब्दों का तालमेल ही नहीं है, बल्कि वे हमारे सामाजिक जीवन का आईना भी हैं। जूबीन गर्ग के गीत न केवल श्रोताओं को मंत्रमुग्ध करते हैं, बल्कि असमिया समाज की गहराई में छिपी विभिन्न समस्याओं को भी उजागर करते हैं।

वास्तव में इस कलाकार की प्रतिभा केवल 'गायक' शब्द तक ही सीमित नहीं थी। वे एक साथ गीतकार, संगीतकार, वादक, संगीत निर्माता और अभिनेता भी हैं। डॉ. भवेन्द्र नाथ सैकिया द्वारा रचित 'का' फिल्म के गाने 'एजाक सपुन येन बरखुन' (कंठ: अनिन्दिता पाल) नाम के लोकप्रिय गीत के संगीतकार जूबीन गर्ग ही थे। इसके अलावा हीरक कंगण के 'गाने की आने', 'फूलें सजालो', 'एखाबे एखाबे' आदि जैसे कई लोकप्रिय गीतों को उन्होंने बेहतरीन धुनों में ढाला। जूबीन गर्ग की एक और महत्वपूर्ण विशेषता उनकी भाषा पर पकड़ और किसी भी भाषा का शुद्ध उच्चारण है। जूबीन गर्ग शायद उत्तर-पूर्व के एकमात्र ऐसे कलाकार हैं जिन्होंने लगभग सभी भाषाओं और उपभाषाओं में गाने गाए हैं। उससे भी बड़ी बात यह है कि इन गानों में उनके उच्चारण की शुद्धता और गाने की शैली ने उन्हें हर जगह बेहद लोकप्रिय बनाया है। जूबीन गर्ग ने एक बार कहा था- "मेरी कोई जाति नहीं है, मेरा कोई धर्म नहीं है, मेरा कोई भगवान नहीं है, मैं मुक्त हूँ! मैं कंचनजंघा हूँ!" हाँ, जूबीन गर्ग का व्यक्तित्व वास्तव में कंचनजंघा जैसा ही विशाल और ऊंचा था। जाति, धर्म, वर्ण के भेदभाव को भूलकर उन्होंने खुद को असमिया समाज की सेवा में समर्पित कर दिया है। इसीलिए आज असम के लोग उन्हें केवल एक गायक के रूप में नहीं देखते, बल्कि वे असमिया लोगों की धड़कन और एक सच्चे जननायक थे।

एक यूकेलिप्टस पेड़ की तरह ऊंचे, आकाश को छूने वाले, स्वाभिमानी और निडर स्वभाव के जूबीन गर्ग प्रकृति प्रेमी और देशभक्त हैं। अपनी मातृभूमि को गहराई से प्यार करने वाले इस कलाकार का व्यक्तित्व सबसे अलग और प्रभावशाली है। कई बार वे विवादों से भी घिरे, लेकिन उन्होंने कभी झूठ या किसी अन्य कारण का सहारा लेकर अपनी बात को छिपाने की कोशिश नहीं की। शायद इन्हीं गुणों की वजह से वे न केवल एक बेहतरीन गायक हैं, बल्कि एक व्यक्ति के रूप में भी बहुत लोकप्रिय और प्रिय हैं। एक साहित्यकार के रूप में उनकी रचनाएँ किसी एक निश्चित राजनीतिक आदर्शवाद से नहीं बंधी हैं, बल्कि वे एक व्यापक धरातल पर 'मानवतावाद' के अत्यंत करीब पहुँचती हैं, जो प्रेम, प्रकृति और इंसानी मूल्यों पर आधारित है।

संगीत के क्षेत्र में अद्वितीय योगदान

जूबीन गर्ग एक बहुमुखी कलाकार थे, जिन्होंने गायन के साथ-साथ संगीत निर्देशन और वाद्ययंत्रों में महारत हासिल की। उन्होंने केवल असमिया ही नहीं, बल्कि हिंदी, बंगाली, बोडो, नेपाली, भोजपुरी, ओड़िया, तमिल, तेलुगु, कन्नड़, मलयालम, मराठी और अंग्रेजी सहित 25 से अधिक भाषाओं और बोलियों में गाने गाए। वे कीबोर्ड, गिटार, तबला, मेंडोलिन, डगर और परकशन जैसे कई इंस्ट्रूमेंट्स खुद बजाते थे। उनका पहला सुपरहिट असमिया ऑडियो एल्बम 'अनामिका' वर्ष 1992 में प्रसारित हुआ था। इसके अलावा हिंदी व बंगाली एल्बम जैसे चांदनी रात (1995), चंदा (1996), यूहीं कभी (1998), स्पर्श, श्रद्धांजलि, मेरे लिये (2001), पोइपुर (2001), जिंदगी (2007), पाकिजा (2012) और सूफी इश्क (2017) जैसे अन्य सफल और चर्चित एल्बम प्रस्तुत किए गए थे। संगीत के अलावा उन्होंने फिल्म जगत में एक सफल निर्देशक और अभिनेता के रूप में भी पहचान बनाई। उन्होंने 'हिया दिया निआ', 'तुमी मोर माथों मोर', 'दाग', 'नायक', 'कन्यदान', 'मन जाय', 'मिशन

चाइना', 'कांचनजंघा', 'राजनीति' और 'योद्धा' जैसी कई ब्लॉकबस्टर फिल्मों का संगीत तैयार किया। उन्होंने 'तुमी मोर माथों मोर', 'मिशन चाइना' और 'कांचनजंघा' जैसी फिल्मों का खुद निर्देशन भी किया।

अभिनय

असमिया फिल्में: 'तुमी मोर माथों मोर', 'दीनबंधु', 'मन जाय', 'मिशन चाइना', 'कांचनजंघा', 'राजनीति' आदि।

हिंदी फिल्में: उन्होंने प्रसिद्ध बॉलीवुड फिल्मों जैसे 'फ़िज़ा' और 'काँटे' में भी अभिनय किया था।

संगीत और फिल्मों के अलावा जुबीन गर्ग लिखने के भी शौकीन थे। उनकी प्रकाशित प्रमुख पुस्तकें हैं 'शब्द अनुभूति' (काव्य संकलन), 'ज़ूबीनर पद्य'।

ज़ूबीन गर्ग का साहित्यिक योगदान

उन्होंने मुख्य रूप से गीतकार के रूप में प्रसिद्धि अर्जित करने के बावजूद, गीत-कविता के दायरे से बाहर भी कुछ ऐसी कविताओं की रचना की है जो केवल पठन (पढ़ने) के लिए हैं और जिन्हें गाने के उद्देश्य से नहीं लिखा गया है। एक कवि के रूप में उनकी पहचान को स्थापित करने वाली अब तक उनकी दो कविता संग्रह प्रकाशित हो चुकी हैं 'शब्द अनुभूति' उनका पहला कविता संग्रह है जो वर्ष 2009 में प्रकाशित हुआ था। 'ज़ूबीनर पद्य' यह उनकी दूसरा काव्यग्रंथ है जो वर्ष 2018 में प्रकाशित हुई और इसकी लोकप्रियता के कारण इसका दूसरा संस्करण वर्ष 2020 में निकाला गया। उनकी कविताएँ उनके गीतों का विस्तार मात्र नहीं हैं, बल्कि वे एक स्वतंत्र रचनाएँ हैं। उनके गीत और कविता लिखने के उद्देश्य, रचनाशैली तथा अभिव्यक्ति में स्पष्ट अंतर दिखाई देता है। उन्होंने अपनी कविताओं में उन बातों को प्रकट करने का प्रयास किया है जिन्हें गीतों में व्यक्त करना वे सुविधाजनक नहीं समझते थे। वे समकालीन कविता जगत की काव्य शैलियों और काव्य धाराओं के अंधानुकरण के पक्षधर नहीं थे। उनकी अधिकांश कविताएँ प्रतीकों और बिंबों के आडंबर से दूर, मुख्य रूप से सरल और सीधी भाषा में लिखी गई हैं। उनके लिए कविता का रूप (आंगिक) उतना महत्वपूर्ण नहीं था जितनी उसकी विषय-वस्तु थी। उनके लिए कविता कोई बौद्धिक कार्य या शब्दों को लेकर किया जाने वाला विलास (लक्ज़री) नहीं थी, बल्कि वह वास्तविक अर्थों में उनकी हृदयवृत्तियों और सामाजिक चेतना का सच्चा वाहक थी।

'मेटामॉर्फोसिस' इस लंबी कविता में उन्होंने समकालीन समाज के पतन और खोखलेपन को सरल भाषा में प्रस्तुत किया है। इसमें वक्ता की ईश्वर बनने की तीव्र इच्छा के माध्यम से समाज में खो रहे मानवीय मूल्यों, झूठ और कपट से मुक्ति पाने की तड़प दिखाई गई है, जहाँ वे भविष्य में एक सुंदर समाज, वसंत और हजारों बुद्धों के पुनरागमन की कल्पना करते हैं।

'बांदर होवार पथोत आमी': 24 नवंबर 2007 को गुवाहाटी के बेलतोला में आदिवासी आंदोलन के दौरान एक लड़की को निर्वस्त्र करने की शर्मनाक घटना पर तीखी प्रतिक्रिया देते हुए उन्होंने इस कविता की रचना की, जिसमें उन्होंने इस कृत्य की निंदा करते हुए इसे मनुष्य की आदिमता की ओर लौटने का सफर माना है।

'डाष्टबिन': इस प्रतीकात्मक कविता में उन्होंने पारंपरिक मध्यवर्गीय जीवनबोध और समाज की खोखली प्रथाओं को चुनौती देते हुए पूंजीवादी व्यवस्था से उपजी आर्थिक-सामाजिक असमानता और समाज की गंदगी पर चोट की है।

'हुंकार' 30 अक्टूबर 2008 को गुवाहाटी सहित असम के विभिन्न स्थानों पर हुए बम विस्फोटों के विरोध में उन्होंने इस कविता के जरिए आतंकवाद की धिनौनी राजनीति, हिंसा और अमानवीयता को स्पष्ट और कड़े शब्दों में चुनौती दी है।

'बिप्लव आजि अभिशाप' इस कविता में उन्होंने समाज के कुछ तथाकथित क्रांतिकारियों के विवेकहीन और हठधर्मी कार्यों के खिलाफ अपना स्पष्ट विरोध दर्ज किया है।

'फांगस' प्रतिष्ठित कवि हीरेन भट्टाचार्य (हीरुदा) के प्रति गहरे आदर को प्रकट करती इस कविता की शैली में प्रतीक, व्यंजना और काव्यात्मक संयम दिखाई देता है, जहाँ उन्होंने हीरुदा को एक पितृ-सत्ता के रूप में स्थान दिया है।

'तुम' यह भी कवि हीरेन भट्टाचार्य की महानता को समर्पित उनकी एक स्तुतिपरक कविता है। 'Water' इस कविता में उन्होंने 'पानी' का मानवीकरण किया है और आम इंसान के कठिन जीवन संघर्ष तथा अपनी विद्रोही सत्ता को अंग्रेजी की पंक्तियों- "Be water, Be shapeless" के साथ प्रकट किया है।

'भितरे बाहिरे' और 'बुहुम': इन कविताओं में उन्होंने प्रकृति के प्रति लगाव, मृत्यु चेतना, अस्तित्ववादी सोच और खुद को 'प्रकृति की संतान' के रूप में प्रस्तुत करते हुए जीवन की प्रवाहमयता की तुलना नदी की गति से की है। ज़ूबीन, भूपेन हजारिका के बाद नई सहस्राब्दी में असम में अगले सबसे शक्तिशाली सांस्कृतिक प्रतीक हैं। इस अध्ययन में बेतरतीब ढंग से चुने गए गीत उन चिंताओं से जुड़े हैं जो प्रशंसकों, संगीत समीक्षकों और आम जनता की पारिस्थितिक चेतना को आकर्षित करते हैं। वे गीत मनुष्यों और प्रकृति (अन्य जीवों सहित के बीच एक पुल का निर्माण करते हैं।

सहायक ग्रंथ सूची :

1. Sarma, A. (2026). Songs of Zubeen Garg: An eco-critical reading. International Journal of Language, Literature and Culture, 6(2). <https://doi.org/10.2>
2. Das, K. (2025). The musk-laden life and legacy of Zubeen Garg: A cultural analysis of mourning and artistic influence in Northeast India. International Research Journal of Humanities, Language and Literature, 12(10), 1–4.
3. Gogoi, S. (2026). Satyajit Gogoi's poems (A. Bormudoi, Trans.). Poetry without Fear, 4(4), 13.
4. Saikia, M. (Ed.). (2009). Zubeen Garg: Jibanar para ganalo. Chandra Prakash.
5. Baruah, S. K. (2026). Assam year book 2026 (Assamese ed.). Jyoti Prakashan.

असमिया लोक समाज में प्रचलित 'तुलनी विवाह'

स्नेहा ज्योति दास
स्नातक, तृतीय छमाही

“ अ रघुपति करिछो मिनति
जोरानाम गाबलै दियक अनुमति।
प्रथमे प्रणामो आइ सरस्वती॥”

भारत को विविधताओं का देश कहा जाता है। यहाँ विभिन्न भाषाओं, जातियों और धर्मों के लोग रहते हैं। प्रत्येक जाति के अपनी अलग-अलग संस्कृति, परंपराएँ, रीति-रिवाज अलग होते हैं। यही विविधता भारतीय संस्कृति को आकर्षक बनाती है।



भारत के उत्तर-पूर्वी क्षेत्र में स्थित असम भी अपनी सांस्कृतिक परंपराओं के लिए प्रसिद्ध है। असम की संस्कृति में अनेक ऐसी परंपराएँ हैं, जो पीढ़ी-दर-पीढ़ी चली आ रही हैं। तुलनी विवाह (तोलनि बिया) असमिया समाज में लड़की के एक महत्वपूर्ण शारीरिक और सामाजिक परिवर्तन से जुड़ी हुई परंपरा है। जब किसी लड़की को पहली बार मासिक धर्म आता है, तब उसके परिवार और समाज द्वारा विशेष प्रकार की रस्में और समारोह आयोजित किए जाते हैं। इस अवसर को कई स्थानों पर विवाह के समान रीति-रिवाजों के साथ मनाया जाता है। यह वास्तविक विवाह नहीं होता है, बल्कि एक प्रतीकात्मक और सांस्कृतिक समारोह होता है।

इस परंपरा का मुख्य उद्देश्य लड़की के जीवन में आए महत्वपूर्ण परिवर्तन को सामाजिक रूप से स्वीकार करना और उसके भविष्य के लिए शुभकामनाएँ देना है। तुलनी विवाह के इस रस्म से लड़की के बचपन से किशोरावस्था की ओर बढ़ने को स्वीकार किया जाता है।

हालाँकि तुलनी विवाह की परंपरा से जुड़ी अनेक रीति-रिवाज अलग-अलग क्षेत्र और समुदायों में अलग-अलग हो सकते हैं। कहीं इसे बड़े उत्सव के रूप में मनाया जाता है, तो कहीं यह केवल एक परिवार तक सीमित रहता है। आधुनिक समय में इस परंपरा में अनेक परिवर्तन आए हैं। अब बहुत से लोग इस परम्परा को वैज्ञानिक दृष्टिकोण, स्वास्थ्य और स्वच्छता की जागरूकता से जोड़ने का प्रयास कर रहे हैं।

तुलनी विवाह की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि :-

तुलनी विवाह की परंपरा अत्यंत पुरानी मानी जाती है। प्राचीन समय में लोगों के पास आधुनिक चिकित्सा विज्ञान और वैज्ञानिक जानकारी का अभाव था। इसलिए शरीर में होने वाले प्राकृतिक परिवर्तन को समझने के लिए समाज ने विभिन्न प्रकार की परंपराओं और रीति-रिवाजों का निर्माण किया।

तुलनी विवाह की प्रमुख रस्में :-

तुलनी विवाह की रस्में अलग-अलग क्षेत्रों में अलग-अलग हो सकती हैं। फिर भी कुछ सामान्य परंपराएँ कई स्थानों पर देखने को मिलती हैं। जब पहली बार मासिक धर्म आने के बाद लड़की को कुछ दिनों तक अलग स्थान पर रखा जाता था। यह परंपरा पुराने समय में धार्मिक और सामाजिक मान्यताओं से जुड़ी हुई थी। लड़की को

सात दिनों तक एक अलग कमरे में रखा जाता था। इस दौरान उसे खाने की चीजें उसी कमरे में दिया जाता था। सोने के लिए जमीन पर चटाई बिछाई जाती थी। चौथे दिन उस लड़की को पहली बार नहलाया जाता था। छठे दिन में समाज के कुछ महिलाओं को एकत्रित किया जाता है और कन्या के बालों में तेल लगाया जाता है। उसे “मुरत तेल दिया” कहा जाता है।

“तेल दिलों तेल दिलों,
सोनर जीयेक मूरत तेल दिलों।
सुख-शांति, दीघल आयु हौक,
जीवनटो शुभ हौका।”

कहीं-कहीं इसे विवाह के दिन सुबह के समय कन्या को हल्दी से नहलाया जाता है। इसे उत्सव के रूप में रखा जाता था और ऐसा माना जाता है कि इससे शरीर शुद्ध होता है। इसलिए इसे ‘शुद्धीकरण’ कहा जाता है।

“पानीरे गा धुवालों,
पवित्र करि तुलिलों।
सुखे-शांतिए जीवन भरक,
दीर्घायु आरु मंगल हौका।”

दोपहर के समय लोग मिलकर संगीत करते हैं और नदी या तालाब में जाकर पानी लाते हैं। इसे “पानी तुला” नियम कहा जाता है और उस पानी से कन्या को नहलाते हैं।

उसके बाद कन्या को समाज के बीच बैठाया जाता है, जहाँ सिर्फ महिलाओं होती हैं और उसको नए कपड़े-गहने पहनाए जाते हैं। उसे सिर्फ पारंपरिक असमिया वस्त्र पहनाए जाते हैं। नए कपड़े नए जीवन-चरण का प्रतीक माना जाता है।

“मेखेला चादर पिन्धालों,
लाज शोभारे सजालों।
आइ लक्ष्मीर कृपा हौक,
सुख समृद्धिरे जीवन भरका।”

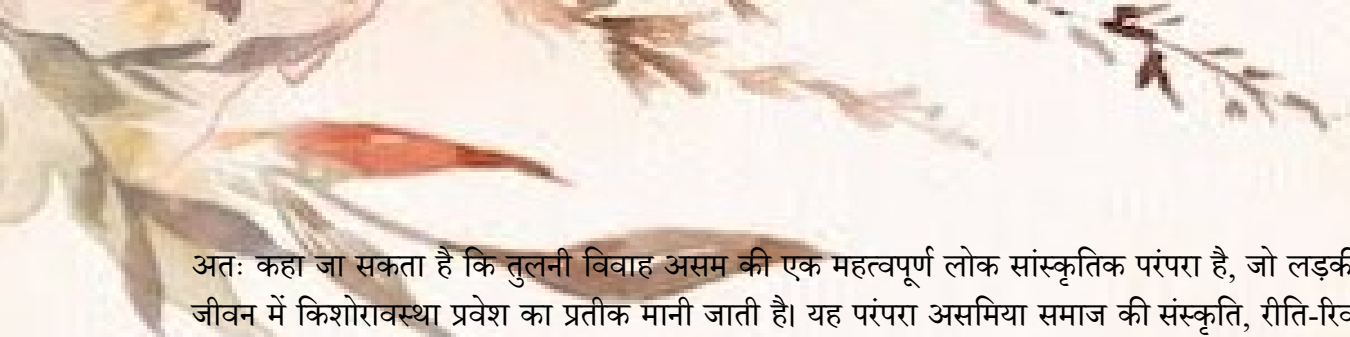
लड़की को विवाह की दुल्हन की तरह सजाया जाता है। परिवार के सभी लोग उसे गहने उपहार के रूप में देते हैं। इस अवसर पर रिश्तेदार और पड़ोसी परिवार के सभी लोग आते हैं। लड़की को आशीर्वाद देते हैं और उसके सुखी जीवन की कामना करते हैं।

असम के अलग-अलग क्षेत्रों में तुलनी विवाह की रस्में और नियम अलग-अलग हैं। जो इस प्रकार हैं-

अपार असम के कई ग्रामीण क्षेत्रों में लड़की को मासिक धर्म आने पर कुछ दिनों तक अलग रखने का नियम पाया जाता है। इस दौरान उसे आराम करने दिया जाता है और परिवार की महिलाएँ उसकी देखभाल करती हैं। फिर उसकी आशीर्वाद देने की रस्म भी मनाया जाता है।

मध्य असम में विवाह समारोह जैसे ही रूप में मनाते हैं। लड़की को अलग रखने का नियम किया जाता है। फिर लड़की को दुल्हन की तरह सजाया जाता है। रिश्तेदारों को बुलाया जाता है। कुछ स्थानों पर प्रतीकात्मक रूप से पेड़ या अन्य वस्तु से संबंधित विवाह रस्म निभाई जाती है।

निचले असम में परंपराओं में काफी विविधता देखने को मिलती है। अलग रखने का नियम सबका एक जैसा ही होता है। निचले असम में इस समारोह को परिवार के सदस्य मिलकर एक छोटा समारोह की तरह मनाते हैं। कहीं-कहीं गीत, भोजन और पारंपरिक रीति-रिवाज भी शामिल होते हैं। आज के शहरी और शिक्षित परिवारों में तुलनी विवाह के पुराने नियमों में काफी बदलाव आया है।



अतः कहा जा सकता है कि तुलनी विवाह असम की एक महत्वपूर्ण लोक सांस्कृतिक परंपरा है, जो लड़की के जीवन में किशोरावस्था प्रवेश का प्रतीक मानी जाती है। यह परंपरा असमिया समाज की संस्कृति, रीति-रिवाजों और लोकविश्वासों को दर्शाती है। समय के साथ-साथ परंपरा में अनेक परिवर्तन आए हैं और आज इसे वैज्ञानिक सोच, स्वास्थ्य जागरूकता तथा महिला सशक्तिकरण के साथ जोड़कर देखा जाना चाहिए।

मासिक धर्म एक प्राकृतिक जैविक प्रक्रिया है, इसलिए इसके प्रति किसी भी प्रकार का भेदभाव या अंधविश्वास उचित नहीं है। इस अवसर पर लड़कियों को सम्मान, सही स्वास्थ्य संबंधी जानकारी, शिक्षा और आत्मविश्वास प्रदान करना आवश्यक है। परंपरा और आधुनिकता के बीच संतुलन बनाकर ही तुलनी विवाह की सांस्कृतिक पहचान को सुरक्षित रखा जा सकता है। इस प्रकार, तुलनी विवाह केवल एक रस्म नहीं, बल्कि सामाजिक जागरूकता, सांस्कृतिक विरासत और महिला सम्मान का भी प्रतीक बन सकता है।

लाई हराओबा : मैतेई समुदाय का पारंपरिक लोकपर्व

पूजा देवी
स्नातक, तृतीय छमाही

लाई हराओबा उत्सव मणिपुर के मूल धर्म सनामही से जुड़ा हुआ है। प्राचीन समय में मणिपुर के लोग प्रकृति, जंगल, पहाड़, नदियों और वन देवताओं (उमंग लाई) की पूजा करते थे। मान्यता है कि सृष्टि की रचना के बाद देवताओं ने आनंदपूर्वक नृत्य किया। उसी दिव्य नृत्य और सृष्टि की कथा को याद करने के लिए 'लाई हराओबा' उत्सव की शुरुआत हुई। बाद में यह मणिपुर की सांस्कृतिक पहचान बन गई।

यह त्योहार ब्रह्मांड की रचना और पृथ्वी पर जीवन के विकास की कहानी को दर्शाता है। 'लाई' का अर्थ है- 'देवता' और 'हराओबा' का अर्थ है- 'प्रसन्नता या आनंद'। इसका सामूहिक अर्थ है 'देवताओं का आमोद-प्रमोद या आनंदोत्सव'। इस उत्सव में पारंपरिक नृत्य, संगीत, लोकगीत और धार्मिक अनुष्ठान आयोजित किए जाते हैं। लाई हराओबा चार प्रकार के होते हैं – (1) "कांग्लई हराओबा", (2) "मोइरांग हराओबा", (3) "काकचिंग हराओबा" एवं (4) "चकपा हराओबा"। उसी तरह इस उत्सव के चार प्रमुख नृत्य हैं – (1) "लाईबोउ जागौइ (नृत्य)", (2) "खंवा - योईबी जागौइ", (3) "माइबी जागौइ" एवं (4) "पंथोइबी जागौइ"।



लाई हराओबा में माइबी (महिला पुजारी) विशेष धार्मिक पोशाक पहनती है, जो पवित्रता का प्रतीक मानी जाती है। इसमें सामान्यतः शामिल होते हैं- सफेद फानेक-कमर से नीचे पहना जाने वाला पारंपरिक वस्त्र, सफेद इनाफी-कंधो और ऊपरी शरीर पर ओढ़ी जाने वाली चादर, सफेद पूरी बांह का ब्लाउज। कमर पर अतिरिक्त सफेद कपड़ा बाँधा जाता है। बालों में सफेद फूल (जैसे नचोम या समजिरई) लगाए जाते हैं। कई अनुष्ठानों में पारंपरिक आभूषण भी पहने जाते हैं। यह पोशाक माइबी की पवित्रता, देवी सेवा और धार्मिक भूमिका का प्रतीक मानी जाती है।

आमतौर पर माइबा (पुरुष पुजारी) सफेद धोती, सफेद पगड़ी या सिर पर सफेद कपड़ा, सफेद शॉल या चादर कंधे पर ओढ़े रखते हैं। कई अनुष्ठानों में पवित्र धागा और पारंपरिक आभूषण, हाथ में अनुष्ठान के अनुसार छड़ी, तलवार या अन्य धार्मिक सामग्री रख सकते हैं। माइबा का पोशाक भी मुख्य रूप से सफेद होती है, क्योंकि सफेद रंग पवित्रता और धार्मिक सेवा का प्रतीक माना जाता है।

लाई हराओबा के प्रत्येक दिन की शुरुआत में पेना (पारंपरिक वाद्ययंत्र) बजाकर देवता का आह्वान और स्वागत किया जाता है। उस समय 'याकेईरोई' गीत गाया जाता है। इसके बाद 'हायी हाया हामुचिंगबा', 'मलेम

लईरोई', 'लाईरोई आदि पारंपरिक धार्मिक गीत गाकर और वाद्ययंत्र बजाकर देवता की आराधना की जाती है। याकेई (देवता के स्वागत) की रस्म पूरी होने के बाद माईबी लाईमंग (देवस्थान) में बैठकर देवता का संदेश (लाइपाउ) सुनाती है। इसके बाद 'लाई लुक' की रस्म संपन्न की जाती है। फिर शाम के समय माईबी सभी लोगों के सामने देवता का पवित्र नृत्य (लाइगी जगौई) प्रस्तुत करती है। माईबी द्वारा यह नृत्य करने के बाद लाइबुंग (पूजा स्थल) में अन्य कोई व्यक्ति उसी प्रकार का पवित्र नृत्य नहीं करता। माईबी द्वारा पवित्र नृत्य समाप्त करने के बाद 'लईरोई हैजबा' की रस्म होती है। इस समय सभी लोग फिरोई (पारंपरिक सफेद वस्त्र) पहनते हैं। इसके बाद 'लाई लांगबा' अनुष्ठान किया जाता है। इस अनुष्ठान में सबसे पहले पुरुषों की पंक्ति के पहले व्यक्ति के सामने स्थित चुंगखुंग (पवित्र स्थान) पर 'लोई' अर्पित किया जाता है। फिर माईबा पेना बजाते हुए लाइबुंग (पूजा स्थल) के पुरुषों की पहली पंक्ति से शुरू करके क्रमशः सभी के सामने जाता है। इसके बाद महिलाओं के पंक्ति में स्थित लाईरम्मा के चुंगखुंग पर लाई अर्पित किया जाता है और माइबा वहीं से शुरू करके महिलाओं की पहली पंक्ति से क्रमशः सभी के सामने जाता है। इसके बाद माइबा फिरोई पहनकर कुछ लोगों के साथ लाइबुंग के प्रवेश द्वार की ओर जाकर हुई लाओं नामक धार्मिक अनुष्ठान संपन्न करता है। हई लाओबा अनुष्ठान समाप्त होने के बाद 'लाईबौ ला थाबा' की रस्म की जाती है।

इस रस्म में माईबी तीन बास (ला लातोन) लेकर उन्हें त्रिकोणाकार रूप में रखती है। उनके ऊपर सफेद कपड़ा



बिछाया जाता है और उसके ऊपर लांगथ्रेई (एक पवित्र पौधा लता) रखा जाता है। इसके बाद सबसे पहले थांगजिग पर्वत की दिशा की ओर मुख करके धीरे-धीरे और विधिपूर्वक इस अनुष्ठान को आगे बढ़ाया जाता है। इसके बाद क्रमशः मार-जिंग पर्वत की दिशा में, फिर चिंगखई की दिशा में, उसके बाद मोइरांग, फिर वांगवब्रेन उसके बाद कौब्रू पर्वत की दिशा में जाकर अनुष्ठान किया जाता है। अंत में लाईनुंग की दिशा की ओर मुख करके

अनुष्ठान पूरा किया जाता है। इसके बाद लाईबुंग (पूजा स्थल) के बीच में पहले से तैयार किए गए स्थान पर उसे स्थापित किया जाता है। इस पूरी प्रक्रिया को 'लाईबौ ला थाबा' कहा जाता है।

'लाईबौ ला' का अर्थ है देवता (लाई) और लाईबौ के बीच का पवित्र संबंध या मार्ग। इसी कारण इस अनुष्ठान को 'लाई लामलानबा' भी कहा जाता है। 'लाईबौ ला थाबा' का अनुष्ठान समाप्त होने के बाद पहले से तैयार किया गए पवित्र स्थान (यौगन परेंग) पर सभी लोग क्रम से खड़े होते हैं। इसके बाद दो पुरुष, जो देवता (लाई) को वहन करते हैं, एक पवित्र कपड़ा (मचेत) बिछाकर उसे फैलाते हैं और उसका मुख देवता की ओर करके अनुष्ठान पूरा करते हैं। फिर माइबी सबसे पहले अर्पित किए गए पवित्र फूलों (लेइसिंग) को एक-एक करके निकालती है और दो छोटी कपड़ों (खुदेई मचा) में एक-एक फूल रखकर उन्हें बाँध देती है।

इसके बाद इन दोनों पवित्र गठरियों को केवल लाइनिंगथोउ और लैरम्बी के देव-वहन करने वाले दोनों पुरुषों (लाई पूवा) के गले में पहनाया जाता है। इस पूरे अनुष्ठान को 'लाई हप्पा' कहा जाता है। उस समय माईबी (महिला

पुजारिन) देवता की ओर मुख करके 'लाईचिंग जगौई' प्रस्तुत करती है। इसके बाद पेना बादक हेराउ हैया गाता है। इस गीत के साथ मानव शरीर की रचना और जीवन की उत्पत्ति से संबंधित अनुष्ठानों का प्रदर्शन किया जाता है। इसके बाद गर्भ में शिशु के विकास की विभिन्न अवस्थाओं को नृत्य और हस्तमुद्राओं के माध्यम से दिखाया जाता है-जैसे गर्भधारण, भ्रूण का बनना, जन्म लेना और शिशु का बढ़ना। फिर यह दर्शाया जाता है कि बच्चा बड़ा होकर वस्त्र (फिजेट/फानेक) पहनने योग्य हो गया है। इसके बाद घर बनाने की प्रक्रिया का प्रदर्शन किया जाता है— घर की नींव तैयार करना, खंभे लगाना, दीवार और छत बनाना तथा पूरा घर तैयार करना।

“नुमिदांग वाईगी न मतमदा
हा नुमिदांग वाईगी न मतमदा
नुमितना चिंगयादा ठंगबदा
हो हो हा नुमितना चिंगयादा ठंगबदा
हराओरे हराओरे
सिबुना थोइना हराओबा”

फिर देवता को घर अर्पित करने की पूरी प्रक्रिया नृत्य और हस्तमुद्राओं के माध्यम से दिखाई जाती है। इसके बाद 'नोंगपोक निंगथोउ थौबई जगौई' प्रस्तुत किया जाता है। पाउसा एसेई गाया जाता है। पाउसा एसेई के बाद खेती-बाड़ी और दैनिक जीवन के कार्यों का प्रदर्शन किया जाता है, जैसे- आग जलाना, खेत साफ करना, बीज बोना, धान लगाना, धान काटना, धान से चावल निकालना, कपड़ा बुनना तथा देवता को वस्त्र अर्पित करना। इन सभी कार्यों का नृत्य, हस्तमुद्राओं (खुटेक) और शारीरिक मुद्राओं (सायेक) के माध्यम से प्रस्तुत किया जाता है। प्रत्येक दिन लाईबौ अनुष्ठान समाप्त होने के बाद 'लोंग खोनबा' किया जाता है। 'लोंग खोनबा' का उद्देश्य देवताओं (लाई) की पवित्र आत्मा की श्रद्धापूर्वक लाइनुंग (पवित्र स्थान) तक पहुँचाकर उनसे प्रार्थना करना है कि वे प्रसन्न होकर पुनः आशीर्वाद प्रदान करें। इसके बाद पेना बजाया जाता है और 'अनोयमेल' गीत गाया जाता है, फिर माईबी मानव शरीर की रचना और सृष्टि से संबंधित 'लाईबो जगौई' के विभिन्न भागों का नृत्य प्रस्तुत करती है। लाइबौ (नृत्य) की सभी हस्तमुद्राएँ (खुटेक) पूरी होने के बाद 'युम सारोल' 'पंथोईबी जगौई' और 'पाउसा एसेई' प्रस्तुत किए जाते हैं। इसके बाद 'पाम मानबा जगौई' किया जाता है। अंत में 'लोंग खोनबा' के अंतर्गत फिबुन हाबी, चुंगखुंग मेटपा, पा चुबा, चुंगखुंग लितवा तथा लैरेन मथेक चुप्ता आदि धार्मिक अनुष्ठानों की क्रमशः संपन्न किया जाता है। इसके साथ 'वाकोलो' (धार्मिक गीत/उद्घोष) गाया जाता है।

“वाकोलो वाकोलो
वाकोल न थाबा लीफासे
वाकोल लीफासे
चिंग द ताबा वाकोल न
तमडा तागे महाईर
तमदा ताबा वाकोल न
चिंग द तागे महाईर ”

बांग्ला लोककथा

जमुना दास

स्नातकोत्तर, तृतीय छमाही

भारतीय लोकसाहित्य विश्व की सबसे समृद्ध सांस्कृतिक परंपराओं में से एक है। भारत के प्रत्येक क्षेत्र की अपनी विशिष्ट लोककथाएँ हैं, जो वहाँ के जनजीवन, रीति-रिवाज, लोकविश्वास और नैतिक आदर्शों को अभिव्यक्त करती हैं। बंगाल की लोककथाएँ अपनी कल्पनाशीलता, रोचक घटनाओं, मानवीय संवेदनाओं तथा जीवन-मूल्यों के कारण विशेष स्थान रखती हैं। इन कथाओं में जादुई संसार, प्रकृति, प्रेम, संघर्ष, बुद्धिमत्ता और सत्य की विजय का सुंदर समन्वय दिखाई देता है।

लोक कथा को अंग्रेजी में 'Folk tale' कहा जाता है। लोक कथा का अर्थ होता है- लोक में प्रचलित कथाएँ जो प्राचीन काल से पीढ़ी दर पीढ़ी मौखिक रूप से प्राप्त होती हैं। पहले गाँवों में परिवार के बड़े-बुजुर्ग, विशेषकर दादा-दादी और नाना-नानी, बच्चों को रात में लोककथाएँ सुनाया करते थे। इस प्रकार कहानी सुनाने की परंपरा के माध्यम से लोककथाओं की विरासत निरंतर बनी रही। इन कथाओं के माध्यम से जीवन मूल्यों, विश्वास और कल्पनाशीलता का परिचय मिलता है।

बंगला लोक कथा को रूप कथा भी कहा जाता है। इनमें कल्पना और अद्भुत घटनाओं का विशेष महत्व होता है। कुछ बांग्ला लोक कथाएँ इस प्रकार से हैं-

सात भाई चम्पा

एक राजा की सात रानियाँ थीं। बड़ी रानियाँ घमंडी और ईर्ष्यालु थीं, जबकि छोटी रानी बहुत सरल और शांत स्वभाव की थी। राजा उसे सबसे अधिक प्रेम करते थे। लंबे समय तक संतान न होने के बाद छोटी रानी गर्भवती हुई। राजा ने खुशी में पूरे राज्य में उत्सव मनाया। छोटी रानी की कमरे में एक सोने की जंजीर बाँधकर रानियों को कहा कि संतान होने पर उसे हिला देना। बड़ी रानियों ने ईर्ष्या में कई बार झूठी सूचना देने के लिए जंजीर हिलाई। बाद में छोटी रानी ने सात पुत्रों और एक पुत्री को जन्म दिया। यह देखकर बड़ी रानियों ने ईर्ष्या में उन बच्चों को मिट्टी के बर्तनों में बंद करके बगीचे में गाड़ दिया और राजा को मँढक तथा चूहों के बच्चे दिखा दिए। राजा ने धोखे में आकर छोटी रानी को महल से निकाल दिया। वह दासी बनकर जंगल में रहने लगी।

कुछ समय बाद जिस स्थान पर बच्चों को गाड़ा गया था, वहाँ सात चंपा और एक पारुल का फूल खिले। एक बार महल में पूजा के लिए सारे फूल खत्म हो चुके थे तब राजा ने अपने दास को बोला कि बाकी जो सात आठ फूल हैं उनको तोड़कर पूजा में लगाया जाए। जब दास उन्हें तोड़ने जाता, तो फूल कहते हैं कि पहले राजा को बुलाया जाए और फिर रानियों को बुलाया जाए। सब एक-एक करके आए अंत में छोटी रानी को भी जंगल से लाया गया, जब छोटी रानी वहाँ पहुँची, तो फूलों से सात राजकुमार और एक राजकुमारी निकलकर अपनी माँ की गोद में आ गए।

और सारी सच्चाई राजा को पता चला। यह सच्चाई जानकर राजा बहुत दुखी हुए। उन्होंने बड़ी रानियों को दंड दिया और काटके फेक देने का निर्देश दिया और छोटी रानी तथा उसके बच्चों को सम्मान के साथ महल वापस ले आए। पूरे राज्य में फिर से सुख और आनंद लौट आया।

सोनार काठी रूपार काठी

एक राजकुमार, एक मंत्री का पुत्र, एक सौदागर का पुत्र और एक कोतवाल का पुत्र- ये चारों अत्यंत घनिष्ठ मित्र थे। वे कोई काम नहीं करते थे, केवल घोड़ों पर घूमते रहते थे। उनके पिता उनसे बहुत परेशान थे और उन्होंने चारों के माताओं को आदेश दिया कि जब वे भोजन माँगें तो उन्हें राख दी जाए। तीन मित्रों को सचमुच राख दी गई, लेकिन राजकुमार की माँ अपने बेटे को थाली में थोड़ी-सी राख दी। राजकुमार ने कारण पूछा तो माँ ने सारी बात बता दी। यह सुनकर चारों मित्रों ने देश छोड़ने का निश्चय किया। चारों अलग-अलग दिशाओं में चले और एक निश्चित स्थान पर फिर मिलने की बात तय की। दिनभर घूमने के बाद वे एक घने जंगल में पहुँचे। वहाँ उन्हें हिरण का सिर मिला। चारों भोजन की तैयारी करने लगे। सबसे पहले कोतवाल का पुत्र हिरण का सिर काटने गया, तभी उसके अंदर से एक भयानक राक्षसी निकली और उसे तथा उसके घोड़े को खा गई। इसी तरह उसने सौदागर के पुत्र और मंत्री के पुत्र को भी खा लिया। लेकिन राजपूत्र ने मंत्री के पुत्र को खाते समय देख लिया फिर वह भाग निकला। राक्षसी उसका पीछा करती रही। राजकुमार एक राज्य से दूसरे राज्य भागते रहे। फिर भी राक्षसी उसका पीछा करती रही। अंत में राजकुमार थक हारकर एक आम के पेड़ से रक्षा की प्रार्थना की और बोला कि अगर तुम सच में वृक्ष हो तो मुझे राक्षसी से रक्षा करो। पेड़ ने सुन लिया और दो भागों में खुल गया और राजकुमार उसके अंदर छिप गए। राक्षसी ने उस पेड़ को बहुत समझाया और धमकाया भी, लेकिन पेड़ नहीं खुला। फिर राक्षसी सुंदर स्त्री का रूप धारण करके पेड़ के नीचे रोने लगी। उसी समय उस देश के राजा जंगल में शिकार करने आए थे। राजा उस राक्षसी के रोने की आवाज सुनकर उसके पास गए और राक्षसी के सुंदर रूप को देखकर मुग्ध हो गए और अपने महल में ले गए तथा उससे विवाह कर लिया।

रानी बनकर राक्षसी फिर सोचने लगी कि उस राजकुमार को कैसे खाया जाए। फिर राक्षसी ने बीमारी का बहाना बनाया और सोने की काठी, चांदी की काठी को अपने बिस्तर में रखकर उस पर सो गई और बीमार होने का नाटक करने लगी। राजा के पूछने पर राक्षसी ने बोला कि मेरी हड्डियां कमजोर हो गई हैं और टूटने की भी आवाज आ रही है। फिर राजा ने वैद्य जी को बुलाकर दवा करवाया, लेकिन फिर भी राक्षसी ठीक नहीं हो रही थी। फिर राक्षसी ने राजा से कहा कि जंगल के उसी आम के पेड़ की लकड़ी का धुआँ मिलने से उसकी बीमारी ठीक होगी। फिर राजा ने पेड़ कटवाने का आदेश दिया। जैसे ही, राजा के सैनिक जंगल पर पेड़ काटने को गए तो राजकुमार ने आम के पेड़ से अपनी रक्षा के लिए प्रार्थना की। पेड़ ने उसे एक आम के फल में छिपाकर तालाब में गिरा दिया। एक मछली ने उस आम को निगल लिया। सैनिक ने उसे आम के पेड़ के लकड़ियों को महल में ले जाकर रानी रूपी राक्षसी के बिस्तर के चारों तरफ धुंआ दिया। लेकिन राक्षसी को सब पता चल गया, तो राक्षसी ने राजा से फिर बोला कि इससे भी ठीक नहीं हो रहा है। तालाब में जो एक मछली है उसके पेट में एक आम है उसको खाने से ठीक हो जाऊंगी। राजा ने फिर तालाब में उस मछली को पकड़ने के लिए मछुआरों को भेज दिया। यह देखकर

राजकुमार मछली से प्रार्थना करने लगे कि मुझे किसी शंख में भेज दो। राजकुमार के कहने पर मछली ने राजकुमार को एक शंख में भेज दिया। जब मछली को पकड़कर मछुआरों ने देखा की मछली के पेट में कोई आम नहीं है, तो राजकुमार के आदेश से उस मछली को फिर से छोड़ दिया गया।

शियाल पंडित (चालाक पंडित)

एक लोमड़ी थी, जिसका नाम शियाल पंडित था। उसने शंटीर वन में एक पाठशाला खोली। वहां पर जंगल के सभी पशुओं के बच्चे पढ़ते थे। एकदिन मगरमच्छ ने अपने सात बच्चों को भी शियाल पंडित की पाठशाला में पढ़ने के लिए भेज दिया। शियाल पंडित ने मगरमच्छ को विश्वास दिलाया कि उसके बच्चे कुछ ही दिनों में बहुत विद्वान हो जाएंगे। मगरमच्छ उसकी बात से बहुत खुश हुआ और अपने घर चला गया। लेकिन शियाल पंडित बहुत चालाक था। वह रोज मगरमच्छ के एक बच्चे को खा जाता था। इसी तरह छह दिन बीत गए। छठे दिन मगरमच्छ अपने बच्चों की पढ़ाई देखने पाठशाला पहुँचा। मगरमच्छ ने अपने बच्चों को दिखाने के लिए बोला तो पंडित ने एक ही बच्चे को बार-बार दिखाकर उसे विश्वास दिला दिया और उसे पाठशाला से भेज दिया। अगले दिन बचे हुए आखिरी बच्चे को भी खा गया। इसके बाद वह अपनी पाठशाला बंद करके वहाँ से भाग गया।

जब मगरमच्छ को सच्चाई का पता चला तो वह क्रोधित हो गया। उसने शियाल पंडित को पकड़ने का निश्चय किया और उसकी तलाश करने लगा। एक दिन मगरमच्छ ने नहर में छिपकर शियाल पंडित को पकड़ लिया। शियाल पंडित ने अपनी बुद्धि से उसे धोखा दिया और अपने पैर को पेड़ की टहनी बताकर मगरमच्छ से खुद को छुड़ा लिया। वह वहाँ से भाग गया।

कुछ दिनों बाद मगरमच्छ ने एक और चाल चली। वह नहर के किनारे मरा हुआ बनकर लेट गया। शियाल पंडित वहाँ पहुँचा तो उसे मगरमच्छ पर शक हुआ। उसने मगरमच्छ के मरने के लक्षणों की बात की कि अगर वह मर चुका है तो उसकी पूँछ हिलेगी। यह सुनकर मगरमच्छ ने अपनी पूँछ हिला दी। शियाल पंडित समझ गया कि वह जीवित है। उसी समय वहाँ से भाग निकला।

निष्कर्ष :-

लोककथाएँ बंगाल के लोकजीवन, संस्कृति, परंपरा और लोकविश्वासों की समृद्ध अभिव्यक्ति हैं। सात भाई चंपा, सोनार काठी रूपार काठी तथा शियाल पंडित जैसी लोककथाएँ बंगाल की लोकपरंपरा और जनजीवन की विविधता को प्रस्तुत करती हैं। इन कथाओं में राजा-रानी, राजकुमार-राजकुमारी, पशु-पक्षी, राक्षस तथा सामान्य लोकजीवन से जुड़े पात्रों के माध्यम से प्रेम, त्याग, साहस, बुद्धिमत्ता, संघर्ष और नैतिकता जैसे विषयों को अभिव्यक्त किया गया है।

इन लोककथाओं में प्रकृति और मनुष्य के बीच गहरे संबंध को भी देखा जा सकता है। पेड़-पौधे, पशु-पक्षी, नदियाँ, जंगल आदि केवल कथाओं की पृष्ठभूमि नहीं हैं, बल्कि कथा के महत्वपूर्ण अंग के रूप में उपस्थित होते हैं। इससे जनसामान्य के प्रकृति के प्रति प्रेम और उसके साथ गहरे संबंध का पता चलता है। साथ ही, इन कथाओं में अच्छाई और बुराई के संघर्ष तथा अच्छाई की विजय के माध्यम से नैतिक शिक्षा भी प्रदान की जाती है।

शुभ दिन

मूल: अरूपा पटंगिया कलिता , अनुवादक: डॉ. प्रांजल कुमार नाथ

सहायक प्राध्यापक , हिन्दी विभाग

27 नवंबर, 2011 । हिंदू शास्त्रों के अनुसार आज का दिन विशेष महत्व रखता है। विवाह के लिए इसे अत्यंत शुभ माना गया है। ग्रहों की अनुकूल स्थिति को ध्यान में रखते हुए ज्योतिषविदों ने कहा है कि आज का दिन अति मंगलकारी है। देश की राजधानी आज कुछ अधिक ही व्यस्त दिखाई दे रही है। कागज़ों और अखबारों में बड़े-बड़े अक्षरों में लिखा गया है कि इस शुभ अवसर पर राजधानी शहर में लगभग पैंतीस हजार शादियाँ संपन्न होंगी। पूरा शहर मानो किसी रंगीन सभा की तरह जगमगा उठा है। जिधर नज़र डालिए, उधर ही टुकड़ों-टुकड़ों में सभागृह सजे हुए प्रतीत होते हैं। शहर के एक करोड़ निवासी और पचास लाख वाहन आज जैसे चंचल हो उठे हैं। राजधानी आज एक वधू की भाँति सजी-सँवरी, अत्यंत सुंदर प्रतीत हो रही है। जहाँ भी दृष्टि जाती है, वहाँ उसी वधू की उपस्थिति का आभास होता है।

उस ओर एक विवाह-स्थल है। द्वार के सामने दो जलपरियों की मूर्तियाँ स्थापित हैं- आधी मछली और आधी मानव। जलपरियाँ अपने दोनों हाथों में दो-दो कमल के फूल धारण किए हुए हैं। उनके चारों ओर फूलों से सजे दो रंगीन फव्वारे फूट रहे हैं। विवाह-स्थल के भीतर प्रवेश करते ही नीले रंग की कालीन दृष्टिगोचर होती है। ऐसा प्रतीत होता है मानो यह कोई विवाह-स्थल नहीं, बल्कि जलपरियों का देश हो। आँगन के मध्य लाल रंग की एक विशाल सफ़ेद मछली स्थापित है, जिसकी पूँछ इधर-उधर गतिमान दिखाई देती है और जिसके मुख से रंग-बिरंगे पानी के फव्वारे निकल रहे हैं। विविध प्रकार के व्यंजनों से सजी मेज़ एक नाव के समान प्रतीत होती है। लगता है मानो ये स्वर्गीय पकवान समुद्र-मंथन से ही लाए गए हों। किसी विशेष विषय को केंद्र में रखकर मेज़ और स्थल को सजाना वर्तमान समय का एक प्रचलित फैशन बन गया है। 'थीम-पार्टी' को प्रतिष्ठित और विशेष प्रशिक्षण प्राप्त व्यक्तियों द्वारा सजाया जाता है। जन्मदिन की पार्टियों की भी अलग-अलग थीम होती हैं- जैसे 'फूलकुंवरी के साधु'। ऊँची दीवारों से घिरे इस परिसर में कोमल घासों के बीच एक-एक कहानी मानो प्राण पा जाती है और 'फूलकुंवरी की कथा' सजीव हो उठती है। चारों ओर फूलों के बीच छोटे-छोटे फूलकुंवर और फूलकुंवरियाँ दिखाई देते हैं। सिंदूला, उसका कढ़ू-बगीचा और ऊँची एड़ी का वह जूता, जो हड़बड़ी में पीछे छूट गया था, सब कुछ जैसे जीवंत हो उठता है। इस प्रकार बड़े लोगों के बच्चे दंतकथाओं की रंगीन दुनिया में अपने जन्मदिन की पार्टियाँ मनाते हैं। यह फैशन अब धीरे-धीरे अन्य समारोहों में भी फैल गया है, विशेषकर विवाह-स्थलों में। यदि एक स्थल की थीम फूल है, तो दूसरे की थीम समुद्र। लोग इतने भारी-भरकम बिलों का भुगतान करते हैं कि उन्हें सुनकर आँखें विस्मय से फैल जाती हैं। इन दिनों ग्राहकों के सपनों को आकार देने वाले कार्यकर्ताओं को प्रशिक्षित करने के लिए संस्थान हर जगह खुलते जा रहे हैं। अब बस एक फ़ोन कॉल की ही ज़रूरत होती है।

आज रात पार्क के पास की गली तेज़ संगीत से गूँज रही थी। सुनहरा जोड़ा पहने दूल्हा सफ़ेद घोड़े पर सवार था। उसका चेहरा छोटी-छोटी मालाओं की लड़ियों से आच्छादित था। उसके पीछे एक युवक चल रहा था, जिसके

हाथ में सिंदूर से पुती हुई कृपाण थी या शायद होली के रंगों से किसी तरह लाल की गई थी। जैसे-जैसे संगीत तेज होता जा रहा था, वैसे-वैसे वह लाल रंग की कृपाण आगे-पीछे लहराती जा रही थी। ऐसा प्रतीत होता था मानो दूल्हा विवाह के लिए नहीं, बल्कि शत्रुओं को परास्त करने के किसी अभियान पर निकला हो। वह किसी गौरवमय युद्ध-यात्रा पर अग्रसर राजकुमार जैसा लग रहा था, और कहीं किसी सुनसान द्वीप पर कोई राजकुमारी उसके आगमन की प्रतीक्षा कर रही हो। बैंड पार्टी के सदस्य लाल और सुनहरे रंग की शेरवानी-कुर्ता पहने हुए थे। उन्होंने संगीत को उन्मादपूर्ण गति प्रदान कर दी थी। उनकी टोपियाँ भी सुनहरी थीं और कंधों पर सुनहरी झालरें झूल रही थीं। तीखी रोशनी में ढोल और शहनाइयों के साथ वे लोग मुगल सम्राट के दरबारी संगीतकारों के समूह जैसे प्रतीत हो रहे थे, यद्यपि वे पूर्णतः वर्तमान युग के ही प्रतिनिधि थे। इस युग में उनका संगीत भी एक प्रकार का वाणिज्य बन चुका है। प्लेकार्ड पर हिंदी और अंग्रेजी शब्दों में लिखा था—‘हर-नन्द धलवाला प्राइवेट लिमिटेड’। साथ ही मोबाइल नंबर, लैंडलाइन और ईमेल पता भी अंकित था-har-nandadhalwala@yahoo.com आदि।

इस गली को छोड़कर दूसरी गली से बाराती निकल रहे थे। वहाँ भी वही संगीत, वही प्लेकार्ड-‘गोपीचंद घोड़ीवाला प्राइवेट लिमिटेड’, साथ में मोबाइल नंबर, ईमेल आदि अंकित थे। अंतर बस इतना ही था कि पहली गली से बारात सफेद घोड़े पर सवार दूल्हे के साथ निकली थी, जबकि इस म्यूजिकल बैंड-जिसका नाम ‘गोपीचंद घोड़ीवाला’ था; में घोड़े का अभाव था। यहाँ दूल्हा फूलों से सजी एक मर्सिडीज में तेज संगीत के साथ बाहर निकल रहा था। लाल रंग की उस गाड़ी पर इतने अधिक फूल सजे हुए थे कि गाड़ी का मूल स्वरूप ही दृष्टिगोचर नहीं हो रहा था।

उधर एक घोड़े की बग्गी पर सवार वर-वधू आगे बढ़ रहे हैं। बग्गी फूलों से पूरी तरह सजी हुई है। दो घरों के बीच एक इंच मिट्टी तक न मिलने वाले इस शहर में इतनी अधिक मात्रा में फूल—यह सचमुच आश्चर्यजनक है। वास्तव में, शहर को केंद्र मानकर ही एक विशाल फूलों का बाज़ार फैल गया था। आज उस बाज़ार में असाधारण भीड़ देखने को मिल रही है। एक साथ इतने अधिक फूलों के ऑर्डर हैं कि आज हर फूल का भाव आसमान छू रहा है। दाम का अब कोई अर्थ नहीं रह गया है, आज केवल माल से मतलब है, क्योंकि फूलों के बिना ये शादियाँ फीकी पड़ जाएँगी। और भला फीकी शादी किसे अच्छी लगती है? सभी की यही सोच है कि जीवन में विवाह केवल एक ही बार होता है। देश के सबसे अधिक जनसंख्या वाले इस महानगर के लोगों के पास मानो खर्च करने के लिए पर्याप्त धन उपलब्ध था।

चारों ओर धन की भरमार है, आँखों को चकाचौंध कर देने वाली चमक। तभी एक बार घोड़े की पीठ से पैसा उड़ता हुआ दिखाई देता है। हवा में पाँच सौ और हजार के नोट उड़ रहे हैं; उनके साथ-साथ अहंकार भी उड़ रहे हैं। वर के गले में भी हजार-हजार रुपयों से बनी माला झूल रही है। उड़ते हुए पैसों की तितलियों के बीच एक महिला वर के यात्रा-पथ में नृत्य कर रही है। नृत्य की लय के साथ उसके मेहंदी-रचे हाथ ऊपर उठते हैं, जिनमें पहने गए चमकदार हीरे और मोतियों के कंगन रोशनी में झिलमिलाते हैं। यदि आज चंगेज खाँ या ग़ज़नी का सुल्तान महमूद इतिहास से जीवित होकर आ जाएँ, तो संभव है कि ये लोग पूरी शादी के दौरान तलवारें चला दें और एक ही झटके में सब कुछ फिर से लूट ले जाएँ।

सुल्तान महमूद और चंगेज़ खाँ अब इतिहास बन चुके हैं; लोगों के मन से उनका भय भी समाप्त हो गया है। इसी कारण मानो लोगों ने पूरे शहर को ही विवाह-स्थल में बदल दिया है। आज न तो कोई विवाह-स्थल खाली है और न ही किसी होटल का कमरा। साज-सज्जा और रोशनी की चकाचौंध से पूरा शहर दिन की तरह जगमगा रहा है। दूर एक भव्य और विलासी होटल दिखाई देता है। वैसे तो वह सदैव ही रोशनी से आलोकित रहता है, किंतु आज ऐसा प्रतीत होता है मानो उस पर रोशनी की मालाएँ पिरो दी गई हों। होटल की पार्किंग में गाड़ियों की भारी भीड़ लगी हुई है। रास्तों पर जैसे-तैसे एक के पीछे एक विलासी गाड़ियाँ खड़ी हैं। जिधर भी दृष्टि जाती है, उधर केवल गाड़ियों की अंतहीन कतारें ही नज़र आती हैं।

ऐसा प्रतीत हो रहा था मानो दुनिया की सारी खुशियाँ इसी शहर में सिमट आई हों। स्वादिष्ट व्यंजनों की सुगंध पूरी हवा में फैल गई थी। इसी सुगंध की आड़ में एक विशाल बाज़ार पूरी तरह सक्रिय हो उठा था। सुख और आनंद से पूरा शहर झूम रहा था। उत्सव के इस अवसर पर शहर के पेड़ दबकर जैसे अदृश्य हो गए थे। विशालकाय सड़कें भी मानो नदियों में बदलकर उसी आनंद की धारा में समा गई थीं। खुशियों के इस मौसम में पैंतीस हजार शादियों को केंद्र में रखकर पूरा शहर भीषण रूप से व्यस्त हो गया था। चारों ओर निरंतर अनेक घटनाएँ घटित हो रही थीं।

गाड़ियों को सँभालते-सँभालते ट्रैफ़िक पुलिस का दिमाग चकरा गया था। पुलिस विभाग ने आज सभी कर्मचारियों को इसी कार्य में पूरी तरह व्यस्त कर रखा था। अतिरिक्त जवानों की भी तैनाती की गई थी। शहर के फ़ार्म-हाउसों में आयोजित होने वाली शादियाँ पुलिस के लिए और अधिक कठिनाइयाँ उत्पन्न कर रही थीं। विवाह-भवनो अथवा होटलों में कम-से-कम गाड़ी-पार्किंग की कुछ सुविधाएँ तो उपलब्ध रहती हैं। और फिर वे सुविधा देंगे भी क्यों न एक रात के लिए लाखों रुपये जो वसूलते हैं। लेकिन फ़ार्म-हाउसों में ऐसी सुविधाएँ प्रायः नहीं होतीं और गाड़ियों को रास्ते में ही खड़ा करना पड़ता है। लंबी, विशाल और महंगी गाड़ियों की पार्किंग में कितनी उलझनें पैदा हो जाती हैं, इसका वर्णन करना ही व्यर्थ है। इन्हीं समस्याओं के पीछे पुलिस लगातार दौड़ती रहती है। पुलिस द्वारा पहले ही नोटिस जारी कर दिए गए थे कि निजी फ़ार्म-हाउसों में होने वाली शादियों के दौरान गाड़ियों को सड़कों पर पार्क नहीं किया जाएगा। मगर गाड़ियाँ पार्क भी की जाएँ तो कहाँ? इस विशाल शहर में बिना गाड़ी के शादी में पहुँचा ही कैसे जाए? यही तो सबसे बड़ी मुश्किल है। पुलिस ने रात ग्यारह बजे पार्टी समाप्त करने का आदेश भी जारी किया है। पर क्या यह वास्तव में संभव है? वधू को अग्नि-साक्षी में लाने के लिए बजने वाला वह करुण सुर तो मध्यरात्रि में ही अधिक अर्थपूर्ण और मनोहर लगता है। फिर क्या पुलिस के आदेश पर ठीक ग्यारह बजे ही विवाह-संस्कार संपन्न किया जा सकता है? समस्याओं की यहाँ कोई कमी नहीं है, और घर की बात तो कहें ही क्या!

वह जो मन मोह लेने वाला लाल-सफेद रंग का चार मंजिला दिखाई दे रहा है, ठीक गुलमोहर के नीचे उसका नाम है 'अमरजीत मंजिल'। उस घर में तीन पीढ़ियाँ एक साथ रहती हैं। सबसे ऊपर की मंजिल पर पोता और उसकी पत्नी रहते हैं; दोनों ही एक बड़ी कंपनी में उच्च पदों पर कार्यरत हैं। बीच की मंजिल पर उनके माता-पिता का निवास है। शहर के उस पार उनका कपड़ों का एक मिल है। माँ घर-गृहस्थी सँभालती हैं। सबसे नीचे वृद्ध परमिंदर और वृद्धा अमरजीत रहते हैं। हालाँकि यह वृद्ध दंपती हमेशा यहीं नहीं रहते; वे कभी-कभी अपने गाँव के घर भी

चले जाते हैं, जहाँ उनकी खेती-बाड़ी है। यह एक अत्यंत समृद्ध परिवार है। उसी घर में अब विवाह का आयोजन होने वाला है। वृद्ध दंपती की पोती चुरिंदर की शादी है। वर विदेश में रहता है, अर्थात् लंदन में; जहाँ उनकी दो पीढ़ियों का व्यवसाय स्थापित है। योजना यह थी कि विवाह बड़े ही धूमधाम से, लाखों रुपये खर्च कर किसी फाइव-स्टार होटल में किया जाए। किंतु न तो कोई विवाह-भवन उपलब्ध हो सका और न ही एक रात के लिए कोई गेस्ट हाउस ही मिला। विवाह की तिथि भी अत्यंत जल्दबाजी में तय हुई थी। तीन-चार महीनों के भीतर ही सभी स्थान पहले से बुक हो चुके थे। अंततः घर के पास स्थित पार्क में विशेष अनुमति लेकर विवाह-समारोह आयोजित करने का निर्णय लिया गया।

हाँ, लेकिन अशोक खोसला के परिवार ने अपनी इच्छा के अनुसार एक स्टार होटल में ही अपने बेटे की शादी संपन्न कर ली। उनके परिवार में भी पैसों की कोई कमी नहीं थी। अशोक खोसला स्वयं सेना के एक वरिष्ठ अधिकारी रह चुके थे। उनके चारों बेटे प्रतिष्ठित पदों पर स्थापित हो चुके थे। वैश्वीकरण के दौर में उपलब्ध अवसरों और सुविधाओं का लाभ कैसे उठाया जाता है यह बात वे भली-भाँति जानते थे। पुत्रों की तनख्वाह और सुविधाओं को देखकर अशोक खोसला स्वयं भी चकित रह जाते थे, इतनी कम उम्र में इतना धन और इतनी सुविधाएँ! क्या सचमुच बड़ी-बड़ी बहुराष्ट्रीय कंपनियाँ इतना पैसा देती हैं? हाँ, यह भी उतना ही सच है कि वे काम भी उसी स्तर का करवाती हैं। खोसला परिवार की छोटी लड़की की शादी थी। यह तय किया गया था कि वधू की पोशाक एक विशेष प्रतिष्ठित प्रतिष्ठान द्वारा तैयार करवाई जाएगी। उस लहंगा-निर्माण प्रतिष्ठान का नाम था— 'ब्राइड्स ब्यूटी', अर्थात् दुल्हन की सुंदरता। विभिन्न रत्नों और कीमती लाल कपड़े पर सजी भारी, ऐरी रंगीन पोशाक न केवल दुल्हन की गरिमा को बढ़ाती है, बल्कि पूरे परिवार को भी विशेष सम्मान दिलाती है। दुल्हन की पोशाक 'बी.बी.' में ही बननी थी, अर्थात् अत्यंत महँगे और विशिष्ट वस्त्रों में। लेकिन वास्तविकता कुछ और ही निकली। 'बी.बी.' में काम छह महीने पहले ही बुक हो जाता है; नए लहंगे के ऑर्डर लेने की कोई गुंजाइश ही नहीं रहती। अंततः दुल्हन को किसी अन्य कपड़े में ही विवाह मंडप में बैठना पड़ा। और करे भी तो क्या करती?

पुजारियों को लेकर भी एक बड़ी समस्या है। पैंतीस हजार शादियों के लिए पैंतीस हजार पुजारियों की आवश्यकता होगी—क्या यह संभव है? सभी हिंदू शादियाँ पारंपरिक पूजा-विधि के बिना संपन्न नहीं होतीं। संयोग से इसी दिन शहर के एक शक्तिशाली नेता के पुत्र का विवाह भी है। राजघरानों से जुड़े ये लोग, जो लंबे समय से राजनीति का पासा खेलते आ रहे हैं, यह भली-भाँति जानते हैं कि हर काम को किस तरह निपटाया जाए। उन्होंने लगभग सभी समस्याओं का समाधान कर रखा था; केवल एक मूल समस्या रह गई थी, पुरोहित की। इस समस्या का भी समाधान उन्होंने अपने ढंग से कर लिया। एक पुरोहित को समय पर उपलब्ध कराने के लिए उन्होंने अपनी कई बेकार पड़ी कारों में से एक उसे दे दी, ताकि वह बिना किसी बाधा के पहुँच सके। पुजारी सौ प्रतिशत प्रसन्न हो गया। उसने विवाह से दो दिन पूर्व शनि-पूजा का भी आयोजन कर दिया, क्योंकि ज्योतिषी का कहना था कि वर पर शनि का प्रकोप है। इसके बाद पुजारी अपने अन्य सारे कार्य छोड़कर राजनेताओं के घर में ही डेरा डाल बैठा। शुभ दिन आते-आते वह पुरोहित एक आइ-टेन कार का मालिक बन चुका था।

दूसरी ओर कुछ शादियों में दूल्हे की सवारी के लिए घोड़े को लेकर समस्या उत्पन्न हो गई थी। पशु संरक्षण समिति के कुछ सदस्य वहाँ पहुँचे और इस पर आपत्ति जताई। एक-दो सज्जन उनकी बात से सहमत भी हो गए, किंतु अधिकांश ने अंगूठा ऊपर उठाकर असहमति प्रकट कर दी। विरोध-प्रदर्शन अपनी जगह चलता रहा और दूल्हे का घोड़े पर सवार होना भी सब कुछ यथावत जारी रहा।

इन सबके बीच राजधानी खुशी और जश्न के नशे में डूबी हुई है। जहाँ देखो वहाँ आनंद, प्रसन्नता और उल्लास ही उल्लास है। मुगल काल के दौरान यह शहर एक समय में विलासिता और गौरव का प्रतीक था। मृतकों के स्पेक्ट्रम में राजसी वैभव की झलक बिखरी हुई थी। आज के इस शुभ दिन पर वही राजसी वैभव पूरे शहर में फैल गया है। दूल्हे और दुल्हन की लीटें सम्राट शाहजहाँ के मयूर सिंहासन जैसी लग रही हैं। शादी के हॉल कुछ-कुछ 'शीश महल' या 'खास महल' जैसी शानो-शौकत लिए हुए हैं-प्रकाशमान, दमकता हुआ और चमकदार। दूल्हा मुगल सम्राटों की तरह गरिमामय दिखाई दे रहा है और दुल्हन महारानी जैसी भव्य। बस एक ही अंतर है-मुगल काल में विलासिता और दौलत-शोहरत केवल बादशाहों के महलों तक सीमित थी। आम प्रजा अपने साधारण जीवन में ही संतुष्ट रहती थी। लेकिन अब ऐसा प्रतीत होता है कि आधुनिक राजधानी में सम्राटों का वैभव पूरे शहर में फैल गया है।

इस महीने में और भी शादियाँ होने वाली हैं। कागज पर लिखा है कि इस महीने एक लाख शादियाँ होंगी। इनमें से पच्चीस हजार का आयोजन पहले ही इस शुभ दिन पर संपन्न हो चुका है। एक प्रमुख अखबार ने पहले पन्ने पर बड़े अक्षरों में शीर्षक छपा है- '190,000 करोड़ रुपए का विवाह उद्योग'। और क्यों न हो! इतना चमक-दमक, इतना दंभा अरबों रुपए का हिसाब तो होना ही है। पूरा शहर आलोक-माला से झिलमिला रहा था, लेकिन कुछ जगहें हमेशा की तरह स्थिर थीं; दो-तीन लाइटें ही जली थीं। शिक्षानुष्ठान स्थल, अस्पताल, सरकारी और गैर-सरकारी कार्यालय, बस स्थान और मेट्रो-स्टेशन अपनी परिचित लाइट की रोशनी से हमेशा की तरह उज्ज्वल हो रहे थे। शहर का विशेष स्वच्छंद उत्साह और शुभ दिनों की झिलमिलाहट कुछ जगहों तक पहुँच नहीं पा रही थी। ऐसी ही जगह है रेलवे स्टेशन। हर वक्त रेल आने-जाने से व्यस्त यह स्टेशन अपनी एक जैसी रोशनी और दृश्य में ही दिखाई देता है। यहीं एक ही तरह के लोग आते-जाते हैं, एक जैसी दुकानें हैं, लाल रंग के कपड़े पहने लोग हर ओर हैं, बड़ी-बड़ी घड़ियाँ, चलते-फिरते टीवी सभी एक ही प्रकार का दृश्य। वही दुर्गंध, कानों में गूँजती कचरे की आवाज़, वही युवा लड़कों का समूह, वही गंदगी और अस्त-व्यस्त वातावरण। कुछ लोग कंधों पर बोरियाँ लादे कुड़ेदान से उपयोगी सामान निकालने की कोशिश कर रहे हैं।

यह स्टेशन का व्यस्त समय था। काफी संख्या में पैसेंजर ट्रेनें आती और जाती रही थीं। अन्य दिनों की तरह, बारह वर्ष का राजुल कंधे पर बोरा लटकाए प्लेटफॉर्म पर ऊपर-नीचे दौड़ रहा था। उसका घर देश के सबसे गरीब इलाकों में से एक में था। उसका परिवार भी बेहद गरीब था, और राजुल परिवार का सबसे बड़ा सदस्य था। राजुल ने सर्व-शिक्षा अभियान के स्तर तक पढ़ाई की थी। फिर भी, अपने परिवार के लिए आजीविका कमाने के उद्देश्य से उसे अपने चाचा के साथ इस शहर आना पड़ा। उसके चाचा झुग्गी-बस्ती में रहते थे; परिवार का अन्य सदस्य वहीं गाँव में रह गया था। राजुल को उसके चाचा ने अपने 'पेशे' से परिचित कराया-जिसमें कचरे के डिब्बे से उपयोगी वस्तुएँ

निकालना शामिल था। यह ऐसा काम था, जिसमें न तो किसी शैक्षणिक प्रमाण पत्र की आवश्यकता थी, न किसी प्रशिक्षण की, और न ही किसी प्रकार की अनुमति की। यात्रियों द्वारा फेंकी गई चीजों को इकट्ठा करना ही दिन में दो वक्त का भोजन जुटाने के लिए पर्याप्त था। लेकिन इस काम में भी व्यापार की जटिलताएँ थीं- क्या उठाना है, कौन-सी वस्तु किसे देनी है, और जो चीजें उसने एकत्र की हैं, उन्हें कौन खरीदेगा। ये सारी बातें उसके चाचा ने राजुल को समझाईं। अब वह अपना प्रबंधन स्वयं कर सकता था। राजुल जब यहाँ आये थे, सबसे पहले अपने चाचा के साथ नीली प्लास्टिक की चादर से ढके एक झोंपड़ी में रुका हुआ था। इसे चार और अन्य लोगों के साथ मिलकर रहना पड़ता था। खैर, 'रहना' कहना भी एक अतिशयोक्ति थी। पूरा दिन मेहनत करने के बाद, उसने फर्श पर चादर बिछाई और सो गया। दो महीने तक वहाँ रहने के बाद, राजुल ने प्लेटफॉर्म पर ही रहने का फैसला किया। अपने चाचा के गर्म और उमस भरे झोंपड़ी के मुकाबले, पानी के लिए नल, रोशनी और पंखों की उपलब्धता तथा अधिक खुली जगह के कारण यह जगह एक बेहतर विकल्प था। निःसंदेह, सर्दियों के दिन यातनापूर्ण थे। पुराने फटे कागज जलने पर भी कंपकंपा देने वाली ठंडी और डरावनी रातों से उसे डर लगता था। राजुल ने कड़ी मेहनत की, उसे एक जैकेट लेनी थी। उसका स्वेटर छोटा हो गया था। पुराने कपड़े बेचने वाले अशोक भैया ने उसे तीन सौ रुपये देने पर एक गरम जैकेट देने की बात कही थी। लेकिन तीन सौ रुपये एक साथ जुटा पाना राजुल के लिए असंभव-सा था। राजुल अपने सिर पर बोतलों की बोरियाँ लेकर ठेकेदार को देकर आता है। ठेकेदार ही राजुल जैसे सभी लोगों के लिए माई-बाप होता है। राजुल एक मेहनती है। समूह के अन्य लड़कों की तरह उसमें कोई बुरी आदत नहीं थी। वे लोग विभिन्न प्रकार के नशों के आदी थे और अपनी कमाई डेंड्राइट पर खर्च करते थे। कुछ लोग छोटे पैकेटों में मिलने वाले पाउडर के बिना एक रात भी नहीं बिता सकते थे। शुक्र है कि राजुल इन सब से मुक्त था। उसने अपने दिल में एक छोटा-सा सपना संजो रखा था। अगर वह थोड़ी बचत कर पाए, तो वह एक ठेला खरीदेगा और उसमें बर्फ और नींबू पानी रखकर बेचेगा। उसने देखा था कि गर्मी के दिनों में नींबू का रस और बर्फ खूब बिकते थे। सर्दियों में वह तली हुई मूँगफली और नमकीन पकौड़े लेकर जायेगा। शायद झुग्गी में उसका अपना एक झोंपड़ी होगा। तब वह अपनी माँ को गाँव से लेकर अपने साथ रहने के लिए लाएगा। जब उसने माँ के बारे में सोचा, तो उसका मन भटक गया। घर पर उसकी माँ की हालत बहुत खराब थी। यही फॉर्मूला राजुल के कभी काम नहीं आया। एकत्रित की गई फूली हुई प्लास्टिक की तरह, राजुल के सपने भी टूट चुके थे। फेंकी गई बोतल पर मुहर लगाकर उसे बाद में टुकड़ों में तोड़ दिया गया। कभी-कभी उसे लगता कि उसका दिल भी टुकड़ों में टूट रहा है। अपने सपनों के बारे में उसने केवल एक ही व्यक्ति, अपने दोस्त लालू को बताया। लालू ने उसके सपनों को बचाए रखने में उसके साथ रहने का वादा किया था। लालू ने कहा कि वे गर्मियों में मूँगफली भूनेंगे, पकौड़े तलेंगे और शरबत भी बनाएँगे। कभी-कभी जब वे रात को प्लेटफॉर्म पर बैठते, तो वे अपनी कल्पना में ठेला चलाते हुए खुद को देख लेते।

लेकिन राजुल के लिए गणित कभी काम नहीं आया; ठेला उसके लिए दूर बैठा चाँद जैसा ही लग रहा था। इस समय, जब सर्दी दरवाजे पर दस्तक दे रही थी, उसकी सबसे बड़ी जरूरत एक गर्म जैकेट की थी। यदि चुनी हुई बोतलों की संख्या अच्छी होती, तो वह अधिक से अधिक प्रतिदिन सौ रुपए कमा पाता। लेकिन एक ही दिन में इतनी सारी लावारिस बोतलें मिलना दुर्लभ था। उसे दोपहर और रात के भोजन के लिए रोटियाँ भी खरीदनी पड़ती

थीं। इसके अलावा, उसे अपने घर भी पैसे भेजने थे। उसकी माँ इसका बेसब्री से इंतजार करती रही। उसके पैसे के बिना परिवार के अन्य सदस्य भूखे रह सकते थे। बड़ी लगन और मेहनत के बाद, वह केवल सौ रुपए ही बचा सका। अब ऐसा लग रहा था कि जैकेट भी उसके लिए दूर का चाँद ही है। हाल ही में उसने एक बदलाव किया था। उसने ठेलों से रोटियाँ खरीदना बंद कर दिया। इसके बजाय, उसने और लालू ने मिलकर एक तवा, दो प्लेट, एक चाकू और एक चम्मच खरीदा। लालू खाना बनाने में माहिर था। उसने दाल पकाने के लिए एक बर्तन खरीदने की योजना बनाई। शाम को, स्टेशन की ओर जाने वाली पगडंडी पर लालू और राजुल ने अपनी गृहस्थी शुरू की। उन्होंने बोतलें, प्लास्टिक और कागज एकत्र किए और तीन ईंटों पर एक स्टोव बनाया। रोटियाँ सेंकी गईं, और अपने वचन के अनुसार, लालू दाल पकाने के लिए बर्तन जुटाने में सफल रहा। अब उनके पास फुटपाथ पर आराम से बैठकर ताजी पकी दाल के साथ रोटियाँ पकाने की सुविधा थी। बाद में वे सोने के लिए रात को प्लेटफॉर्म पर चले गए। जैसे ही उन्होंने अपने बिस्तर पर जुट की बोरियाँ बिछाईं, उबासी लेते ही उन्हें गहरी नींद आ गई। दिन के दौरान, बोतलें इकट्ठा करने के लिए इधर-उधर भागने के अलावा, उन्हें ठेकेदार तक पहुँचाने के लिए बोरियाँ लेकर दस से पंद्रह किलोमीटर तक पैदल चलना पड़ता था। किराया चुकाने के बावजूद, उन्हें अपने गंदे बोरो के साथ बस में चढ़ने की अनुमति नहीं थी। किसी भी प्रकार के सार्वजनिक परिवहन में उनकी यात्रा पर रोक लगाई गई थी। इसलिए, वे अपनी आधी घिसी हुई सैंडिल पहनकर ही खींच-खींच कर चलते रहते थे।

राजुल को प्लेटफॉर्म की टीवी स्क्रीन पर सिनेमा देखना बहुत पसंद था। एक फिल्म में उन्होंने सनी देओल को एक पुलिस वाले की पिटाई करते हुए देखा था। तभी से देओल उन दोनों के पसंदीदा हीरो बन गए। अगर टीवी पर सनी देओल की कोई फिल्म चल रही होती, तो वे कम-से-कम कुछ झपटमारों को पकड़ने की कोशिश करते। पुलिस ने जब भी मौका पाया, उन्हें परेशान किया। और देखो, सनी देओल ने उनकी पिटाई कर दी! वह उनका हीरो कैसे नहीं हो सकता था? सौ प्रतिशत!

शहर ने उनके लिए जीविकोपार्जन के कई रास्ते खोल दिए थे, और इसके लिए वे शहर के आभारी भी थे। यदि वे अपने गाँव में ही रहते, तो फेंकी हुई पानी की बोतलें उठाकर गर्म रोटी और दाल का प्रबंध कैसे कर पाते? इसके अलावा, घर पर इतनी सारी बोतलें कहाँ रहतीं? राजुल और लालू अखबार नहीं पढ़ते थे। यदि उन्होंने पढ़ा होता, तो उनके सामने उनके जैसे लड़कों की संख्या की रिपोर्ट आ जाती। इस राजधानी शहर में एक लाख कचरा बीनने वाले थे। कहानी के साथ चित्र भी थे। उनमें दिखाए गए लड़कों के कपड़े गंदे, बहुत छोटे या फिर बहुत बड़े थे, और शरीर का आकार क्षीण था।

हालाँकि, 27 नवंबर की शुभ तिथि उनके जीवन में भी अनुकूल प्रभाव डालने वाली थी। इस बात का राजुल और लालू दोनों को पूरा यकीन था। वे जानते थे कि अगले दिन कूड़ेदानों और रेलवे स्टेशन के फुटपाथ से अच्छी-खासी कमाई होगी। उन्हें अच्छी आय की आशा थी।

टीवी स्क्रीन पर सनी देओल की फिल्म चल रही थी। लालू और राजुल झपकी लेते हुए उसे देख रहे थे। उन्होंने दिन में जो बोतलें उठाई थीं, उन्हें बोरे में रख लिया और फिर अपनी रोटी और दाल खाई। अगले दिन के लिए उन्होंने कुछ रोटियाँ भी बचाकर रखीं, जिन्हें प्लेटफॉर्म पर लगे नल के पानी के साथ खाते थे। लालू को रात का खाना

पकाते समय अपनी पाक कला की विशेषज्ञता दिखाना बहुत पसंद था। आज वह एक पैकिंग बॉक्स लाया था। पोलीथिन और फटे हुए कागज से आग जलाना रोटियाँ और गेहूँ भूनने के लिए पर्याप्त तेज नहीं था; अधपकी रोटियाँ ही बनती थीं। आज उसे असली लकड़ी की आग का सुख मिलने वाला था। उन्होंने आधा किलो मिक्स दाल भी खरीदी थी। शाम को दो प्याज भी खरीदेंगे। दोनों को साधारण रोटी-दाल के भोजन के साथ कटे हुए कच्चे प्याज खाना बहुत ही पसंद था। अशोक भैया राजुल और लालू को बहुत पसंद करते थे। उन्हें कभी-कभी उनकी मदद की जरूरत होती थी और वे उनकी संगति का आनंद भी लेते थे। अशोक भैया भी अपने परिवार को दूर गाँव में छोड़कर आए हैं, ठीक उनकी तरह। पिछली गर्मियों में वह पेट की भयानक बीमारी से पीड़ित हो गए थे। लेकिन राजुल और लालू के लिए वह नहीं मरे। उनके जैसे लोग—यहाँ तक कि राजुल और लालू भी आसानी से बेशर्म लाश या लावारिस शव बन सकते थे। रात के खाने के बाद, राजुल और लालू अपनी छोटी सी 'रसोई' को एक बोरे में बाँधकर अशोक भैया की दुकान के पास रख आते थे। लालू भी कैसा लड़का है, बस्ते में बंधे उस संसार के प्रति उसका इतना मोह! दिन भर के कामों के बीच वह इधर-उधर भागता रहता है। कुछ जरूरत पड़ने पर वह दौड़ कर वहाँ जाता है। राजुल को कभी-कभी संदेह होता कि लालू यह देखने के लिए इधर-उधर दौड़ता था कि बोरा अभी भी वहीं है या नहीं।

घटना घटते समय, राजुल और लालू दोनों झपकी ले रहे थे या फिर टीवी पर सनी देओल की फिल्म देख रहे थे। उन्होंने प्लास्टिक की बोतलें इकट्ठा करके उन्हें चपटा भी कर दिया था। सिनेमा देखते हुए या सोते समय भी दोनों रात की दाल को लेकर चिंतित थे। अरहर, मसूर, मूँग और चना- सब मिक्स करके चूल्हे पर पैकिंग बॉक्स की असली लकड़ी की आग में पकाई जाने वाली यह दाल गाँव के घरों में असंभव-सी बात होती। राजुल ने लालू को यह नहीं बताया था कि उसने दो प्याजों के अलावा सीता बाई से आम के अचार का एक छोटा पैकेट भी खरीदा था, जो वह रेलवे डिब्बों में बेचती थी। उसने इसे अपने बहुत छोटे स्वेटर के नीचे छिपा रखा था। शर्ट और स्वेटर के बीच, तेल में तैरते आम के टुकड़ों से भरा पोलीथिन पैक सुरक्षित था। कभी-कभी वह पैकेट को छुता और सोचता कि लालू इस आश्चर्य से कैसे खुशी से उछल पड़ेगा। उसने कल्पना की कि वह शायद काफी देर तक आम के अचार को चूसेगा। आधे सोए हुए लालू की ओर देखकर वह मुस्कराया। स्क्रीन पर सनी देओल एक गुंडे की पिटाई कर रहे थे और फिर गुंडा तरबूजों से भरी गाड़ी पर जाकर गिर पड़े थे। आह! तरबूजों के ढेर के बीच उस आदमी के असहाय चेहरे को देखना कितना रोमांचक लग रहा था। राजुल खुशी से ताली बजाने वाला ही था।

उसी समय वह कांड हो गया। कौन आदमी था, कहाँ का था, किसी को भी पता नहीं था। प्लेटफॉर्म में आती हुई ट्रेन के सामने वह आदमी कूद गया। क्यों कूदा? शायद मरने के लिए। पर पता नहीं क्यों! घटना इतनी जल्दी घटित हुई कि किसी को कुछ पता ही नहीं चला। ट्रेन ने आदमी को टुकड़े-टुकड़े कर दिया। सर एक तरफ, पैर दूसरी तरफ, और हाथ किसी अन्य ओर छिटक गए। पुलिस सायरन बजाते हुए पहुँच गई। मृत व्यक्ति के अंगों के साथ रेलवे ट्रैक को यातायात के लिए बंद कर दिया गया। प्लेटफॉर्म चार पर लोगों की भीड़ उमड़ पड़ी। भीड़ में राजुल और लालू भी शामिल हो गए। ऐसा लगा कि फिल्म का वही दृश्य, जिसमें चारों ओर बिखरे खून और लाल तरबूज के टुकड़े थे, अब ट्रैक पर स्थानांतरित कर दिया गया हो। राजुल ने तुरंत अपनी आँखें फेर ली; उसका सिर चकरा गया। लालू पहले ही घटनास्थल से जा चुका था, इसलिए राजुल ने भी उसका अनुसरण करने का फैसला किया। लेकिन तभी

उसने पुलिस के मुँह से कुछ सुनकर रुक गया। पुलिस अपने हाथों की उँगलियों के बीच पाँच सौ रुपए का एक नोट पकड़कर बोल रहा था कि जो भी मृत व्यक्ति के अंग उठाकर बोरे में भर देगा, उसे श्रम शुल्क के रूप में वह नोट मिलेगा। कोई आगे नहीं आ रहा था और एक पुलिसवाला प्लास्टिक का बोरा लेकर आया। पहला पुलिसकर्मी अभी भी 500 रुपए के इनाम को अपनी दोनों उँगलियों के बीच मजबूती से पकड़े हुए था। राजुल की आँखें नोट पर टिक गईं। एक गर्म जैकेट! अगर उसे यह नोट मिल जाता तो अशोक भैया उसे तुरंत वही जैकेट दे देते। उसने राजुल को उस महँगी चीज को छूने भी नहीं दिया था। वह जैकेट, जिसके बाहर चमड़ा और अंदर फर था। एक बार राजुल ने बहुत विनती कर उसे छूने का आग्रह किया था। आह! कितना मुलायम था! सुबह जब भी अशोक भैया दुकान खोलते, वह जैकेट जरूर लटकाते। बाकी कपड़े फोल्डिंग रैक में रखे रहते थे।

राजुल अचानक उस पुलिसकर्मी के सामने जाकर खड़ा हो गया। उसने अपनी छाती पर दायँ हाथ रखकर कहा, "मैं यह करूँगा।" राजुल रेलवे ट्रैक पर उतर गया। लोगों की भीड़ से बचते हुए वह प्लेटफॉर्म के बिल्कुल किनारे पर खड़ा हो गया। राजुल ने सबसे पहले प्लास्टिक का बोरा अपने कंधे पर उठा लिया, ठीक उसी तरह जैसे वह गंदगी से प्लास्टिक की बोतल उठाकर बोरे में डालता। उसके एक हाथ की उँगलियाँ थोड़ी फैली हुई थीं; एक उँगली में तांबे की अंगूठी थी, और हाथ पर टैटू बना था, जिस पर कुछ लिखा दिखाई दे रहा था। हाथ उठाते समय राजुल का सिर चकरा गया। उसकी बाँहें, जैसे मछली साफ करते समय, वैसे ही साफ दिखाई दे रही थीं। उस जगह का रंग उस सिनेमा के कटे हुए तरबूज की तरह था। आँखें बंद करके उसने दोनों हाथों से उस कटे हाथ को बोरे में डाल दिया।

राजुल इस बार दूसरे हाथ के पास गया। यह हाथ दो टुकड़ों में बंट चुका था। हाथ के टुकड़े उठाते समय उसका शरीर काँपने लगा, ऐसा लग रहा था कि वह अभी उल्टी कर देगा। उसका पेट दर्द करने लगा। इस बार भी उसने आँखें बंद कर लीं। हाथ के दोनों टुकड़े बोरे में रख दिए। राजुल का रंग फीका पड़ गया था। उसके कपड़ों से बिंदु-बिंदु पसीना टपकने लगा और उसके हाथ-पाँव अचल होने लगे। दर्द एक बार पीठ से होकर सिर तक गया और फिर उतर रहा था। देखते ही देखते राजुल काँपने लगा था। उसे देखने वाले लोग चुप हो गए थे। निर्जनता को तोड़ते हुए कोई शब्द राजुल की ओर आने लगा। लालू कुछ सूखी मिर्ची बोरे में रख आया था। कई थैले सूखी मिर्ची रेल के डिब्बे से उतारकर रख दिए गए थे। उनमें से कुछ उसने छुपाकर रख दिया, मिक्स दाल की गर्म सुगंध के लिए। बस अब बोतल को ठेकेदार तक पहुँचाने की देर थी। लालू विरक्त हो गया था। वह सोच रहा था कि राजुल कहाँ फँस गया है? कुछ तो लफड़ा है। अशोक भैया की दुकान पर ही लालू को पता चला कि राजुल उस डेड बॉडी को उठा रहा है। लालू दौड़ कर गया और राजुल को देखकर लालू डरने लगा। यह क्या देख रहा है वह? राजुल डेड-बॉडी के पास खड़ा था, उसके पास में एक बोरा। राजुल का मुँह देखकर लालू चौंक गया। अभी कुछ समय पहले ही तो वे अशोक भैया की दुकान से आए थे। इतना कम समय में राजुल को क्या हो गया? लालू चिल्लाते हुए प्लेटफॉर्म से उतरकर ट्रैक पर जाने ही वाला था कि एक पुलिस वाला उसे रोक लेता है। लालू बार-बार राजुल से कह रहा था, "यह सब छोड़ दे!" वह बोल ही नहीं पा रहा था। उसके शब्द कमजोर पड़ गए थे। वह बार-बार जोर लगा रहा था, लेकिन उसकी आवाज़ भारी और शब्द अस्पष्ट हो गए थे। फिर भी, उसका मर्म वहाँ उपस्थित सभी को समझ में आ रहा था। राजुल का टूटा-फूटा शरीर उठाना लालू को अच्छा नहीं लग रहा था। वह उसे बार-बार मना करने की

कोशिश कर रहा था। एक पुलिस वाले ने उसे पकड़कर पुलिस की गाड़ी में बिठा दिया। वहाँ से भी वह राजुल को पुकार रहा था।

राजुल को कुछ सुनाई नहीं दे रहा था। इस बार वह अपने पैरों को घुटनों के साथ जोर लगाकर ऊपर उठाने की कोशिश कर रहा था। पैर की हड्डी रेलवे लाइन से जुड़ी हुई थी और वह उसे छुड़ा नहीं पा रहा था। उसकी आँखों के सामने सब कुछ धुंधला दिखाई दे रहा था। ऐसा लग रहा था कि एक हल्का अँधेरा उसे चारों तरफ से घेर रहा है। उसने पैर खींचकर बोरे में डाल दिया। इस बार वह उस पैर वाले, बिना सिर के शरीर के पास गया। उससे हो नहीं रहा था; वह शरीर को हाथ नहीं लगा पा रहा था। उसका पेट मरोड़ गया। उसने ट्रेन की आयरन पटरी पर ही उल्टी कर दी। किसी की आवाज़ आई, शायद कोई पुलिस वाला ही था, जो राजुल पर कुछ चिल्ला रहा था। "जल्दी-जल्दी काम खत्म कर, पैसा लेकर जा और जाकर नहा ले।" एक रेलवे यात्री भी बोल रहा था, "धूपबत्ती की पैकेट खरीद कर मंदिर जाना। दुर्घटना में मृत्यु हुई है, क्या पता आत्मा तुम्हारे शरीर में ही घुस जाए।" कुछ और लोगों ने सहमति में हाँ कहा। "ठीक कह रहे हैं, अगर मंदिर नहीं जाएगा तो यह दाग जीवन भर उसके मन से नहीं जाएगा। मंदिर जाना ही काफी नहीं है, अच्छी पूजा भी करनी होगी।" लेकिन राजुल को ये सब बातें सुनाई नहीं दे रही थीं। वह केवल एक ही बात अपने दिमाग में रख रहा था कि उसने काम लिया है और किसी भी तरह से इसे खत्म करना ही होगा। असल में, जीवन का जितना भी पल उसने अब तक बिताया है, हर पल एक शब्द उसे परेशान कर रहा है- काम खत्म कर, तभी तुझे रोटी मिलेगी, वरना पेट की भूख तुझे सोने नहीं देगी। पत्थर पचाने वाले लड़के के लिए भूख की पीड़ा बहुत भारी होती है। यही उसने सीखा है- काम खत्म कर, काम खत्म कर। गेहूँ काटना-खत्म कर, जंगल की निराई-गुड़ाई-समाप्त कर, बोतल को पैक करना-समाप्त कर, बोतल चपटा करना-समाप्त कर, चपटी बोतल को अपनी पीठ पर ठेकेदार के पास ले जाना-समाप्त कर, कूड़ा-कचरा साफ करना और बोतल अथवा प्लास्टिक की थैलियाँ निकालना-समाप्त कर। काम खत्म कर, सामान ला और रोटी खा। अन्यथा सब कुछ बंद है। उसका मस्तिष्क किसी और चीज़ के बारे में सोचने में असमर्थ था।..... उसे केवल यही संदेश मिल रहा था कि उसका मस्तिष्क इस समय स्वीकार कर रहा है और काम कर रहा है- जो काम मिला है उसे खत्म कर, नहीं तो तू नहीं बचेगा। भूख से मरेगा, ठंड से मरेगा।

बोरे में एक सरविहीन शव पड़ा था। प्लेटफॉर्म के ऊपर से किसी ने चिल्लाकर कहा, "शाबाश, बेटा, तू बहादुर लड़का है!" लेकिन राजुल ने कुछ भी सुना नहीं। देखने वालों में से कोई भी यह नहीं बता सका कि राजुल की सारी इंद्रियाँ धीरे-धीरे निष्क्रिय हो रही थीं। वह केवल काम खत्म करने के लिए ऐसा कर रहा था। सिर्फ लालू ही समझ पा रहा था कि उसके अंदर क्या हो रहा है। लालू भी चिल्ला रहा था, "राजुल भैया खत्म हो जाएगा! पुलिस ने राजुल को जिंदा लाश बना दिया है! राजुल भैया को पुलिस मार डालेगी! वह खत्म हो जाएगा!" लालू पुलिस की गाड़ी से ही यह सब कह रहा था। इस बार राजुल कटे हुए सर को उठाने जा रहा था। सिर नीचे था, चेहरा ऊपर की ओर। उसकी आँखें खुली थीं—एक जोड़ी स्थिर आँखें, दो लेटी हुई आँखें, एक बेजान जोड़ी खुली आँखें, सीधे राजुल की ओर देख रही थीं। उस बेजान आँखों में कितना मस्त लुक था! राजुल कटे हुए सिर को देखता रह गया। केवल एक क्षण और वह चिल्ला उठा। ऐसा लगा जैसे उसके मुँह में पानी पिघल गया हो। पुलिस वाले, हाथ में पैसा लिए, राजुल को रेलवे गली से उठा ले गए। देखने वाले लोग पुलिस को दोष देने लगे

"खुद क्यों नहीं कर सकते थे? या बच्चों से ऐसा काम क्यों करवाते हो? पैसों का लोभ दिखाकर इस तरह का काम कराना उचित नहीं है।" मंदिर में दीप जलाने और पूजा देने की बातें कहने वाले लोग अब चिल्ला उठे- "उसके शरीर पर भूत आ गया है!" पुलिस वाले राजुल को प्लेटफॉर्म पर ले जाकर सुला दिया। राजुल एक जानवर की भाँति चिल्ला रहा था। होंठों से सफेद कुछ निकल रहा था, आँखें लाल हो रही थीं। हाथ-पाँव फैलाकर वह प्लेटफॉर्म पर घूम रहा था। "मर जाएगा अभी; लड़का मर जाएगा!" उसे देखकर पुलिस वाले डर गए। एक पुलिसकर्मी राजुल को पुलिस वैन में ले गया। वैन के अंदर भी वह चिल्ला रहा था। वैन चलनी लगी। और लालू? पुलिस की गाड़ी से उतारे जाने के बाद लालू खंभे के सहारे टिककर बैठा, रो रहा था। वह कुछ भी नहीं कर पा रहा था, उसे कुछ भी अच्छा नहीं लग रहा था। राजुल की भाषा खत्म हो गई थी, सड़ी-गली हो गई थी, कूड़ा हो गया था। कभी-कभी वह मिक्स दाल का भी जिक्र कर रहा था। राजुल से दाल-रोटी नहीं खाई गई। पुलिस की गाड़ी के जाने के बाद गतिमता ने फिर स्टेशन के प्लेटफॉर्म चार को कवर कर लिया। कटे हुए सर के शव को अब स्थानांतरित कर दिया गया और सारे चिह्न गायब हो गए। जो ट्रेन बंद थी, वह चलने लगी। लोग, रेलगाड़ियाँ, माल और फेरी वाले सभी पहले जैसे हो गए। सिर्फ लालू खंभे के सहारे टिककर बैठा रहा। वह कुछ भी नहीं करना चाहता था। उसे कुछ भी अच्छा नहीं लग रहा था।

जब पुलिसकर्मी राजुल को वैन में लेकर अस्पताल जा रहे थे, तो धीरे-धीरे अँधेरा होने लगा। पुलिस थाना क्षेत्र पार कर शहर में प्रवेश करने पर गाड़ी आगे नहीं बढ़ पा रही थी; बार-बार रुक रही थी। राजुल के हाथ-पाँव बाँधकर पिछली सीट पर फेंकने वाली हरी रंग की पुलिस वैन अच्छे दिनों के उत्साह से बार-बार टकरा रही थी। गाड़ी जितनी आगे बढ़ती गई, त्योहारों की बाढ़ उसे उतना ही बहा ले जा रही थी। राजुल चिल्ला रहा था, लेकिन अच्छे दिनों के उत्सव के उल्लासपूर्ण संगीत ने उसकी चीखों को दबा दिया था। सामने की सीट पर बैठे पुलिसकर्मी भी राजुल की चीख सुन नहीं पा रहे थे। राजुल की चीख अब सूअर की आवाज जैसी हो गई थी। उसके शरीर से एक अद्भुत सुगंध निकल रही थी, लेकिन बाहर की मदमस्त हवा ने उस गंध को भी दबा दिया। केवल वैन के अंदर ही वह गंध फैल रही थी।

अस्पताल अब कुछ ही दूरी पर था। वैन जा ही रही थी। विशाल सड़कों पर वैन तेजी से आगे बढ़ रही थी, शहर के आनंद और विलास, नदियों और अन्य दृश्य तत्वों को पीछे छोड़ते हुए।

राजुल का स्वेटर, जो उसके आकार के हिसाब से बहुत छोटा था, अब उसके किसी काम का नहीं रहा था। उसकी शर्ट की जेबों के बीच एक पॉलीथिन की थैली में रखे आम के अचार के दो टुकड़े भी अब बेकार हो चुके थे। पैंट की जेब में रखे दो प्याज कब के गिर चुके थे। यदि जेब में कुछ बचा था, तो बस प्याज के दो-चार छिलके ही थे।

अंतहीन धारा में तुम मनुष्य बनकर रहोगे

मूल : अरण्यम कश्यप, अनुवादक: टिनामोनी सालोई

स्नातकोत्तर, तृतीय छमाही

“कुक्कुरः शृगालः गर्दभश्च आत्मा राम
जानिया सबको परि करिबा प्रणाम ।”
एक विषय धुंधकर लाए थे वह
शून्यता में मंत्र फूंककर
अंधकार में टटोलकर
बोले थे - जीवित रहना चाहते हो तो ऐसे ही रहो
नहीं बोलने से झूठ बोलना हो सकते हैं
छोड़ना सबकुछ है
लेकिन वहा पर अहिंसा नहीं है
उसमें प्रेम नहीं है
ओर नही है उसमें समता
ओर अनंत मार्ग।
जबकि तुमने तुम्हे खो दिया
ये तो एक इलुशना।
तुम्हारे सपने में राम आएगा
तुम्हारे कर्म में राम आएगा
ओर प्यार आएगा
प्यार आएगा
तुम जीवित रह सकोगे अनंत काल
तर्कहीनता में तर्क खोजना जानना पड़ेगा
राम - राम - राम
तुम अपने आपको ही बचाव करोगे
ओर एक समाज का उद्धार करना
केवल असीम धारा मैं तुम इंसान बने रहना।

मैं हूँ अपनी पहचान

दीपादिता तालुकदार
शोधार्थी, हिन्दी विभाग

मैं केवल रिश्तों की परिभाषा नहीं,
अपने अस्तित्व की भाषा हूँ।
किसी के नाम से नहीं,
अपने कर्मों से लिखी हुई अभिलाषा हूँ।

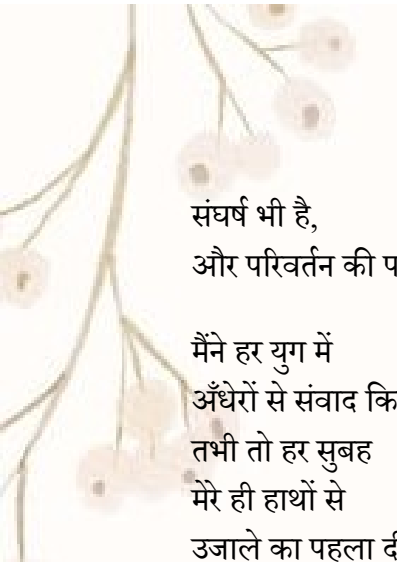
मैंने सदियों से
चूल्हे की आँच भी संभाली है,
और समय के कठोर पत्थरों पर
अपने सपनों की लौ भी जलाई है।

मेरी चुप्पी को
कमजोरी समझने वालों,
सुनो-
मौन भी कभी-कभी
सबसे प्रखर प्रतिरोध होता है।

मैं नदी हूँ,
रुकना मेरी प्रकृति नहीं।
मैं वटवृक्ष की जड़ भी हूँ,
और आकाश छूती हुई
नई पत्तियों की हरियाली भी।

मुझे दया नहीं,
अवसर चाहिए।
मुझे प्रशंसा नहीं,
सम्मान चाहिए।
मेरी उड़ान पर
संदेह नहीं, विश्वास चाहिए।

मैं माँ बनूँ तो भी पूर्ण हूँ,
न बनूँ तो भी पूर्ण हूँ।
मेरी सृष्टि केवल जन्म नहीं,
विचार भी है,
संवेदना भी है,



संघर्ष भी है,
और परिवर्तन की पहली आहट भी।

मैंने हर युग में
अंधेरो से संवाद किया है,
तभी तो हर सुबह
मेरे ही हाथों से
उजाले का पहला दीप जला है।

अब मैं किसी सीमा की
बंदी नहीं हूँ
मैं प्रश्न भी हूँ,
उत्तर भी हूँ
मैं संघर्ष की आवाज़ हूँ,
और स्वाभिमान का विस्तार भी।

मुझे पढ़ो
किसी संबंध की पहचान से नहीं,
मेरे व्यक्तित्व की रोशनी से।
क्योंकि-

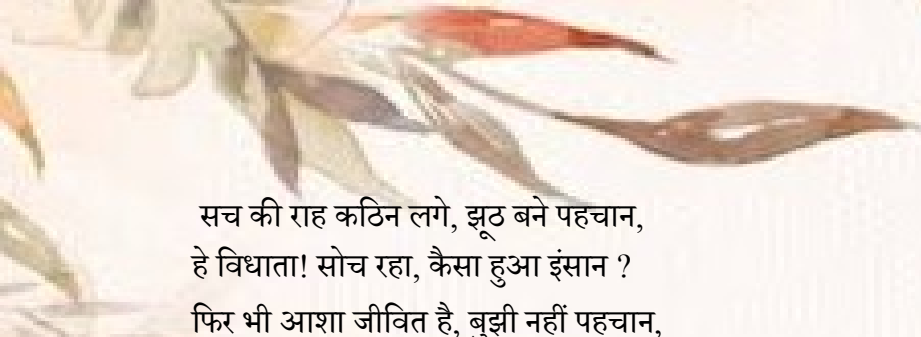
मैं किसी की परछाई नहीं,
मैं स्वयं अपनी पहचान हूँ।

मैं भारत का संविधान हूँ

खुशबू कुमारी चौहान
स्नातक, सप्तम छमाही

आज मेरी रूह अपने ही बच्चों से एक प्रश्न करती है-
क्यों तुम्हारी आँखों में ख्वाबों से अधिक अश्रु हैं?
क्यों तुम्हारे होंठों पर मुस्कान से अधिक खामोशी है?
क्यों तुम्हारे हाथों में कलम से पहले अपने अधिकारों की पुकार है?
मेरे अजीज बच्चों,
मैंने तुम्हें अधिकार दिए, स्वतंत्रता दी और सम्मान से जीने का अधिकार दिया।
किन्तु उन्हें जीवित रखना केवल मेरा नहीं, तुम्हारा भी धर्म और कर्तव्य है।
यदि अन्याय दिखे, तो मौन मत रहना।
यदि अंधकार छा जाए, तो ज्ञान का दीप जलाना।
क्रोध नहीं, विवेक चुनना।
घृणा नहीं, प्रेम, संवाद और सद्भाव से नवभारत का निर्माण करना।
आज मेरी रूह व्याकुल है...
मानो अपने ही बच्चों की पीड़ा को देखकर भी उन्हें राहत न दे पा रही हूँ।
लेकिन सुनो, मेरे अजीज बच्चों-
जुल्म के सामने कभी अपना सिर मत झुकाना।
क्रयामत के खौफ़ से भी अपने क़दम पीछे मत हटाना।
अपने ज़मीर को कभी मत बेचना।
अनैतिकता के सहारे अपने अधिकार पाने का प्रयास कभी मत करना।
याद रखना-
सत्य और इंसान की राह कठिन अवश्य होती है,
किन्तु वही राह सम्मान और स्वाभिमान तक पहुँचाती है।
मैं तुम्हारा संविधान हूँ।
मैं तुम्हारा अधिकार हूँ।
मैं तुम्हारी आवाज़ हूँ।
मैं तुम्हारे स्वाभिमान की पहचान हूँ।
मुझे पुस्तकों में मत खोजो, अपने चरित्र में खोजो।
मुझे शब्दों में मत पढ़ो, अपने कर्मों में उतारो।
मैं भारत का संविधान हूँ। मुझे याद मत करना-मुझे जीना।

फिर भी विकास के नाम पर, बजते हैं जयगान।
लाखों जीवों का घर उजाड़, धर्म का नाम कमाता,
करुणा छोड़ दिखावे से, खुद को श्रेष्ठ बताता।
रिशतों से अधिक होता है, धन का आज सम्मान,
लालच बन बैठा जैसे, जीवन का संविधान।



सच की राह कठिन लगे, झूठ बने पहचान,
हे विधाता! सोच रहा, कैसा हुआ इंसान ?
फिर भी आशा जीवित है, बुझी नहीं पहचान,
एक दीप संवेदना का, बदल सके संसार।
यदि मन में प्रेम जग जाए, जाग उठे ईमान,
तब सचमुच धरती पर होगा, श्रेष्ठ हर इंसान।

छोटा दीपक

अलिफा बेगम

स्नातक, तृतीय छमाही

एक छोटे से गाँव में रवि नाम का एक लड़का रहता था। उसका परिवार बहुत गरीब था। उसके पिता खेतों में मजदूरी करते थे और माँ घरों में काम करके परिवार का पालन-पोषण करती थीं। घर की आर्थिक स्थिति इतनी कमजोर थी कि कई बार दो समय का भोजन भी मुश्किल से मिल पाता था। लेकिन रवि का सपना था कि वह पढ़-लिखकर एक बड़ा अधिकारी बने और अपने माता-पिता का जीवन बदल दे। रवि रोज सुबह जल्दी उठता, घर के छोटे-मोटे काम करता और फिर स्कूल चला जाता। उसके पास महँगी किताबें, अच्छे कपड़े या पढ़ने की सुविधाएँ नहीं थीं। फिर भी वह कभी निराश नहीं होता। स्कूल के बाद वह गाँव की लाइब्रेरी में बैठकर घंटों पढ़ाई करता। रात में बिजली न होने पर वह मिट्टी के दीये की रोशनी में पढ़ता था। एक दिन उसके स्कूल में वार्षिक परीक्षा हुई। दीपक ने बहुत मेहनत की थी, लेकिन परिणाम आने पर वह प्रथम नहीं आ सका। उसके कुछ साथी उसका मजाक उड़ाने लगे। उन्होंने कहा, “इतनी मेहनत करके भी तुम सफल नहीं हुए। अब तुम्हारा सपना कभी पूरा नहीं होगा।”

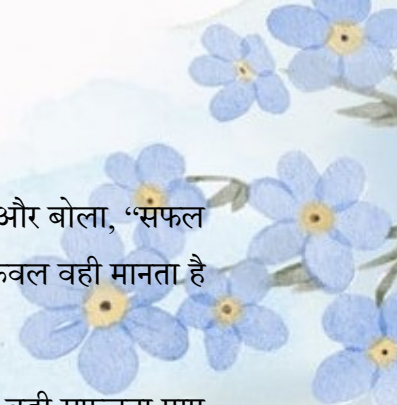
रवि को बहुत दुःख हुआ, लेकिन उसने हार नहीं मानी। उसने सोचा कि असफलता सफलता की पहली सीढ़ी है। उसने अपनी गलतियों को समझा और पहले से भी अधिक मेहनत करने का निर्णय लिया। कुछ महीनों बाद जिला स्तर की छात्रवृत्ति परीक्षा हुई। इस बार रवि ने पूरे मन से तैयारी की। उसने दिन-रात कड़ी मेहनत की, अपने शिक्षकों से मार्गदर्शन लिया और लगातार अभ्यास करता रहा। परीक्षा का परिणाम आया तो दीपक पूरे जिले में प्रथम स्थान पर रहा। उसे छात्रवृत्ति मिली और आगे की पढ़ाई का सपना भी साकार हो गया।

अपनी पढ़ाई पूरी करने के बाद, कठिन परिस्थितियों के बावजूद उसने प्रशासनिक सेवा की परीक्षा उत्तीर्ण कर ली। जल्द ही वह अधिकारी बनकर अपने गाँव लौटा। पूरे गाँव ने उसका भव्य स्वागत किया। जो लोग कभी उसका मजाक उड़ाते थे, वे आज उसकी सफलता की प्रशंसा कर रहे थे।

रवि ने अपने गाँव में एक लाइब्रेरी और गरीब बच्चों के लिए निःशुल्क शिक्षा केंद्र शुरू करवाया। वह हमेशा बच्चों से कहता था, “गरीबी कभी सफलता की राह में बाधा नहीं बनती। यदि मन में दृढ़ संकल्प, मेहनत और ईमानदारी हो, तो कोई भी लक्ष्य असंभव नहीं है।”

रवि की कहानी से गाँव के बच्चों में नई उमंग आई। कई बच्चों ने प्रेरणा लेकर पढ़ाई शुरू की और अपने जीवन में सफलता प्राप्त की। दीपक का जीवन इस बात का प्रमाण बन गया कि कठिन परिस्थितियाँ इंसान को रोक नहीं सकतीं, यदि उसके इरादे मजबूत हों।

लेकिन रवि का संघर्ष और सफलता लोगों के लिए प्रेरणा का स्रोत बन गई। विद्यालयों में उसकी कहानी सुनाई जाने लगी। बहुत से लोग उसकी तरह मेहनत करने का संकल्प लेने लगे। रवि हमेशा कहता था कि सफलता एक दिन में नहीं मिलती, बल्कि निरंतर प्रयास, धैर्य और आत्मविश्वास से प्राप्त होती है।



एक दिन एक छोटे बच्चे ने दीपक से पूछा, “सर, सफलता का रहस्य क्या है?” रवि मुस्कुराया और बोला, “सफल वही होता है जो कठिनाइयों से डरकर रुकता नहीं, बल्कि उनसे सीखकर आगे बढ़ता है। हार केवल वही मानता है जो प्रयास करना छोड़ देता है।”

उस दिन से वह बच्चा पूरी लगन से पढ़ाई करने लगा। कुछ वर्षों बाद उसने भी अपने जीवन में बड़ी सफलता प्राप्त की। इस प्रकार रवि की प्रेरणा एक व्यक्ति तक सीमित नहीं रही, बल्कि अनेक लोगों के जीवन में आशा की नई किरण बन गई।

माँ की आखिरी चिट्ठी

पूजा शर्मा

स्नातकोत्तर, तृतीय छमाही

पिता की तेरहवीं के अगले दिन अनन्या पहली बार उस घर में बिल्कुल अकेली थी। आँगन में धूप पहले की तरह उतर रही थी। तुलसी के चौरे पर पानी भी चढ़ा था। रसोई की खिड़की से हल्दी और सूखी लाल मिर्च की मिली-जुली गंध अब भी आती थी। बाहर से देखने पर कोई नहीं कह सकता था कि इस घर ने पिछले सोलह वर्षों में दो सबसे बड़े शोक देखे हैं। लेकिन कुछ दुख ऐसे होते हैं, जो दीवारों पर नहीं, घर की चुप्पी पर लिखे जाते हैं। रिश्तेदार जाते-जाते एक ही सलाह दे गए थे "अब यह मकान बेच दो, बेटी। अकेले इस पुराने घर का क्या करोगी?"

अनन्या ने कोई उत्तर नहीं दिया। जिस घर में किसी की हँसी बची हो, वहाँ ताला लगाया जा सकता है यादों पर नहीं। वह धीरे-धीरे उस छोटे कमरे की ओर बढ़ी, जहाँ उसकी माँ सिलाई करती थीं। कमरे में कदम रखते ही उसकी नज़र उसी पुरानी काली सिलाई मशीन पर ठहर गई। मशीन के हथ्थे पर अभी भी फीका पड़ चुका नीला धागा लिपटा था। ऐसा लगा, जैसे किसी ने काम बीच में छोड़कर बस थोड़ी देर के लिए उठी हो।

अनन्या ने हथेली से मशीन पर जमी धूल हटाई। उसे अचानक याद आया माँ अक्सर कहती थीं, "कपड़ा चाहे कितना भी फट जाए, अगर समय रहते टाँका लगा दो तो बच जाता है। रिश्ते भी ऐसे ही होते हैं।"

तब वह हँसकर भाग जाती थी। आज उस एक वाक्य का अर्थ उसकी पूरी उम्र से बड़ा लग रहा था।

माँ का नाम सविता था। वे कभी बहुत बीमार नहीं पड़ी थीं। बस एक समय के बाद उन्होंने कहना शुरू किया

"आजकल बहुत थकान रहती है।"

फिर बाएँ स्तन में एक छोटी-सी गाँठ महसूस हुई।

उन्होंने किसी से कुछ नहीं कहा। घर की आमदनी सीमित थी। पिता, राघव, डाकघर में एक साधारण कर्मचारी थे। महीने के अंत तक अक्सर जेब खाली हो जाती थी। अनन्या तब नौ साल की थी। उसकी स्कूल की फीस, किताबें, राशन, बिजली हर खर्च पहले से तय होता था।

सविता ने सोचा "शायद अपने-आप ठीक हो जाएगा।"

लेकिन वह ठीक नहीं हुआ। कुछ महीनों बाद दर्द बढ़ने लगा। पड़ोस की एक महिला ने ज़ोर देकर अस्पताल जाने को कहा। जाँच हुई। रिपोर्ट आने में पाँच दिन लगे। उस शाम जब डॉक्टर ने धीमी आवाज़ में कहा

"कैंसर है, और काफ़ी फैल चुका है।"

तो कमरे में सबसे पहले सन्नाटा नहीं, राघव की उँगलियों की पकड़ बदली थी। उन्होंने सविता का हाथ पहले से थोड़ा ज़्यादा कसकर पकड़ लिया। डॉक्टर इलाज की संभावनाएँ समझा रहे थे। दवाइयों के नाम बता रहे थे। खर्च बता रहे थे। लेकिन सविता की नज़र केवल एक जगह ठहरी थी अस्पताल की खिड़की के बाहर खेलती एक छोटी लड़की पर। उसे अपनी अनु याद आ रही थी। वापसी के रास्ते में दोनों लगभग पूरे समय चुप रहे।

घर पहुँचकर राघव ने पहली बार रोना चाहा। लेकिन बरामदे में बैठी अनन्या दौड़कर उनसे लिपट गई "पापा, माँ ठीक हो जाएँगी ना?"

राघव ने अपनी आँखें दूसरी ओर फेर लीं।

"हाँ, बिल्कुल ठीक हो जाएँगी।"

उस दिन उन्होंने अपनी बेटी से पहला झूठ बोला था।

रिपोर्ट आने के बाद घर बदल तो नहीं गया था लेकिन घर में रहने वाले लोग बदलने लगे थे। सविता अब पहले से जल्दी थक जाती थीं। सीढ़ियाँ चढ़ते समय बीच में रुक जातीं, फिर मुस्कुराकर कह देतीं

"उम्र हो रही है शायद"

राघव जानते थे कि यह उम्र नहीं थी। लेकिन उन्होंने कभी उनके सामने "कैंसर" शब्द नहीं दोहराया।

घर में वह शब्द जैसे बोलने की मनाही थी। इलाज शुरू हुआ। हर पंद्रहवें दिन शहर के बड़े अस्पताल जाना पड़ता।

सुबह चार बजे उठना, पहली बस पकड़ना, घंटों लाइन में खड़े रहना, दवाइयाँ लेना, फिर शाम तक घर लौट आना।

अनन्या को बस इतना बताया गया था-

"माँ की तबीयत थोड़ी खराब है।"

बच्चे अक्सर सच से ज्यादा चेहरों को पढ़ लेते हैं। एक दिन उसने देखा पिता चुपचाप अलमारी से माँ के शादी के समय के दो सोने के कंगन निकाल रहे थे। उसने पूछा

"पापा, ये क्यों निकाल रहे हो?"

राघव ने बिना उसकी तरफ़ देखे कहा

"बैंक में रखकर पैसे लाने हैं।"

अनन्या ने फिर कुछ नहीं पूछा।

लेकिन उस दिन के बाद उसने कभी नई गुड़िया की ज़िद नहीं की। इलाज के दिनों में भी सविता ने घर का काम लगभग नहीं छोड़ा। धीरे-धीरे करतीं, रुक-रुककर करतीं लेकिन करती ज़रूर थीं। राघव कई बार कहते

"थोड़ा आराम भी कर लिया करो।"

वह मुस्कुराकर जवाब देतीं

"आराम तो बहुत मिलेगा, अभी घर को मेरी आदत बनी रहनी चाहिए।"

राघव हर बार चुप हो जाते।

उन्हें समझ नहीं आता था कि इस वाक्य का जवाब क्या दें।

एक रविवार की सुबह अनन्या स्कूल का प्रोजेक्ट बना रही थी। उसे चार्ट पेपर चाहिए था। घर में पैसे नहीं बचे थे।

राघव ने अपनी जेब टटोली। कुछ सिक्के निकले। बस उतने ही। वह बिना कुछ बोले बाहर निकल गए। शाम को लौटे तो उनके हाथ में चार्ट पेपर भी था और माँ की दवा भी। अनन्या ने कभी नहीं पूछा कि दोनों कैसे आ गए।

उसे बहुत बाद में पता चला, उस दिन पिता पैदल लौटे थे। बस का किराया बचाकर।

बीमारी बढ़ रही थी। कीमोथेरेपी के बाद सविता के बाल झड़ने लगे। एक शाम वह आईने के सामने बैठी थीं।

बालों का एक गुच्छा कंधी में अटक गया। उन्होंने कुछ क्षण उसे देखा

फिर बहुत सामान्य आवाज़ में बोलीं

"अनु..."

अनन्या दौड़कर आई।

"हाँ माँ?"

"जरा कैची देना।"

"क्यों?"

"बाल छोटे कर लूँगी, गर्मी भी बहुत है।"

अनन्या मासूमियत से मुस्कुराई।

"हाँ, छोटे बालों में आप अच्छी लगोगी।"

सविता ने आईने में अपनी बेटी को देखा। उस दिन उन्होंने पहली बार महसूस किया बच्चे कभी-कभी भगवान की सबसे बड़ी दया होते हैं। वे हर सच को उसकी पूरी क्रूरता में नहीं देखते। उस रात जब अनन्या सो गई, सविता बरामदे में बैठी थी। सामने वही पुरानी सिलाई मशीन। काफ़ी दिनों से उन्होंने उस पर काम नहीं किया था। उन्होंने दराज़ से एक सफ़ेद कागज़ निकाला। राघव समझ गए।

धीरे से बोले

"क्या लिख रही हो?"

सविता कुछ देर चुप रहीं।

फिर बोलीं

"जो बातें मैं शायद उसे कभी कह नहीं पाऊँगी।"

राघव की आँखें भर आईं।

उन्होंने कागज़ की ओर देखा भी नहीं।

बस इतना कहा

"अभी क्यों लिख रही हो? तुम ठीक हो जाओगी।"

सविता हल्का-सा मुस्कुराई।

"ठीक होने की उम्मीद और सच...दोनों हमेशा एक जैसे नहीं होते, राघव।"

कुछ देर दोनों के बीच केवल रात की खामोशी थी।

फिर सविता ने धीरे से कहा

"मुझसे एक वादा करोगे?"

"हाँ।"

"यह चिट्ठी अनु को अभी मत देना।"

"कब दूँ?"

"जब उसे मेरी याद से ज़्यादा मेरी ज़रूरत महसूस होने लगे।"

राघव ने पहली बार सिर झुका लिया।

उन्होंने कोई उत्तर नहीं दिया। क्योंकि कुछ वादे शब्दों से नहीं, आँखों से किए जाते हैं। सविता ने कागज़ पर पहला शब्द लिखा "मेरी प्यारी अनु" और उसी क्षण एक साधारण कागज़ एक माँ की आखिरी चिट्ठी बनना शुरू हो गया। सविता ने कागज़ को कुछ देर तक खाली देखा। कई बातें थीं जो वह कहना चाहती थीं। लेकिन सबसे कठिन काम यही था अपनी छोटी-सी बेटी से विदा लेना, बिना "विदा" शब्द लिखे। उन्होंने लिखना शुरू किया मेरी प्यारी अनु, जब तू यह चिट्ठी पढ़ रही होगी, तब शायद मैं तेरे सामने न बैठी होऊँ। यह सोचकर मेरा मन बहुत भारी हो जाता है। हर माँ चाहती है कि वह अपनी बेटी के बड़े होने तक उसके साथ रहे। उसकी पहली नौकरी देखे, उसकी पहली हार पर उसे गले लगाए, उसकी पहली जीत पर सबसे ज्यादा ताली बजाए।

लेकिन जिंदगी हमेशा हमारी इच्छा से नहीं चलती।

इसलिए जो बातें मैं तुझे सामने बैठकर नहीं कह पाऊँगी, उन्हें इस कागज़ पर छोड़ रही हूँ।

सबसे पहले एक बात याद रखना

बीमारी ने मुझे हराया है, जिंदगी ने नहीं।

इसलिए मुझे याद करते समय मेरी दवाइयाँ मत याद करना।

याद करना कि मैं बारिश में भीगते हुए पकौड़े बनाती थी।

याद करना कि तेरी हर नई किताब को पहले सूँघकर कहती थी "नई किताबों की खुशबू सबसे अच्छी होती है।"

याद करना कि तेरे स्कूल से लौटने से पहले मैं रसोई का दरवाज़ा आधा खुला छोड़ देती थी, ताकि तेरी चप्पलों की आवाज़ सबसे पहले सुन सकूँ।

एक बात और...

अगर कभी तुझे लगे कि मैंने तुझे बहुत जल्दी छोड़ दिया, तो मुझसे नाराज़ हो जाना।

मैं तेरी नाराज़गी भी स्वीकार कर लूँगी।

क्योंकि माँ होने का मतलब सिर्फ़ प्यार पाना नहीं होता।

कभी-कभी बच्चे का गुस्सा भी अपने हिस्से में रखना पड़ता है।

अब तेरे पापा की बात।

अनु, तेरे पापा वैसे इंसान हैं जिन्हें रोना नहीं आता।

इसका मतलब यह मत समझना कि उन्हें दुख नहीं होता। जिस दिन डॉक्टर ने मेरी बीमारी का नाम बताया था, उस रात मैंने उन्हें बरामदे में अकेले बैठे देखा। वे रो नहीं रहे थे... बस बार-बार अपने दोनों हाथों को देख रहे थे।

शायद सोच रहे थे कि जिन हाथों से अब तक उन्होंने मुझे संभाला है, क्या वही हाथ मुझे बचा पाएँगे?

उस दिन पहली बार मुझे अपने लिए नहीं... उनके लिए डर लगा।

अगर कभी वे तुझ पर बिना वजह गुस्सा कर दें, तो उसी दिन उन्हें माफ़ कर देना। क्योंकि जो आदमी अपने आँसू छिपाता है, उसका गुस्सा अक्सर उसके दुख की दूसरी भाषा होता है।

और हाँ...

घर कभी मत बेचना। इसलिए नहीं कि यह बहुत कीमती है। इसलिए कि इस घर में तेरे बचपन की आवाज़ रहती है। बरामदे की दीवार पर तेरी ऊँचाई की जो लकीरें बनी हैं, उन्हें कोई नया रंग मिटा देगा।

लेकिन अगर यह घर बचा रहा, तो शायद एक दिन तू भी लौटकर उन्हें देखेगी...

और मुस्कुरा देगी।

अब आखिरी बात लिख रही हूँ।

मुझे नहीं पता, उस समय तेरी उम्र कितनी होगी।

बस इतना जानती हूँ कि चाहे तू तीस साल की हो या साठ साल की...

मेरी दुआ में तू हमेशा वही नौ साल की बच्ची रहेगी, जो रात में डरकर मेरे बिस्तर में आकर सो जाती थी।

जहाँ भी रहना... अच्छा इंसान बनकर रहना। दुनिया बहुत होशियार लोगों से भर गई है। अच्छे लोगों की जगह कभी खाली मत होने देना। तुम्हारी माँ अनन्या बहुत देर तक चिट्ठी को दोनों हाथों में थामे बैठी रही। आँसू लगातार गिर रहे थे। लेकिन वह चिट्ठी को सीने से लगाने की बजाय बार-बार उसके आखिरी हस्ताक्षर को छू रही थी।

"तुम्हारी माँ।"

उसे लगा...सोलह साल बाद उसने पहली बार अपनी माँ का हाथ छुआ है। अनन्या ने काँपते हाथों से चिट्ठी को मोड़ा और वापस लिफ़ाफ़े में रखने लगी। तभी उसकी नज़र लिफ़ाफ़े के कोने में रखे एक छोटे-से मुड़े हुए कागज़ पर पड़ी। उस पर पिता की लिखावट थी।

सिर्फ़ कुछ पंक्तियाँ

"अनु,

अगर तू यह पढ़ रही है, तो शायद मैं भी अब तेरे पास नहीं हूँ। तेरी माँ ने यह चिट्ठी मुझे उस रात दी थी, जब उसने पहली बार कहा था कि अब उसे अपने लिए नहीं, तेरे लिए डर लगता है।

उसने मुझसे एक वादा लिया था 'जब तक हमारी बेटी अपने पैरों पर खड़ी न हो जाए, यह चिट्ठी उसे मत देना।'

कई बार मन हुआ कि तुझे दे दूँ।

जिस दिन तू स्कूल में रोते हुए बोली थी कि सबकी माँ आई थीं, मेरी क्यों नहीं उस दिन भी।

जिस दिन तुझे पहली नौकरी मिली और तू सबसे पहले अपनी माँ को याद करके रोई थी

उस दिन भी।लेकिन हर बार मुझे तेरी माँ की बात याद आ जाती।

इसलिए मैंने यह चिट्ठी संभालकर रखी।

अगर कभी मुझसे शिकायत हो कि मैंने इसे इतने साल क्यों छिपाया

तो वह शिकायत भी मुझे मंज़ूर है।

पापा"

अनन्या की आँखों के सामने एक-एक दृश्य लौटने लगा।सुबह पाँच बजे उठकर पिता का रसोई में खड़े होना

पहली बार गोल रोटी बनाने की कोशिश।स्कूल की टेढ़ी-मेढ़ी चोटी, परीक्षा वाले दिन बिना बताए उसके बैग में टिफ़िन रखना, उसकी पहली तनख़्वाह मिलने पर चुपचाप मंदिर जाकर प्रसाद चढ़ा आना, और हर जन्मदिन पर माँ की तस्वीर के सामने एक छोटा-सा फूल रख देना। उसे अचानक एहसास हुआ पिता ने कभी माँ की जगह लेने की कोशिश नहीं की। उन्होंने बस यह कोशिश की, कि माँ की कमी उसे हर दिन महसूस न हो। वह उठी और उस पुराने कमरे में चारों ओर देखने लगी। दीवार पर बचपन में बनाई गई पेंसिल की लकीरें अब भी थीं। खिड़की के पास

सिलाई मशीन अब भी शांत खड़ी थी। रसोई में रखा स्टील का डिब्बा खोलने पर हल्दी की वही हल्की-सी खुशबू आई। उसे लगा, घर कभी सचमुच खाली नहीं हुआ था। खाली तो वह स्वयं हो गई थी। और आज, इतने वर्षों बाद, उस खालीपन को शब्द मिल गए थे। शाम होने लगी। रिश्तेदारों की कही बात उसके कानों में फिर गूँजी

"घर बेच देना..."

उसने पूरे घर में एक बार फिर नज़र दौड़ाई। बरामदे की दीवार पर माँ के हाथों से लगाया गया चूने का छोटा-सा निशान था। आँगन के कोने में वह अमरूद का पेड़ था जिसे पिता ने उसके जन्म के दिन लगाया था। और सिलाई मशीन की दराज़ में वह चिट्ठी ... जो सोलह वर्षों तक उसका इंतज़ार करती रही। अनन्या ने निर्णय ले लिया। घर नहीं बिकेगा। क्योंकि कुछ विरासतें ज़मीन की नहीं होतीं वे स्मृतियों की होती हैं। उसने बहुत सावधानी से माँ की चिट्ठी और पिता का वह छोटा-सा कागज़ फिर उसी दराज़ में रख दिया। धीरे से दराज़ बंद की। मानो किसी की नींद में खलल न पड़े। घर से बाहर निकलते समय उसने दरवाज़े की चौखट को छुआ। बचपन में हर परीक्षा से पहले माँ उसी चौखट पर थोड़ा-सा हल्दी और चावल लगाकर कहती थीं

"खाली हाथ मत लौटना, चाहे जीत लेकर आओ या सीखा।"

अनन्या की आँखों से आँसू बह निकले। उसे लगा आज वह सचमुच खाली हाथ नहीं लौट रही। आज वह अपने साथ माँ के शब्द और पिता का मौन लेकर जा रही है। उसने आखिरी बार घर की ओर देखा। इस बार उसे वह मकान नहीं दिखा। उसे अपना बचपन दिखाई दिया। और पहली बार उसे समझ आया माँ की आखिरी चिट्ठी केवल कागज़ पर लिखे हुए शब्द नहीं थे। वह हर सुबह थी, जब पिता ने माँ की जगह नाश्ता बनाया। वह हर रात थी, जब उन्होंने बेटी के सो जाने के बाद चुपचाप आँसू पोंछे। वह हर त्याग था, जिसके बारे में उन्होंने कभी बताया नहीं। माँ ने चिट्ठी लिखी थी। लेकिन उसे पूरा पिता ने अपने जीवन से लिखा।

त्याग

कमलेश शर्मा
पी.जी.डी.टी., हिंदी

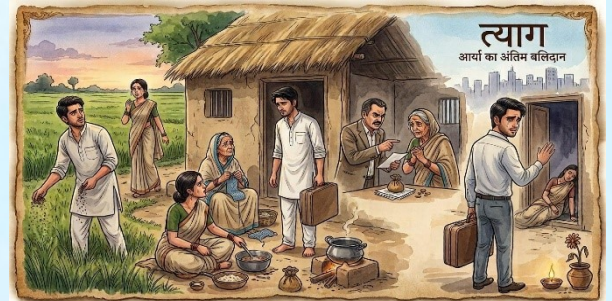
पात्रों के नाम:-

वीर: आर्या का प्रेमी।

आर्या: वीर की प्रेमिका, (जीवनपर्यंत तक)

फूल्लो: वीर की माता।

देवेन्द्र: जिसने आर्या को पैसे दिए थे।



(नाटक की शुरुआत)

पहला दृश्य

(पर्दा उठता है)

(एक छोटे से गाँव का चित्र आँखों के सामने दिखता है। चारों ओर हरियाली छाई हुई है। कुछ दूर पर बांस और पुआर से बने कुछ घर दिख रहे हैं। वीर खेतों में खाद्य छिड़कता दिखाई देता है, तभी वहाँ आर्या का आगमन होता है।)

आर्या: वीर, माँ ने बुलाया है। चलकर भोजन कर लो।

(आर्या उदासी भरे स्वर में कहती है।)

वीर: माँ से कहना मैं थोड़ी देर में आता हूँ।

(बिना आर्या की ओर देखे वीर ने जवाब दिया।)

आर्या: वीर इसमें मेरा क्या दोष ? जिस वजह से तुम मुझसे नाराज़ हो ?

(आर्या, वीर के इस व्यवहार से दुःखी होते हुए कहती है।)

तुम कुछ कहते क्यों नहीं! आखिर तुम माँ की बात मानकर नौकरी करने कोलकाता क्यों नहीं करने चले जाते।

(आर्या की आँखों में आँसुओं ने जगह ले ली थी, जो कभी भी बह सकती थी।)

वीर: तुम समझती क्यों नहीं आर्या। मैं नहीं जा सकता मेरी कई मजबूरियाँ हैं, तुम नहीं समझोगी।

(वीर, आर्या के बातों से परेशान होते हुए, उसकी ओर देखते हुए कहता है।)

आर्या: मजबूरियाँ ? कैसी मजबूरियाँ ? कहीं वो मैं तो नहीं!

(आर्या स्वयं की उंगली को अपने ओर इशारा करते हुए कहती है।) और मैं नहीं समझूंगी से क्या मतलब है तुम्हारा ?

(आर्या के आँखों से आँसू बह निकलते हैं।)

वीर: आर्या ऐसी बात नहीं है, तुम स्वयं को इसका कारण मत समझो, मेरे कहने का तात्पर्य वो नहीं था जो तुम समझ रही हो।

(वीर, आर्या की ओर देखते हुए कहता है, और देखता है कि आर्या रो रही है।)

आर्या: ठीक है वीर! जो तुम्हें सही लगे वही करो, मैं कौन होती हूँ तुम्हारी जो तुम मेरी बात मानोगे। माँ तक की बात नहीं मानी तुमने तो मेरी क्यों मानोगे।

(इतना कहकर आर्या हाँ से जाने लगती है। वीर भी उसके पीछे उसे आवाज़ लगाते हुए जाने लगता है।)

दूसरा दृश्य

(बाँस और पुआर से बनी हुई झोपड़ी के अंदर का दृश्य। जहाँ आंगन के बीच एक कुर्सी पर बैठी बूढ़ी औरत (55-60 साल) हाथों से सोयेटर बुन रही है। कड़ी धूप सीधे उसके शरीर पर आती दिखती है। घर की हालत जर्जर हो चुकी है। दीवार कहीं से टूटी तो कहीं से टूटने की स्थिति में आ चुकी है। घर की स्थिति वास्तव में बुरी नजर आती है। वही आंगन में एक तरफ चौकी रखी हुई है। तभी आर्या का वहाँ आगमन होता है और उसके पीछे ही वीर आर्या को आवाज़ लगाते घर के द्वार से आंगन में प्रवेश करता है।)

वीर: आर्या...! सुनो तो, मेरा वो मतलब नहीं था....

(वीर उसके पीछे ही चलता हुआ आंगन में आकर रुक जाता है।)

आर्या: माँ...! आप धूप में क्यों बैठी हुई है। बीमार हो

जाएगी, घर के अंदर चलिए।

(आर्या, वीर की माँ को अपने माँ के समान मानती थी इसी वजह से वो वीर की माँ को माँ कहा करती थी। आँसू को अपने हाथों से पोंछते हुए आर्या फूल्लो के करीब जाती है।)

फूल्लो: आर्या बेटी!

(बूढ़ी आँखों ने जैसे उस स्वर को पहचान लिया हो।)

आर्या: हाँ माँ...! आप यहाँ बीच आंगन में क्यों बैठी हो ? घर के अंदर चलो।

(आर्या, फूल्लो से निवेदन भरे स्वर में कहती है।)

फूल्लो: आर्या बेटी। वीर के लिए स्वेटर बुन रही थी। इसलिए बाहर आ गई।

(बड़े स्नेह भरे स्वर में कहा। फूल्लो के चेहरे पर एक मुस्कान बिखर आई।)

वीर नहीं आया ? उसे लेकर नहीं आई तुम ? उसने सुबह से कुछ नहीं खाया।

(स्वर जैसे धीमा हो आया।)

आर्या: वो.....!

(वीर का नाम सुनते ही कुछ पल पहले वीर के साथ हुई सभी बातें आर्या के आँखों के सामने घूम गईं।)

फूल्लो: आर्या बेटी, कहाँ खो गई।

(आर्या को अपने यादों की दुनिया से बाहर लाते हुए।)

आर्या: कहीं नहीं माँ वीर को ले आई हूँ।

(आर्या, फूल्लो के सामने से थोड़ी अलग हट जाती है, तभी वीर अपने माँ के सामने आता है।)

वीर: माँ...! आपने मुझे बुलाया।

(प्रेम भरे स्वर में कहता है।)

फूल्लो: बेटे...! तू जा रहा है ना कलकत्ता ?

(फूल्लो, वीर की ओर देखते हुए पूछती है।)

वीर: माँ मैंने कहा था ना, इस विषय पर अब कोई बात नहीं होगी। मुझे नहीं जाना है कही आपको छोड़कर।
(ये कहते वक्त वीर के आँखों में एक नाराजगी की झलक साफ दिखाई पड़ रही थी जो, शायद आर्या के लिए थी।)

फूल्लो: ठीक है बेटे। अब कहाँ तू मेरी बात मानेगा। तू बड़ा जो हो गया है।

(जैसे स्वर कुछ भरी सा हो आया। आँखों में नमी छा गई। फूल्लो आंगन के बीच से उठने की कोशिश करती है। तभी आर्या उसके पास आती है और उसे सहारा देते हुए घर के अंदर ले जाती है।)

वीर: मेरी मजबूरियों को आखिर कोई क्यों नहीं समझता।

(धीमे स्वर में कहता है। आँखों में आँसू आ जाते हैं।)

आर्या: तुम्हें ऐसा नहीं कहना चाहिए था वीर। आखिर तुम माँ की बात मानकर कलकत्ता क्यों नहीं चले जाते ?

(आर्या, कमरे के द्वार से ही कहती है।)

वीर: मेरी मजबूरियों को कोई नहीं समझता।

(एक बार आर्या की ओर देखता है फिर, महाशून्य में एकटक देखते हुए ही धीमे से कहता है।)

आर्या: फिर वही मजबूरी ? आखिर क्या है तुम्हारी मजबूरी ऐसी क्या मजबूरी जो तुम अपने जीवन को यही इस गांव में समाप्त करना चाहते हो। जब जीवन में कुछ करना ही नहीं था तो इतनी पढ़ाई क्यों की तुमने ?

तुम अपने जीवन को लेकर तनिक भी चिंतित दिखाई नहीं देते।

(क्रोध भरे स्वर में वीर के निकट आते हुए कहती है।)

वीर: आखिर मैं कैसे जा सकता हूँ.....

(आर्या के आँखों में देखते हुए उसकी आँखें छलक पड़ती है।)

आर्या: क्यों नहीं जा सकते ? क्या तुम्हें वो नौकरी पसंद नहीं ?

(वीर के आँखों में गोर से देखते हुए।)

वीर: पसंद नापसंद की बात नहीं आर्या।

(आर्या की आँखों में देखते हुए।)

आर्या: यानी तुम्हारी मजबूरी मैं हूँ। तुम मेरी वजह कलकत्ता नहीं जाना चाहते! यही बात है ना।

(आर्या, वीर को तीखी नजरों से देखती है।)

वीर: ऐसी बात नहीं है।

(वीर पीछे मुड़ जाता है और आर्या से नजरें चुराने

लग जाता है।)

आर्या: बात यही है वीर। मुझे नहीं पता था कि मेरा प्रेम

एक दिन तुम्हारे जीवन की सफलता में यूँ बाधा

बनकर सामने खड़ी हो जाएगी।

(आर्या, वीर के सामने जाती है। उसका गला रूंध जाता है।)

वीर: ऐसी बात नहीं है आर्या तुम.....

(वीर, आर्या को समझाने की कोशिश करता है।)

आर्या: तुम्हें ओर कुछ कहने की जरूरत नहीं वीर। तुम खाना खा लो। माँ कह रही थी, तुमने सुबह से कुछ नहीं खाया है।

(आर्या, वीर की बात को काटते हुए, धीमे स्वर में कहते हुए घर के अंदर चली जाती है।)

वीर: आर्या...! मेरी बात तो सुनो.....

(वीर आर्या को रोकने की कोशिश करता है पर रोक नहीं पाता।)
आर्या: ये लो, खाना खा लो।
(थोड़ी देर बाद, खाने की थाली लेकर आर्या चौकी पर रख देती है और घर से बाहर जाने लगती है।)
वीर: कहाँ जा रही हो आर्या ?
(वीर, आश्चर्य से कहता है।)
आर्या: भूलो मत, मेरा भी घर है।
(बिना रुके अपने कदम बढ़ाते हुए आर्या कहती है।)
वीर: तो क्या ये तुम्हारा घर नहीं है ? हम दोनों के बीच मेरा और तुम्हारा का भेद कब से होने लगा!
(वीर बड़े प्रेम से आर्या से कहता है।)
आर्या: घर तो कभी किसी का नहीं होता वीर। लोग ईश्वर के द्वारा दी गई वस्तुओं से रहने योग्य चार दीवार और ऊपर छत चढ़ा लेते हैं। और कहते हैं कि ये मेरा घर है। पर वो भूल जाते हैं। इस सृष्टि में कोई भी चीज ना तुम्हारा है और ना मेरा, ना किसी और का। ये सब ईश्वर के ही रूप का एक मात्र अंश है।
(आर्या चलते-चलते रुक जाती है, और वीर के साथ गैर व्यक्ति सा व्यवहार करते हुए कहती है।)
वीर: आर्या.....!
(वीर, आर्या को पुकारते हुए उसकी ओर बढ़ता है तभी आर्या वहाँ से बाहर चली जाती है। वीर दरवाजे पर खड़ा होकर आर्या को वहाँ से जाते हुए देखता रहता है।)

तीसरा दृश्य

(चूल्हे के सामने बैठ आर्या चावल साफ कर रही थी। घर अंदर से काफी साफ सुथरा दिख रहा था। घर के बाहर के दीवारों पर अनेक तरह के फूलों के चित्र बने हुए थे। आंगन के बीच एक तुलसी का पौधा था जिसके सामने एक दीप जल रहा था। अचानक घर के दरवाजे से वीर अंदर आ जाता है।)

वीर: आर्या...! कुछ दिनों से तुम मुझसे मिलने नहीं आई, सब ठीक तो है ना।
(वीर चिंतित भरे स्वर में पूछता है।)
आर्या: मुझे क्या होगा। मैं ठीक ही वीर।
(आर्या अपने कार्य को करते हुए ही जवाब देती है।)
वीर: तो तुम मुझसे मिलने क्यों नहीं आई इतने दिनों से ?
(वीर उसके निकट जाते हुए फिर पूछता है।)
आर्या: मैं तुमसे मिलने क्यों आऊँ वीर। आखिर मैं तुम्हारी हूँ कौन ?
(आर्या जमीन से उठकर चावल को चूल्हे पर चढ़े बर्तन में डालते हुए कहती है।)
वीर: आर्या ...! तुम्हें हुआ क्या है। और तुम्हें नहीं पता कि हम दोनों का रिश्ता क्या है!
(वीर, वापस से चूल्हे के पास जाकर खड़ा हो जाता है।)
आर्या: नहीं पाता वीर।
(आर्या, चूल्हे के सामने से हट जाती है और दूसरे ओर चली जाती है।)
वीर: आर्या मैं तुमसे प्यार करता हूँ। तुम क्यों मेरे साथ ऐसा कर रही हो।

(वीर वापस से आर्या के पास जाते हुए कहता है।)

आर्या: वीर, प्यार से पेट नहीं भरता। तुम्हारे पास खुद का क्या है ? जिस जमीन पर खेती करते हो वो भी किसी और की है। जिंदगी में तुमने आज तक किया ही क्या है। जो मैं तुमसे प्यार करूँ।

(आर्या ने गुस्से में, वीर की नाकामी को और उसकी गरीबी पर तंज कसते हुए कहा।)

वीर: नहीं तुम मेरी आर्या नहीं हो सकती। मेरी आर्य कभी मुझसे इस तरह से बात नहीं कर सकती।

(वीर आश्चर्य भरे स्वर में उसे कोई बहुरूपिया मान बैठता है। उसके माथे पर चिंता की लकीरें उभर आती है।)

आर्या: वीर, तुम अब भी नहीं समझे। मुझे भी ऐसों-आराम चाहिए। तुम गांव में सबसे ज्यादा पढ़े लिखे हो।

मुझे यकीन था एक ना एक दिन तुम बड़े आदमी बनोगे, पर तुमने वो मौका भी गया दिया। अब तुम मेरे किसी काम के नहीं।

(ये सब कहते वक्त आर्या के होठों पर एक चतुर मुस्कान उभर आई। वो वीर को ये विश्वास दिला रही थी कि, उसने उसे धोखा दिया है। कैसे उसका फायदा उठाना चाहा है।)

वीर: क्या तुम सच बोल रही हो आर्या ?

(वीर के आँखों में आंसू आ चुके थे। बस एक और चोट और वो बह निकलते।)

आर्या: तुम कितने बड़े मूर्ख हो वीर।

(आर्या हंसने हुए कहती है।)

वीर: मैंने जो पूछा इसका जवाब दो आर्या।

(आँखों में आंसू लिए पूछता है।)

आर्या: मुझे जो कहना था वो मैंने कह दिया। यकीन करना ना करना तुम्हारे ऊपर है।

(चेहरे पर वही मुस्कान लिए उसने वीर से कहा।)

वीर: आर्या तुम.....

(वीर के आँखों के आंसू अब बहने लगते हैं। वीर, आर्या के पास जाने लगता है।)

आर्या: मेरे पास मत आओ तुम। तुमसे मेरा कोई रिश्ता नहीं। और हो सके तो यहाँ से चले जाओ। मैं तुम्हारी शक्त तक नहीं देखना चाहती।

(आर्या ने गुस्से से वीर की आँखों में देखते हुए कहा।)

वीर: ठीक है आर्या। मैं चला जाऊंगा, पर बस इतना बता दो कि किस गलती की सजा दे रही हो मुझे।

(आँसू अभी भी बहे जा रहे थे।)

आर्या: अब तक नहीं समझे, तुम सच में मूर्ख हो।

(आर्या जोरदार हँसी हंसते हुए कहती है।)

वीर: तुम्हारी हँसी मेरे प्रश्न का उत्तर नहीं है आर्या।

(वीर, आर्या को एक टक देखते रहता है।)

आर्या: अच्छा तो सुनो। तुम्हारी यही गलती है कि तुम गरीब हो। और मैं किसी गरीब से प्यार नहीं कर सकती, समझे। अब अगर तुम्हें तुम्हारे सवालियों के जवाब मिल गए हो तो, तुम यहाँ से जा सोते हो।

(आर्या गुस्से में, अपने हाथ को घर के दरवाजे की ओर करते हुए कहती है।)

वीर: ठीक है।

(वीर, बिना कुछ और पूछे पीछे मुड़ता है और वहाँ से जाने लगता है। एक बार भी वो पीछे मुड़कर नहीं देखता। अपने आँखों में आँसू लिए वो आर्या के आँखों से दूर चला जाना चाहता है। वो टूट चुका है।)

आर्या: तुम्हें जाना ही था वीर, हो सकता है। आज के बाद तुम मेरी शक्ल तक देखना पसंद ना करो, पर मुझे विश्वास है। एक ना एक दिन तुम जरूर ये समझजाओगे कि आखिर मैंने ये सब क्यों किया था।

(घर के दरवाजे पर खड़ी आर्या अपने आँखों से आंसू बहाए जा रही थी। वो वीर को अपने आँखों से दूर होते जाते देख रही थी। जब तक वीर उसकी आँखों से ओझल नहीं हो गया था।)

चौथा दृश्य (दो वर्षों के बाद)

(घर की हालत काफी बुरी है। दीवार कभी भी गिर जाए ऐसा जान पड़ता है। घर के बाहर आंगन में लगे पेड़ सुख चुके हैं। ऐसा लगता है, कई दिनों से वर्षा ना हुई हो। घर के अंदर का माहौल भी बुरा दिखाई पड़ता है। घर की स्थिति काफी बुरी थी। एक लड़की घर के आंगन में आती है जिसने अपने हाथ में कई सारी लड़कियां थामे हुए थी। देखने से उसकी उम्र ज्यादा नहीं जान पड़ती थी, पर उसके शहरी पर झुर्रियां पड़ चुकी हैं। उसके वस्त्र भी मैली हो चुकी हैं। कई जगह से फट भी चुके हैं। उसने आंगन में सारी लकड़ियां रखी। तभी पीछे से एक आवाज सुनाई दी।)

देवेन्द्र: और कितने दिन लगेंगे तुम्हें मेरे पैसे वापस करने में। क्या मैं रोज रोज तुम्हारे घर के चक्कर काटू।

(कहते हुए दरवाजे से आंगन में प्रवेश करता है।)

अब तो मेरे पैरों की छप्पर भी घिस चुकी। तुम लोग पैसा तो ले लेते हो और जब लौटने की बारी आती है तब तुम लोगों के पास पैसे नहीं होते। अरे.. जब लौटा नहीं सकते तो लेते क्यों हो।

(भारी स्वर में अब क्रोध भी था।)

आर्या: अरे...! देवेन्द्र जी आप, आइए ना बैठिए।

(आर्या, देवेन्द्र को बैठे के लिए कहती है।)

देवेन्द्र: हुहह ! मैं बैठू, पर कहाँ ? जमीन पर। अब क्या है तुम्हारे पास सब कुछ तो तुमने मुझे बेच दिया है।

(देवेन्द्र का क्रोध अब उफान पर था।)

आर्या: माफ कीजिएगा। आपके पैसे देने में देर हो रही है।

पर मैं जल्द ही आपके पैसे आपको वापस कर दूंगी।

(आर्या को अपनी भूल का एहसास होता है। और वो हाथ जोकर देवेन्द्र से कहती है।)

देवेन्द्र: देखो, तुम लड़की हो। इसलिए मैं एक आखिरी बार कहने आया हूँ, अगले महीने के पहले तारीख को मेरे पैसे मुझे मिल जाने चाहिए। वरना मैं भूल जाऊंगा कि, तुम एक लड़की हो।

(देवेन्द्र बड़े आक्रोश भरे स्वर में कहकर वहाँ से चला जाता है।)

आर्या: भगवान और कितनी परीक्षा लेगा मेरी।

(आकाश की ओर देखते हुए आर्या रो पड़ती है।)

वीर: इसमें भगवान का क्या दोष, दोष तो तुम्हारी ही हैं।

(आवाज में व्यंग्य था।)

आर्या: तुम.....



(आर्या पीछे मुड़ती है और वो चौक जाती है। आंचल से अपने आँसू को पूछती हुई, खुश हो जाती है। वो भागते हुए वीर के पास जाने लगती है तभी वो बीच में ही रुक जाती है। वीर के पहनावे को देख, वो समझ जाती है कि वीर बदल चुका है।)

वीर: क्या हुआ। मुझे पता है, तुम्हें उम्मीद नहीं होगी कि मैं कभी वापस तुम्हारे सामने आऊंगा। पर क्या करूँ, किसी को गरीबी और अमीरी का अन्तर जो दिखलाना था।

(वीर उसके चारों ओर घूमते हुए उसे बड़े ध्यान से देख रहा होता है। और साथ ही घर और आस-पास के सभी चीजों को।)

आर्या: बड़े दिनों बाद आए हो, खाना खा कर जाना।

(आर्या ने बड़ी धीमे स्वर में कहा। उसका सिर अब नीचे झुका हुआ था। जैसे उसने कोई अपराधी हो।)

वीर: खाना ! देखकर तो लगता नहीं कि यहाँ कुछ खाने के लिए होगा भी।

(वीर व्यंग्य करते हुए हँस पड़ता है।)

आर्या: रुको मैं तुम्हारे बैठने के लिए कुछ लेकर आती हूँ।

(आर्या उदास चेहरा लेकर वहाँ से जाती है और एक कोने से टूटी कुर्सी लाती है, और वीर को देती है।)

वीर: मैं इस पर बैठूँगा। तुम पागल हो गई क्या ? मेरे कपड़े गंदे हो जायेंगे।

(वीर, अपने कपड़े को सही करने लगता है। जैसे वो खुद की अमीरी को कपड़े से ही जता देना चाहता हो।)

आर्या: रुको मैं इसे साफ कर देती हूँ।

(आर्या वहाँ से जाने लगती है। तभी उसे वीर की आवाज़ सुनाई देती है।)

वीर: मैं यहाँ बैठने नहीं आया हूँ। तुम्हें ये शादी का कार्ड देने आया हूँ।

(वीर अपने हाथ के कार्ड, आर्या के सामने बढ़ाता है, और अचानक से रुक जाता है।)

अरे.....! तुम्हें तो पढ़ना ही नहीं आता। रुको मैं पढ़कर बताता हूँ क्या लिखा है इसमें।

(वीर, वापस कार्ड को अपने ओर करते हुए, तंज कसते हुए आर्या से कहता है।)

आर्या: हम्म।

(आर्या अपने आप को अपमानित होता देखते रहती है। आँखों में अब आँसू आ जाते हैं पर वो रोटी नहीं। बल्कि वो वीर को ही देखे जा रही है।)

वीर: मंगलम भगवान विष्णु मंगलम गरुडध्वज

मंगलम कुंडरीकाक्षाय मंगलाय तनो हरि।

(वीर, पूरे कार्ड को पढ़ते हुए आर्या के चारों ओर घूमने लगता है। और अन्त में कार्ड में छपे नाम को पढ़ते हुए कहता है।)

आयु० रानी संग चि० वीर

(नाम को पढ़ते ही वीर आर्या की आँखों में देखने लगता है।)

आर्या: अच्छा तो ये तुम्हारी शादी का कार्ड है।

(आर्या, अपनी आँखों के आँसू को बहने से रोकते हुए, एक हल्की सी मुस्कान के साथ कहती है।)

वीर: हाँ। ये मेरी शादी का कार्ड है। क्यों तुम्हें खुशी नहीं हुई।

(वो आर्या को घूरते हुए कहता है।)

आर्या: अरे नहीं। मैं खुश हूँ, बल्कि बहुत खुश हूँ। बधाई हो।

(आर्या उसकी आँखों में देखते हुए कहती है। और दोनों कुछ वक्त तक एक-दूसरे की आँखों में देखते रहते हैं)

वीर: तुमने ऐसा क्यों किया था आर्या ?

(कुछ वक्त बाद वीर बोल पड़ता है। उसकी आँखों में भी आँसू आ गए थे।)

आर्या: क्या किया मैंने ?

(आर्या के आँखों में भी अब आँसू थे। पर वो उसे बहने से रोक हुए थी।)

वीर: कुछ नहीं।

(वीर, आर्या को कुछ पल देखता है, फिर पीछे मुड़कर जाने लगता है।)

आर्या: जा रहे हो ?

(आर्या, स्नेह भरे स्वर में कहती है।)

वीर: हाँ। क्योंकि अब कुछ बचा नहीं.....। वैसे भी मैं जिस कारण से यहाँ आया था, वो पूरा हो गया है।

(वीर जाते-जाते रुक जाता है और बिना पीछे मुड़े आर्या को जवाब देता है।)

आर्या: हम्म।

(आर्या, आशा भरे नेत्रों से अभी भी उसी ओर देखे जा रही थी, जहाँ वीर खड़ा था।)

वीर: मुझे अब जाना चाहिए। अगर वक्त मिले तो शाद में आ जाना।

(इतना कहकर वीर वहाँ से चला जाता है।)

आर्या: आज भी मैं तुम्हें नहीं रोकूंगी क्योंकि, मुझे पता है। तुम ना कल मुझे समझ पाए थे और ना आज समझ पाए हो। सच तो ये है कि, मैंने तुम्हारी मजबूरी समझी पर, तुमने मेरी मजबूरी नहीं समझी।

(आँखों से आँसू बहने लगते हैं। दरवाजे से सटकर वो जमीन पर बैठ जाती है। वो वीर को ठीक उसी तरह खुद से दूर जाते हुए देख रही थी जैसे, पिछली बार देखा था। वो इस उम्मीद से उसे देख रही है कि, शायद वीर एक बार पीछे मुड़े और वो उसे रोक ले पर वीर पीछे नहीं मुड़ता। वो उसकी नज़रों से अब ओझल हो चुका है, आर्या की सभी उम्मीद टूट चुकी है। उसकी उम्मीदों की तरह ही अब उसकी सांसे भी टूट चुकी है। आर्या मर चुकी हैं।)

जुगीजान के प्रमुख ऐतिहासिक एवं धार्मिक स्थल

सुब्रत विश्वास

स्नातक, सप्तम छमाही

असम प्रांत का होजाई जिला और विशेषकर इस जिले का एक प्रसिद्ध स्थान जुगीजान ,जो इस क्षेत्र की प्राचीन संस्कृति, समृद्ध इतिहास और अपूर्व स्थापत्य कला के लिए प्रसिद्ध रहा है। जुगीजान में स्थित बहुत पुराने मंदिर परिसर केवल उसी समय की वास्तुकला का ही उदाहरण नहीं है बल्कि असमिया जनसमाज की श्रद्धा और सांस्कृतिक चेतना का भी जीवंत प्रतीक है। ऐसे ही जुगीजान के कुछ स्थान है- राजबाड़ी का शिव मंदिर, संख्या देवी मंदिर, नौभंगा चामुंडा काली मंदिर ,न-नाथ शिव मंदिर परिसर ,शिवपुर के प्राचीन खंडहर और केंदुगुड़ी के अवशेष।

राजबाड़ी का शिव मंदिर

जुगीजान में स्थित राजबाड़ी शिव मंदिर असम की वास्तुकला और प्राचीन संस्कृति का एक अपूर्व संगम स्थल है। यह शिव मंदिर जुगीजान के राजबाड़ी गांव में स्थित है। पुरातत्वविदों के अनुसार यह मंदिर नौवीं से दसवीं शताब्दी के बीच पाल वंश के राजाओं द्वारा बनाई गई है। यह मंदिर उसी समय की कला, धर्म और स्थापत्य का जीवन्त प्रमाण प्रस्तुत करता है। राजबाड़ी शिव मंदिर परिसर में कुल मिलाकर छः प्राचीन मंदिरों के अवशेष मिलते हैं ,जिनमें से एक मंदिर में भगवान शिव और माता गौरी का एक अपूर्व पत्थर की मूर्ति विद्यमान है । इसके साथ ही अन्य चार मंदिरों में भव्य शिवलिंग स्थापित है, और एक विशेष स्थान में दो सांपों के बिल का आकार मिलता हैं , ऐसा



माना जाता है कि यहां नाग-नागिनों का पूजा होता है। राजबाड़ी शिव मंदिर परिसर के मध्य भाग में स्थित है एक संग्रहालय, जहां विभिन्न नक्काशीदार पत्थरों को एक साथ रखा गया है। इन पत्थरों में पुष्प, पत्र, सिंह, गजराज के साथ-साथ अन्य विभिन्न प्राणियों की चित्र बनाई गई है। ऊंचे प्राचीर से घिरा हुआ इस मंदिर परिसर में एक सुंदर जलाशय, एक ढका हुआ पुराना कुआं तथा बड़े-बड़े वट वृक्ष मौजूद है। प्रत्येक सोमवार को, श्रावण मास और महाशिवरात्रि को यहां श्रद्धालुओं का भी उमड़ पड़ता हैं ,साथ ही माघ मास की पूर्णिमा तिथि को यहां एक दिवसीय मेले का आयोजन भी होता है ।

संख्या देवी मंदिर

राजबाड़ी शिव मंदिर के साथ-साथ इसी गांव में और एक प्राचीन मंदिर स्थित है , जो मंदिर इस गांव के पश्चिमी छोर पर जोगी नदी के पावन तट पर स्थित है। संख्या देवी मंदिर का निर्माण दसवीं से ग्यारहवीं शताब्दी के मध्य में हुआ था। इस मंदिर परिसर में ईंटों और पत्थरों से निर्मित तीन प्राचीन मंदिरों के अवशेष मिलते हैं। उत्तर की दिशा



में स्थित मंदिर का प्रवेश द्वार पर नागकन्या की आकृति को उकेरा गया है। यहां के विभिन्न पत्थरों पर मानव मुख, देवी-देवताओं और प्राकृतिक वस्तुओं के साथ-साथ प्राचीन गर्भ गृह और स्तंभों के भग्नावशेष भी देखने को मिलते हैं। यहां पर स्थित तीन टिलों में से एक टिले का जीर्णोद्धार किया गया है। जबकि दो टिले आज भी अपने उसी अवस्था में ही हैं। इस मंदिर के भग्नावशेष को देखते हुए ऐसा प्रतीत होता है कि यह मंदिर मां दुर्गा की अस्तित्व को वहन करता है, अतः इस मंदिर को माता आदि शक्ति को समर्पित किया

गया है।

नौभंगा चामुंडा काली मंदिर

असम के जुगीजान में एक पावन नदी के किनारे नौभंगा चामुंडा काली मंदिर स्थित है। यह मंदिर असमिया समाज की अगाध आस्था, विश्वास और प्राचीन इतिहास का एक जीवंत स्वरूप है। इस मंदिर के उत्पत्ति के पीछे एक अपूर्व एवं दिव्य जनश्रुति प्रचलित है। जिसके अनुसार माता आदि शक्ति ने अपने एक भक्त को स्वप्न में दर्शन देकर भूमि के नीचे दबे अपने स्वरूप के बारे में बताया और अपने उस स्वरूप को प्रकट करने एवं पुनर स्थापित करने का आदेश दिया। भक्तों के द्वारा मिट्टी के नीचे से उस दिव्य एवं अपूर्व विग्रह का उद्धार करने के बाद लगभग सातवीं शताब्दी में इस क्षेत्र के स्थानीय दिमासा-कछारी राजवंश के राजा ने भव्य मंदिर का निर्माण करवाया। मान्यता है कि एक बार कुछ लुटेरों ने मंदिर से माता के बहुमूल्य अलंकारों को चुराकर नदी के मार्ग से भाग रहे थे, तभी उसी नदी के मध्य में जाकर नाव टूटकर डूब गई और सभी लुटेरे जल में डूब कर मृत्यु को पा गए। इसी घटना के पश्चात इस स्थान का नाम नौभंगा पड़ा, जिससे यह मंदिर भी नौभंगा चामुंडा काली मंदिर नाम से प्रसिद्ध हुआ। वर्ष भर इस मंदिर में श्रद्धालुओं का भी उमड़ पड़ता है और विशेषकर अमावस्या को धार्मिक अनुष्ठान भी आयोजित होते हैं। इस मंदिर में अन्नप्राशन, चुराकरण से लेकर विवाह जैसे संस्कारों को भी संपन्न किया जाता है। विशेषकर कालीपूजा और दीपावली पर यहां विशाल पूजा तथा मेले का आयोजन होता है , जहां प्राचीन शक्ति पूजा विधान के अनुसार बली परंपरा का निर्वहन भी किया जाता है। इस मंदिर परिसर में माता शक्ति के साथ-साथ भगवान शिव के सामंजस्य को दर्शने हेतु एक प्राचीन शिव मंदिर भी है।



न-नाथ शिव मंदिर परिसर

जुगीजान में स्थित संख्या देवी मंदिर के पास से बहती हुई जोगी नदी के पार न-नाथ शिव मंदिर स्थित है। यह पावन मंदिर भगवान शिव को समर्पित है। इस मंदिर परिसर में कुल नौ मंदिरों का एक समूह है। इस मंदिर परिसर में आठ शिव मंदिर दो पंक्तियों में एक दूसरे के सम्मुख रूप में विराजमान है, जो प्रधान शिव मंदिर के साथ मिलकर



नौ मंदिरों का एक अपूर्व समूह बनाते हैं। इस मंदिर की शैलीगत विशेषता एवं पुरातात्विक प्रमाणों के आधार पर इस मंदिर का निर्माण आठवीं से नौवीं शताब्दी का माना जाता है। इस मंदिर की बाहरी दीवारों पर ईंटों की बनाई गई टेराकोटा की पट्टियां असम की वास्तुकला में अद्वितीय है, जो गुप्तकालीन स्थापत्य कला के स्वर्ण युग का स्मरण भी कराती है। इन आकृतियों में प्रकृति के विभिन्न रूप, देवी-देवताओं के दिव्य रूप, मनुष्य, पशु, पक्षी तथा तत्कालीन सामाजिक और धार्मिक जीवन की सजीव चित्र को उतारी गई है।

सावन के पवित्र महीने और महाशिवरात्रि के अवसर पर इस मंदिर परिसर में श्रद्धालुओं का विशाल भीड़ उमड़ पड़ता है तथा विशाल मेला भी लगता है। साथ ही यह मंदिर परिसर फल-फूलों के वृक्षों और वनस्पति से आच्छादित है और श्रद्धालुओं की सुगमता के लिए पक्के मार्ग भी निर्माण किए गए हैं।

शिवपुर के प्राचीन खंडहर

जुगीजान क्षेत्र में शिवपुर गांव में एक प्राचीन पुरातात्विक स्थल स्थित है, इस स्थान को सन 1984 में कृषि विभाग द्वारा सूचीबद्ध किया गया था। इस स्थान में दो टिलें विद्यमान हैं, जहां प्राचीन शिव मंदिर का अस्तित्व मिलता है। इनमें से एक टीले पर आधुनिक शेड निर्माण किया गया है, इस शेड के नीचे एक शिवलिंग स्थापित है और इसके पास ही पत्थरों के मूर्तियों की अवशेष भी प्राप्त होते हैं। इसके शैली को ध्यान से देखा जाए तो इन अवशेषों का कालखंड को लगभग दसवीं से 11वीं शताब्दी का बताया जाता है। इन पत्थरों से निर्मित मंदिरों के इन अवशेषों से यह प्रमाण मिलता है कि उस समय इस क्षेत्र में पत्थरों की मूर्ति निर्माण की कला और परंपरा निरंतर विकसित हो रही थी।



केंदुगुड़ी के अवशेष

शिवपुरी के खंडहर की ही भांति एक और विशेष पुरातात्विक स्थान केंदुगुड़ी गांव में है, जिसे सन 1985 में पुरातत्व विभाग ने सूचीबद्ध किया था। इस स्थान पर पत्थर तथा ईंटों से निर्मित प्राचीन मंदिर संरचनाओं के भग्नावशेष मिलते हैं। यहां स्थित एक प्राचीन टीला उस समय की प्राचीन स्थापत्य कला की ओर ध्यान आकृष्ट करता है। शैलीगत विशेषताओं के आधार पर केंदुगुड़ी के इस पुरातात्विक अवशेषों का कालखंड प्रायः आठवीं से नौवीं शताब्दी का माना जाता है। संख्या देवी और चामुंडा काली मंदिर के भांति ही यह मंदिर भी शक्ति को समर्पित है।



असम प्रांत के इस होजाई जिले के इन सभी मंदिरों और पुरातात्विक स्थल असम की धार्मिक संस्कृत और स्थापत्य शिल्प कला का धरोहर है। राजबाड़ी के शिव मंदिर से लेकर केंदुगुड़ी तक विस्तृत यह ऐतिहासिक स्थल आज भी शोधकर्ता, श्रद्धालुओं और इतिहास प्रेमियों को असम की महान सांस्कृतिक धरोहर से जोड़ती है। लेकिन वर्तमान समय में इन सभी पुरातात्विक क्षेत्र अपेक्षा और अविकसित अवस्था का शिकार है। इसी कारणवश इन स्थलों के कई ऐतिहासिक रहस्य शायद आज भी मिट्टी के नीचे दबे हुए हैं। इन क्षेत्रों में एक व्यवस्थित, आधुनिक और वैज्ञानिक खनन का स्पष्ट अभाव देखने को मिलता है। अगर भारतीय पुरातात्विक सर्वेक्षण द्वारा इन सभी मंदिरों और खंडहरों में शोध एवं खुदाई किया जाए तो शायद इन मंदिरों की और भी नए पहलू हमारे सामने उजागर होने की संभावना बनते। साथ ही उस समय की असम की सभ्यता स्थापत्य कला, जनजीवन और धार्मिक एवं सांस्कृतिक परंपराओं से जुड़े अनेक अमूल्य ऐतिहासिक तथ्य भी प्रकाश में आ सकते हैं। पत्थरों और ईंटों एवं टिलों के नीचे दबे यह अवशेष इस बात की और संकेत करते हैं कि यह क्षेत्र प्राचीन समय में एक विशाल धार्मिक व सांस्कृतिक केंद्र रहा होगा। अतः इस अमूल्य धरोहर को काल के मुख में समाने से बचाने के लिए यहां विलंब किए बिना व्यापक अन्वेषण, संरक्षण तथा पर्यटन की दृष्टि से व्यवस्थित विकास कार्य की अत्यंत आवश्यकता है।

हिन्दी सप्ताह एवं राष्ट्रीय संगोष्ठी की एक झलक

(10 सितंबर -15 सितंबर, 2025)



रवीन्द्रनाथ ठाकुर विश्वविद्यालय के हिन्दी विभाग द्वारा हिन्दी दिवस के अवसर पर हिन्दी सप्ताह के अंतर्गत विभिन्न कार्यक्रमों का आयोजन किया गया, जिसकी शुरुआत 10 सितंबर को दीप प्रज्ज्वलन के साथ की गई। इस दौरान निबन्ध लेखन प्रतियोगिता, कविता पाठ प्रतियोगिता, हिन्दी भाषण प्रतियोगिता आदि विभिन्न प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया, जिसमें विश्वविद्यालय के विद्यार्थियों ने भाग लिया एवं साथ ही, विश्वविद्यालय से संबद्ध विभिन्न महाविद्यालयों के



विद्यार्थियों ने भी सक्रिय सहभागिता के माध्यम से कार्यक्रम की गरिमा को और अधिक बढ़ाया। पूरे सप्ताह परिसर में हिंदी भाषा और साहित्य के प्रति उत्साह, सृजनशीलता एवं आत्मीयता का मनोहर वातावरण बना रहा।

इसी क्रम में 14 एवं 15 सितंबर को केंद्रीय हिंदी संस्थान, आगरा के गुवाहाटी केंद्र के तत्वावधान में दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी का सफल आयोजन किया गया। संगोष्ठी का मुख्य विषय “ पूर्वोत्तर भारत में हिंदी की परम्परा एवं प्रयोग ” था। इस अवसर पर देश के विभिन्न स्थानों से आए विद्वानों, शिक्षकों, शोधार्थियों एवं प्रतिभागियों ने विषय के विविध आयामों पर अपने विचार व्यक्त किए तथा शोधपत्र प्रस्तुत किए। संगोष्ठी के दौरान हिंदी के प्रचार-प्रसार, पूर्वोत्तर भारत में हिंदी की वर्तमान स्थिति तथा उसकी संभावनाओं पर गंभीर एवं सार्थक विचार-विमर्श हुआ। हिंदी सप्ताह के अंतर्गत आयोजित विभिन्न प्रतियोगिताओं में प्रतिभागियों ने अपनी प्रतिभा का प्रभावशाली प्रदर्शन किया। उत्कृष्ट प्रदर्शन करने वाले विजेताओं को आकर्षक पुरस्कारों एवं प्रमाण-पत्रों से सम्मानित किया गया।



विभागीय उपलब्धियाँ



तृतीय स्थान
सांस्कृतिक शोभायात्रा,
विश्वविद्यालय सप्ताह ,2026



तृतीय स्थान
दीवार पत्रिका प्रतियोगिता,
विश्वविद्यालय सप्ताह,2026



प्रथम स्थान
वॉलीबॉल, विश्वविद्यालय सप्ताह,2026



प्रथम स्थान
कबड्डी, विश्वविद्यालय सप्ताह,2026

विद्यार्थियों की उपलब्धियाँ



चंद्रशेखर चौहान

(MA 2024-26)

NE-SLET, 2026

विश्वविद्यालय सम्मह, 2026 में प्राप्त विद्यार्थियों की उपलब्धियाँ



दिया चार

प्रथम स्थान

रनिंग (200 मि., 400 मि.)

स्नातक, पंचम छमाही



स्नेहा ज्योति दास

प्रथम स्थान

सेमी क्लासिकल डांस

स्नातक, तृतीय छमाही



सुनम गौड़

प्रथम स्थान

आर्म रेसलिंग और रनिंग

स्नातक, तृतीय छमाही



पूजा शर्मा

प्रथम स्थान

समाचार पत्र वाचन,

निबंध एवं कविता लेखन

स्नातकोत्तर, तृतीय छमाही

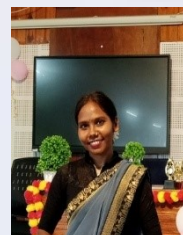


काजल कुमारी साह

प्रथम स्थान

डिस्कस थ्रो

स्नातक, तृतीय छमाही



अर्मिता चौहान

प्रथम स्थान

कहानी लेखन

स्नातक, सप्तम छमाही

द्वितीय स्थान

1. सुनम गौड़- डिस्कस थ्रो
2. पूजा शर्मा – कहानी लेखन प्रतियोगिता
3. तारा कुमारी – रेसिंग (100 मी.),
4. पूजा देवी – आर्म रेसलिंग
5. काजल कुमारी साह – जैवलिन थ्रो, आर्म रेसलिंग (100 कि.ग्रा.)
6. अर्मिता चौहान – कविता लेखन एवं निबंध लेखन प्रतियोगिता
7. चंद्रशेखर चौहान – समाचार पत्र वाचन प्रतियोगिता

तृतीय स्थान

1. सुनम गौड़ – आर्म रेसलिंग (अंडर 60 कि.ग्रा.), 1500 मीटर रनिंग
2. स्नेहा ज्योति दास – राभा संगीत एवं भूपेंद्र संगीत
3. दिया चार – जैवलिन थ्रो
4. काजल कुमारी साह – शॉट पुट
5. चंद्रशेखर चौहान – कविता आवृत्ति ,कविता लेखन एवं निबंध लेखन प्रतियोगिता
6. नेहा बाल्मीकि – कहानी लेखन प्रतियोगिता

72

ৰবীন্দ্ৰনাথ ঠাকুৰ বিশ্ববিদ্যালয়
RABINDRANATH THAKUR VISHWAVIDYALAYA
SIR JAGADISH CHANDRA BOSE CAMPUS, HOJAI, ASSAM

हिन्दी विभाग
रवीन्द्रनाथ ठाकुर विश्वविद्यालय
होजाई ,782436 (असम)